जीवन के सर्वांगीण विकास में वर्तमान शिक्षा पद्धति

(अणुव्रत निबंध लेखन प्रतियोगिता)

प्रकाशक

vf[ky Hkkjrh; v.kqor U;kl] ubl fnYyh

© अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास, नई दिल्ली

lLdj.k% 2016

vk'khopu% महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण

lEiknd e.My% सम्पतमल नाहाटा
सुशील कुमार जैन
विजय वर्धन डागा
प्रमोद घोड़ावत

dk;Zdkjh lEiknd% महेन्द्र शर्मा

l;Dr lEiknd% रमेश काण्डपाल

eY;% ₹100.00

çdk'kd% अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास
अणुव्रत भवन
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली 110002

eæ.k% इंद्रप्रस्था प्रेस (सी.बी.टी.)
4 बहादुरशाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली–110002

vkpk;Z Jh egkJe.k

॥ अर्हम् ॥

परमपूज्य गुरुदेव तुलसी बीसवीं सदी के एक महापुरुष थे। उन्होंने अणुव्रत आन्दोलन के रूप में मानव जाति को एक महान अवदान दिया। अणुव्रत संयम, नैतिकता और चरित्र निष्ठा से जुड़ा आन्दोलन है। उसे स्वीकार कर आदमी अपने जीवन को उन्नत बना सकता है।

'अणुव्रत न्यास' गत अनेक वर्षों से शिक्षा जगत् में अणुव्रत के प्रचार–प्रसार की दृष्टि से प्रयत्नशील है। 'जीवन के सर्वांगीण विकास में वर्तमान शिक्षा पद्धति' और 'राष्ट्र निर्माण में सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति की भूमिका' उसी प्रयत्न का प्रतिफल है। इसका रसास्वादन कर जनता आध्यात्मिक पोषण को प्राप्त हो। शुभाशंसा।

फालाकाटा (बंगाल) **vkpk;Z egkJe.k**

अणुव्रत विचारधारा से असंख्य विद्यार्थी लाभान्वित

lEirey ukgkVk

किसी भी राष्ट्र, समाज और परिवार की उन्नति, शांति के लिए पारस्परिक सद्भावना अपेक्षित होती है। सद्भावना के अभाव में अहिंसा जीवन व्यवहार में प्रतिष्ठित नहीं हो पाती है। कितनों–कितनों के लिए घातक बन जाती है। जाति, भाषा, वर्ग या क्षेत्र का दुराग्रह, साम्प्रदायिक उन्माद, तुच्छ स्वार्थवृत्ति और विकृति मानसिकता पर पारस्परिक असद्भाव के कारण बनते हैं।

जब–जब मानवता ह्रास की ओर बढ़ती चली जाती है, नैतिक मूल्य अपनी पहचान खोते जाते हैं। समाज में पारस्परिक संघर्ष की स्थितियां बनती हैं। तब–तब कोई न कोई महापुरुष अपने दिव्य कर्तव्य, पुरुषार्थ और तेजोमय शौर्य से मानव की चेतना को झंकृत कर जन जागरण का कार्य करता है। भगवान महावीर हों या गौतमबुद्ध, स्वामी विवेकानन्द हों या महात्मा गांधी, गुरुदेव तुलसी हों या आचार्य महाप्रज्ञ समय–समय पर ऐसे अनेक महापुरुषों ने अपने क्रान्ति चिन्तन के द्वारा समाज का समुचित पथ दर्शन किया। महापुरुषों की इसी श्रृंखला का एक गौरवपूर्ण नाम है आचार्य श्री महाश्रमण। स्वकल्याण व परकल्याण के संकल्प के साथ चालीस हजार से अधिक किलोमीटर की पदयात्रा करने वाले आचार्य महाश्रमण अहिंसा यात्रा के द्वारा जनमानस को उत्प्रेरित कर मानवता के समुत्थान का पथ प्रशस्त कर रहे हैं। अहिंसा यात्रा हृदय परिवर्तन के द्वारा अंधकार से प्रकाश की ओर प्रस्थान का अभियान है। यह यात्रा कुरीढ़ियों में जकड़ी ग्रामीण जनता और तनावग्रस्त शहरी लोगों के लिए

वरदान है। जाति, सम्प्रदाय, वर्ग और राष्ट्र के लिए वरदान है। जाति, सम्प्रदाय, वर्ग और राष्ट्र की सीमाओं से परे यह यात्रा बच्चों, युवाओं और वृद्धों के जीवन में सद्‌गुणों की श्वास भर रही है। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण जी की इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य है सद्‌भावना, नैतिकता व नशा मुक्ति का अभियान।

'अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास' द्वारा अनेक वर्षों से आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के माध्यम से देश भर में अनेक विद्यालयों के अगणित विद्यार्थी अणुव्रत विचारधारा के सीधे संपर्क में हैं। उनके मौलिक विचारों से समकालीन समस्याओं का समाधान, कुरीतियों पर कुठाराघात और अहिंसा के सिद्धांतों से असंख्य विद्यार्थी नैतिक संस्कारों के पल्लवन की प्रक्रिया से लाभान्वित हुए हैं। हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें आचार्य श्री तुलसी, आचार्य श्री महाप्रज्ञ एवं वर्तमान अणुव्रत अनुशास्ता के रूप में महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी जैसे संत शिरोमणि आचार्य मिले हैं, जिनकी छत्रछाया में हमें कार्य करने का अवसर प्राप्त हो रहा है। मैं उनके प्रति सदैव श्रद्धावान हूं। उनके इंगितानुसार कार्य करना ही न्यास का उद्देश्य है।

इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु ही विद्यालयों में विद्यार्थियों में अणुव्रत संस्कार निर्माण का अभिमान जारी है। इस अभियान में विद्यार्थी, शिक्षक, अभिभावक बढ़चढ़ कर सहभागिता कर रहे हैं। उनके सद्‌प्रयासों से अनेक पुस्तकें अणुव्रत न्यास प्रकाशित कर चुका है। इसी श्रृंखला में सद्य प्रकाशित पुस्तक 'जीवन के सर्वांगीण विकास में वर्तमान शिक्षा पद्धति' विद्यार्थियों द्वारा लिखित निबंधों के लेखन–कौशल का उत्कृष्ठ नमूना है। मैं इस पुस्तक में संकलित विद्यार्थी–लेखकों, पुस्तक में अपना श्रम लगाने वाले अणुव्रत कार्यकर्ताओं का धन्यवाद करता हूं व अपेक्षा करता हूं कि हम सब मिलकर अणुव्रत के मार्ग पर निरंतर आगे बढ़ते हुए अपने सपनों के भारत को साकार रूप देकर पुनः भारत को विश्व में सर्वोच्च स्थान दिला सकें।

सम्पतमल नाहाटा
प्रबंध न्यासी
अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास, दिल्ली

अध्यात्म और नैतिक शिक्षा की उपादेयता

çekn ?kkMkor

आचार्य श्री तुलसी ने कहा था कि राष्ट्र के कर्णधारों एवं हित–चिंतकों के मन में इस बात की बड़ी चिंता है कि अनेक–अनेक प्रयत्नों के बावजूद विद्यार्थियों के सही निर्माण का मार्ग प्रशस्त नहीं हो रहा है। उनमें अपेक्षित परिवर्तन की दिशा उद्‌घाटित नहीं हो पा रही है। ऐसा माना जा रहा है कि आज की शिक्षा पद्धति दोषपूर्ण है। वही इस स्थिति के लिए उत्तरदायी है। इसलिए यह स्वर भी चारों ओर से उठ रहा है कि यह दोषपूर्ण शिक्षा पद्धति हर हालत में बदल दी जानी चाहिए। एक अपेक्षा से बात सही भी है, पर सारा का सारा दोष या जिम्मेदारी इसी पर नहीं डाली जा सकती है। अलबत्ता इसे मुख्य कारण कहा जा सकता है। यह बहुत स्पष्ट है कि आज ही चालू शिक्षा पद्धति हमारी भारतीय संस्कृति के अनुकूल नहीं है। उस पर पाश्चात्य संस्कृति का अनपेक्षित–अवांछित प्रभाव आ गया है जो भारतीय मस्तिष्क के अनुकूल नहीं है।

भारतवर्ष एक ऐसा देश है जहां भोग का नहीं, त्याग का महत्व है, असंयम का नहीं, संयम का महत्व है, धन कुबेरों और सत्ताधीशों का नहीं, ऋषि–मुनियों का महत्व है। ऋषि–मुनियों की तपःपूत वाणी का प्रभाव अब भी यहां के वासियों के मन–मस्तिष्क में विद्यमान है। प्रकारांतर से ऐसा कहा जा सकता है कि अध्यात्म एवं धर्म यहां के आधारभूत तत्व हैं। मेरा दृढ़ विश्वास है कि जब तक शिक्षा प्रणाली में अध्यात्म एवं नैतिक शिक्षा का समावेश नहीं होगा, तब तक मूलभूत समस्याओं का हल नहीं होगा, परंतु आध्यात्मिक शिक्षा और नैतिक शिक्षा का मतलब यह नहीं कि बालकों से भगवान के नाम की रट लगवाई जाये। उसका तात्पर्य तो

इतना ही है कि बालकों को प्रारंभ से ही ऐसा शिक्षण–प्रशिक्षण प्राप्त हो, जिससे वे सत्संस्कारी बनें। उनका जीवन विनय, सदाचार, अनुशासन, सत्य–निष्ठा, संयम व स्वावलंबन से अनुप्राणित बने।

ये तत्व उनके जीवन के साथ इस प्रकार आत्मसात हो जायें कि उन्हें भारभूत न लगें। इस आधार के बनने से ही आगे की शिक्षा का मार्ग प्रशस्त होगा। अणुव्रत आंदोलन विद्यार्थियों के जीवन में अनुशासन, विनय जैसे सत्संस्कारों के बीज–वपन की दिशा में कार्य कर रहा है। यह कार्य प्रत्येक स्कूल में आगे बढ़ाने के लिए 'अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास' सतत् प्रयत्नशील है। इसके माध्यम से न केवल विद्यार्थियों के लिए अपितु पूरे समाज के लिए यह वरदान सिद्ध होगा।

इसी परिकल्पना के रूप में अणुव्रत न्यास ने विद्यार्थियों हेतु इस वर्ष 'राष्ट्र के निर्माण में सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति की भूमिका' व 'जीवन के सर्वांगीण विकास में वर्तमान शिक्षा पद्धति' विषय दिये हैं, जो प्रेरक हैं। विद्यार्थियों ने अपनी लेखनी द्वारा जो लेख लिखे हैं उन्हें पढ़ने के बाद लगता है कि भारत का विद्यार्थी अपने छात्र जीवन व अपने राष्ट्र के लिए क्या सोचता है। जो विचार विद्यार्थियों ने दिये हैं, वह अत्यंत प्रशंसनीय है।

हमारा मानना है कि अणुव्रत न्यास के माध्यम से अणुव्रत के लिए नई पीढ़ी में राष्ट्र और नैतिकता के प्रति जागृत करने का जो कार्य हो रहा है, उससे लगता है हमारा राष्ट्र सुख–समृद्धि व नैतिकता की ऊंचाइयों को पुनः प्राप्त कर सकेगा।

çekn ?kkMkor
राष्ट्रीय संयोजक
अणुव्रत निबंध लेखन प्रतियोगिता

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	*शीर्षक*	*लेखक/लेखिका का नाम*	*पृष्ठ संख्या*
1.	मातृभाषा बने शिक्षा का माध्यम	मनस्वी गौड़	3
2.	अणुव्रत को शिक्षा पद्धति में मिले स्थान	संदीप तिलकराम	7
3.	व्यावहारिक बनाई जाए शिक्षा पद्धति	मिहिर खुराना	10
4.	महत्वाकांक्षाओं के हाथों बच्चे कैद	कोमल	13
5.	खत्म हो शिक्षा में भेदभाव की प्रणाली	हर्षिता प्रसाद	18
6.	सभी को है पढ़ने का अधिकार	राहुल कुमार	21
7.	शिक्षा के साथ जीवन मूल्य सिखाए जाएं	एकता मल्होत्रा	24
8.	वर्तमान पद्धति में नैतिकता का अभाव	प्राजक्ता प्रकाश	28
9.	भाषा के दो पाटों में पिसता बचपन	फ्लोरिंस	31
10.	शिक्षा से छू सकते हैं सितारे	संदीप	35
11.	गांवों में शिक्षा स्तर को सुधारना जरूरी	सृष्टि आनंद	39
12.	शिक्षा है विकास का मेरूदंड	नवीन नेल्सनबेग	42

क्रम संख्या	शीर्षक	लेखक/लेखिका का नाम	पृष्ठ संख्या
13.	शिक्षा का रोजगार उन्मुख होना जरूरी	अंशिका भारती	46
14.	प्रतिस्पर्धा वाली डिग्रियां हों खत्म	वागीशा शर्मा	50
15.	अणुव्रत से शिक्षा पद्धति में सुधार संभव	मुस्कान सिंह	54
16.	नैतिक शिक्षा दी जानी चाहिए	सुधा कुमारी	57
17.	आधुनिक ज्ञान से जोड़ना होगा	ईशा मित्तल	59
18.	क्रांतिकारी बदलाव की जरूरत	नंदिनी गुगनानी	62
19.	बिना आचरण शिक्षा अधूरी	शिवानी शर्मा	64
20.	शिक्षा पद्धति में सुधार की गुंजाइश	गौरव फरासी	67
21.	'वोकेशनल स्टडीज' को मिले बढ़ावा	कीर्ति	71
22.	शिक्षा वो, जो दबावों से उबारना सिखाए	श्रेया चक्रवर्ती	73
23.	देश प्रेम से ओतप्रोत हो शिक्षा	प्रभात पाराशर	78
24.	छात्र वर्ग स्वयं हो गया है सजग	समृद्धि हुड्डा	82
25.	सरकार के प्रयास भी सराहनीय	दीपिका यादव	85
26.	दोष हैं, मगर दूर करने के प्रयास नहीं	निशिता वर्मा	89
27.	शिक्षा ऐसी हो जो बोझ न बने	पारुल	93
28.	कोर्स थोड़े कम किए जाएं	श्रुतिका गर्ग	97
29.	खटास में न बदल जाए शिक्षा की मिठास	सुष्मिता नंदी	100
30.	सर्व शिक्षा को प्रभावी बनाया जाए	अभिषेक बिष्ट	103
31.	जरूरत है शिक्षा को व्यवहार में लाने की	इशिका अग्रवाल	106
32.	सैनिक शिक्षा का भी हो प्रावधान	अविनाश दिनानाथ	109
33.	अधिक से अधिक खुलें बहुद्देश्यीय स्कूल	कार्तिक खण्डूरी	113
34.	नैतिक मूल्यों पर देना होगा ध्यान	साक्षी चोपड़ा	117
35.	स्मार्ट कलासेज को बढ़ावा मिले	रिया शर्मा	120
36.	पब्लिक स्कूल, मगर वहां जनता नहीं पढ़ती	तेजिंदर मोहन जुड़वाल	125
37.	पढ़ने की सामग्री और बेहतर हो	कीर्थना के.	128
38.	तकनीकी के साथ नैतिक पढ़ाई भी हो	केराई रोशनी गोपाभाई	130
39.	निजीकरण के नाम पर महंगी हुई शिक्षा	करण पनेरी	134
40.	स्वरोजगार पाने वालों के लिए दिक्कतें	पर्व	138
41.	विषयगत ज्ञान समय के अनुकूल हो	यशिता बठेजा	140
42.	समय–समय पर हो पुनः अवलोकन	ऋशिका कालांतरी	144
43.	शोषण करने वालों पर लगे अंकुश	चारिमा	147
44.	प्रयोग क्षमता की भी हो परीक्षा	शुभम सिंह	151
45.	असहाय हो चली है शिक्षा पद्धति	ऋषिका जैन	155

क्रम संख्या	शीर्षक	लेखक/लेखिका का नाम	पृष्ठ संख्या
	English		
46.	Education system varies widely	Tanwi Maheswari	159
47.	Education needs to sustain interest	Amartya Upamanyu	162
48.	World peace is not only possible	Angatpreet Kaur	166
49.	Good will is the fedding of co-operation	Pankaj S. Bhandari	169
50.	Children's natural curiosity should be around	Yash Goyal	173
51.	Practical knowledge is more needed	Tania Dey	177
52.	Quality education is needed	Janvi Prasad	180
53.	Education is not filling of a vessel	Nitish Mishra	183
54.	Educaiton system in India needs a change	Rohan Khurana	187
55.	Education has totally become commercial	Pooja	191
56.	Education is strength	Yadwinder Singh	194
57.	Educaiton should sustain interest	Alisha	197
58.	Change in education policy is a must	Mrunmayee Narendra Ghugal	200
59.	Students shouldn't be only bookworms	Komal Soni	204
60.	We do need reforms in syllabus	Sonali Shyam	208

हिन्दी

मातृभाषा बने शिक्षा का माध्यम

◈ euLoh xkM नौवीं
विकास भारती पब्लिक स्कूल
सैक्टर–24, रोहिणी, दिल्ली

शिक्षा का उद्देश्य बालक के व्यक्तित्व का बहुमुखी विकास करना है परंतु विद्यालयों के पाठ्यक्रम तथा विद्यार्थियों की रुचि देखने से प्रतीत होता है कि इसका उद्देश्य नौकरी पाने तक ही सीमित रह गया है। विद्यार्थी परीक्षार्थी बन गए हैं। सभी को एक ही धुन रहती है कि किस प्रकार अमुक परीक्षा पास कर ली जाए और अच्छी नौकरी प्राप्त कर ली जाए।

eनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहते हुए ही मनुष्य जीवन के विभिन्न कार्यकलापों की जानकारी प्राप्त करता है तथा समाज और परिवार के नियमों पर चलना सीखता है। जब बच्चा विद्यालय जाने की आयु में आता है तो अभिभावक उसे अच्छी से अच्छी शिक्षा प्राप्त करने के लिए विद्यालय भेजते हैं।

शिक्षा मानव जीवन की अत्यंत महत्वपूर्ण आवश्यकता है। शिक्षा के कारण ही मानव सभ्यता विकसित हुई है तथा इसका अस्तित्व बना हुआ है। जीवन यापन की विभिन्न क्रियाओं, तकनीकों को सीखने तथा सीखने की प्रक्रिया का कार्य शिक्षा करती है। शिक्षा मनुष्य को जीवन जीने की कला सिखाती है तथा विभिन्न कलाओं में निपुणता प्रदान करती है।

शिक्षा मानव जीवन को एक दिशा प्रदान करती है। यह बच्चों की शारीरिक, मानसिक, नैतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक क्षमताओं का विकास करती है। बच्चा एक गीली मिट्टी के समान होता है जिसको

किसी भी आकार में ढाला जा सकता है। शिक्षा के द्वारा बच्चों की आंतरिक क्षमताओं की पहचान कर उनकी योग्यता व क्षमता के अनुसार उनके व्यक्तित्व का निर्माण होता है जिससे मनुष्य को अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में सहयोग मिलता है।

शिक्षा का उद्देश्य बालक के व्यक्तित्व का बहुमुखी विकास करना है परंतु विद्यालयों के पाठ्यक्रम तथा विद्यार्थियों की रूचि देखने से प्रतीत होता है कि इसका उद्देश्य नौकरी पाने तक ही सीमित रह गया है। विद्यार्थी परीक्षार्थी बन गए हैं। सभी को एक ही धुन रहती है कि किस प्रकार अमुक परीक्षा पास कर ली जाए और एक अच्छी नौकरी प्राप्त कर ली जाए।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था ने हमारा व समाज का बहुत विकास किया है। विभिन्न विषयों के अध्ययन से कंप्यूटर, विज्ञान, कला, वाणिज्य इत्यादि द्वारा छात्र अपनी रूचि व योग्यता के अनुसार विषयों का चयन कर विभिन्न क्षेत्रों में ऊँचे पदों तक पहुँच रहे हैं। परंतु साथ ही कुछ बुराइयाँ भी देखने में आ रही हैं। उन बुराइयों को दूर करने के लिए हमें अपनी वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में कुछ परिवर्तन करने होंगे जिससे बच्चों के सोचने के तरीके में परिवर्तन आए।

आज का शिक्षित युवा वर्ग शारीरिक मेहनत, खेती–बाड़ी आदि कार्य करने में हीनता का अनुभव करता है। अतः पाठ्यक्रम में कुछ ऐसे बदलाव करने चाहिए जिससे छात्रों के मन में मेहनत करना सम्मान का विषय बने। शिक्षा में शारीरिक परिश्रम संबंधी विषयों को उचित स्थान दिया जाए जिससे सभी वर्ग के विद्यार्थी लाभ उठा सकें। कृषि संबंधी तथा इस प्रकार के अन्य विषयों को पढ़कर छात्र मेहनत से घृणा नहीं करेंगे और पढ़–लिखकर केवल कुर्सी की नौकरी के लिए भटकते नहीं रहेंगे। वे हर छोटे–बड़े कार्य को समान रूप से देखेंगे।

विद्यालयों में पढ़ाए जाने वाले विषयों का दैनिक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान होना चाहिए। उन विषयों की जीवन में उपयोगिता होनी चाहिए

ताकि शिक्षा समाप्त होने पर आजीविका पैदा करने में उन विषयों से सहायता प्राप्त हो सके।

पाठ्यक्रम में औद्योगिक तथा शिल्प संबंधी विषयों का स्थान होना चाहिए जिससे शिक्षा और प्रतिदिन के जीवन के कामों में निकटता बनी रहे। वे इस कला को छोटा न समझें तथा इन क्षेत्रों में छिपे रोजगार अवसरों का लाभ उठा सकें।

अंग्रेजी, संस्कृत, मराठी, फ्रेंच आदि अन्य भाषाओं के साथ–साथ मातृभाषा भी शिक्षा का माध्यम होनी चाहिए। हालांकि अन्य भाषाओं के ज्ञान से हमें दूसरे लोगों के विचारों, उनके साहित्य आदि की जानकारी मिलती है तथा विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं के द्वारा छात्रों को दूर–दूर तक अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलता है; लेकिन अन्य भाषाओं के साथ–साथ यदि छात्र अपनी मातृभाषा में भी शिक्षा प्राप्त करते हैं तो वह अपने विचारों को दूसरों तक अधिक प्रभावी ढंग से पहुंचा सकते हैं क्योंकि मनुष्य का स्वभाव है कि वह मातृभाषा में ही सोचता है और अपनी बात को उसी भाषा में दूसरों तक ज़्यादा अच्छी तरह पहुंचा सकता है।

पाठ्यक्रम में व्यक्तिगत चरित्र निर्माण, सदाचार एवं अनुशासन संबंधी बातों को सम्मिलित किया जाना चाहिए क्योंकि आजकल विद्यार्थियों में अनुशासन हीनता बढ़ती जा रही है। विद्यार्थी उदंड होते जा रहे हैं। शिक्षकों से अभद्र व्यवहार करना, बड़ों से ऊँचे स्वर में बात करना, झूठ बोलना, लड़ाई–झगड़ा करना आदि बातें आम हो गई हैं। अतः पाठ्यक्रम में नैतिकता बढ़ाने व अनुशासन का महत्व छात्रों को समझाने के लिए विशेष प्रयास करने होंगे।

आज की शिक्षा व्यवस्था में छात्रों का ध्यान इस ओर ही लगा रहता है कि वे किस प्रकार स्वयं को औरों से श्रेष्ठ साबित कर सकें। देश और समाज के लिए उनके क्या दायित्व हैं, यह उन्हें पता ही नहीं है। देशभक्ति की भावना, देश के लिए कुछ करने की इच्छा अब कम ही

दिखाई देती है। अतः पाठ्यक्रम में देश के लिए बलिदान देने वाले वीरों की जीवनी, घटनाएं आदि सम्मिलित की जाने चाहिए ताकि छात्रों के मन में राष्ट्रप्रेम पैदा हो तथा वे भी देश के लिए कुछ कर–गुज़रने के लिए तत्पर हों।

पाठ्यक्रम में व्यावसायिक शिक्षा पर बल दिया जाना चाहिए। शिक्षा रोजगारोन्मुख हो तथा पाठ्यक्रम में ऐसे विषय अवश्य सम्मिलित किए जाएं जिन्हें पढ़कर विद्यार्थी रोजगार प्राप्त कर सकें। पाठ्यक्रम में ऐसे पाठ आने चाहिए जिनसे विद्यार्थियों में देश भक्ति की भावना भी उत्पन्न हो।

अंत में, मैं यही कहना चाहूंगा कि यदि हमारी शिक्षा व्यवस्था में इन कुछ बातों को भी सम्मिलित कर लिया जाए तो विद्यार्थियों का बहुमुखी विकास किया जा सकता है तथा यह शिक्षा उनके आने वाले जीवन में उपयोगी साबित होगी। ◈

अणुव्रत को शिक्षा पद्धति में मिले स्थान

◈ **lnhi frydjke**, सातवीं
संगीता विद्या मंदिर
वीर सावरकर पथ, डोंबिवली (पूर्व)
महाराष्ट्र, मुम्बई

सर्वांगीण विकास के अंतर्गत विद्यार्थी का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक, बौद्धिक व सौंदर्यदृष्टि के विकास का समावेश होता है। यदि बच्चों का सर्वांगीण विकास हो तब ही वे बच्चे देश के हित के लिए कार्य करते हुए देश के जिम्मेदार नागरिक बन सकते हैं क्योंकि बच्चे देश की आंखे हैं और शिक्षा उनकी ज्योति।

vाज के वर्तमान युग में शिक्षा मानव की मूलभूत आवश्यकताओं में समाविष्ट हो गई है। व्यक्ति, समाज व राष्ट्र का भविष्य उसकी शिक्षा पर निर्भर करता है।

'शिक्षा के पंखों से उड़कर छू लें सपनों का संसार।' अर्थात् शिक्षा ही हमारे सपनों को साकार करने का एकमात्र साधन है। आज प्रत्येक व्यक्ति शिक्षा के महत्व को समझ गया है। उसकी अपेक्षाएं भी बढ़ती जा रही हैं, अतः अपने जीवन के सर्वांगीण विकास करने हेतु व्यक्ति शिक्षा पर आश्रित है। गांधी जी ने कहा है कि ''शिक्षा का प्रमुख ध्येय विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास करना है।''

प्राचीन समय में शिक्षा शिक्षक केंद्रित व पाठ्यपुस्तक केंद्रित थी। उस समय यह कहावत भी प्रचलित थी कि–

'पढ़ोगे लिखोगे बनोगे नवाब, खेलोगे–कूदोगे होगे खराब।'

परंतु बदलते समय के साथ ये धारणाएं परिवर्तित होती जा रही हैं। आज शिक्षा शिक्षक केंद्रित न होकर विद्यार्थी केंद्रित हो गई है। गांधी जी के कथनानुसार शिक्षा का प्रमुख ध्येय अब विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास करना हो गया है।

सर्वांगीण विकास के अंतर्गत विद्यार्थी में शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक, बौद्धिक व सौंदर्यदृष्टि के विकास का समावेश होता है। यदि बच्चों का सर्वांगीण विकास हो तब ही वे बच्चे देश के हित के लिए कार्य करते हुए देश के जिम्मेदार नागरिक बन सकते हैं क्योंकि बच्चे देश की आंखे हैं और शिक्षा उनकी ज्योति।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली कुछ हद तक जीवन के सर्वांगीण विकास का कार्य स्वयं ही कर रही है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास हेतु आकारिक मूल्यमापन की योजना है जिसके अंतर्गत विविध उपक्रमों व कृतियों को आयोजित कर विद्यार्थियों में विविध मूल्यों का व क्षमताओं का निर्माण किया जाता है। यह कार्य विद्यालयीन स्तर पर किया जाता है। परंतु यदि शिक्षा प्रणाली को जीवन से जोड़ दिया जाए तो सर्वांगीण विकास साध्य किया जा सकता है। प्रत्यक्ष जीवन से जुड़ने पर ही विद्यार्थी उसका वास्तविक अनुभव ग्रहण कर पाएंगे जिससे शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं रह जाएगी।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली द्वारा जीवन का सर्वांगीण विकास निम्न प्रकार से किया जा सकता है–

शारीरिक विकास के लिए केवल पी.टी., कुछ व्यायाम प्रकार व कुछ खेलों तक सीमिति न रहकर विद्यार्थी को उनकी रूचि के अनुसार खेलों में भाग लेने का अवसर प्रदान करना चाहिए जिससे विद्यार्थी में स्वावलंबन व अनुशासन की भावना का निर्माण हो। स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता आए। स्वस्थ राष्ट्र ही प्रगत राष्ट्र बन सकता है। मध्याह्न भोजन में फलों व पौष्टिक पदार्थों का समावेश किया जाए।

मानसिक व बौद्धिक विकास के लिए शिक्षा प्रणाली में परीक्षाओं का

आयोजन तो होता ही है परंतु विद्यार्थी अपने प्राप्त ज्ञान का व्यावहारिक जीवन में वास्तविक रूप से उपयोजन करें। उनमें तर्क शक्ति का विकास हो तथा वह घटनाओं का कार्यकरण भाव समझ सके, इसके लिए दैनिक जीवन की घटनाओं को उनके समक्ष प्रस्तुत कर उन पर विद्यार्थी अपने विचार व तर्क–वितर्क कर घटनाओं का सह–संबंध विद्यार्थी स्वयं लगाएं ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए। इसके लिए शिक्षक केवल एक मार्गदर्शक की भूमिका निभाएं। प्रतिदिन कम से कम एक घंटा उन्हें समाचार दिखाए जाएं जिससे वे देश–दुनिया के खबरों से परिचित हो सकें।

नैतिक विकास के लिए भी विद्यार्थियों को प्रत्यक्ष अनुभव दिया जाए। उनके समक्ष परिस्थितियां उपस्थित कर उन परिस्थितियों में कार्य करते व निर्णय लेने की छूट दी जाए। उसके पश्चात् चर्चा द्वारा सही व गलत की पहचान कराई जाए। संदवेदनशीलता जैसे मूल्यों के विकास के लिए प्रत्यक्ष रूप से वृद्धाश्रम एवं अनाथाश्रम में विद्यार्थियों को ले जाया जाए, उन्हें अपनी वस्तुएं व खिलौने दान में देने संबंधी जागरूकता लाई जाए।

सामाजिक विकास के लिए समूह में कार्य करने की प्रवृत्ति, एक–दूसरे का सहयोग करने जैसे अनुभव विद्यार्थियों को दिए जाएं। विद्यार्थी स्वयं गलत का प्रतिकार व सत्य को स्वीकार करें। सौंदर्यदृष्टि के विकास के लिए विद्यार्थियों को अपनी रूचि के अनुसार कलात्मक क्रियाओं में भाग लेने की छूट होनी चाहिए। साथ ही रचनात्मक लेखन संबंधी मार्गदर्शन विद्यार्थियों को शिक्षक दें।

इन सबसे अतिरिक्त यदि अणुव्रत को शिक्षा प्रणाली में स्थान दिया जाए, उसे अनिवार्य कर दिया जाए तो अपने आप ही जीवन का सर्वांगीण विकास हो जाएगा। विद्यार्थी उनके लिए निर्धारित अणुव्रतों का पालन करें व शिक्षक उनके लिए निर्धारित अणुव्रतों का पालन करें तो वह निश्चित रूप से सर्वांगीण विकास में सहायक होगा। जीवन को एक निश्चित दिशा मिलेगी। ◈

यह आवश्यक हो गया है कि हम राष्ट्र निर्माताओं को उनकी रूचि, अभिरूचि तथा योग्यतानुसार शिक्षा दें। स्थानीय उद्योग धंधों में शैक्षणिक क्रिया कलापों का समन्वय स्थापित कर एक नए वातावरण की रचना करें ताकि हमारे समस्त उद्देश्यों की पूर्ति हो सके तथा आर्थिक अवरोध और बेकारी की समस्या हल हो सके।

व्यावहारिक बनाई जाए शिक्षा पद्धति

◈ **fefgj [kjkuk]** दसवीं
हिलवुड्स अकादमी
जी, ब्लॉक, प्रीत विहार, दिल्ली

f'kक्षा का अर्थ है– अध्ययन। शिक्षा के लिए वर्तमान युग में शिक्षण, ज्ञान विद्या आदि अनेक पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग होता है। शिक्षा राष्ट्र की आंतरिक सुरक्षा है, जीवन की सफलता का दिव्य साधन है। विद्या ही वह साधन है, जिसके द्वारा मनुष्यता का विकास होता है।

शिक्षा के संबंध में यह उक्ति प्रसिद्ध है– ''विद्या विहीनः पशु समाना'' अर्थात् शिक्षा रहित व्यक्ति तो पशु के समान ही होता है।

शिक्षा में खेलों के महत्व को हम नकार नहीं सकते हैं। एक प्रसिद्ध कहावत है ''स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का विकास होता है।'' जीवन में शिक्षा के शरीर को स्वस्थ रखने के लिए खेलकूद तथा व्यायाम आदि सहायक बनते हैं। शिक्षा ही मनुष्य के सर्वांगीण विकास की आधारशिला है।

शिक्षा का प्रथम सोपान शारीरिक विकास है। खेल–कूद तथा व्यायाम शरीर में रक्त का उचित संचार करते हैं। इससे स्वस्थ शरीर का

विकास होता है। खेलकूद हमारे मन को प्रफुल्लित और उत्साहित बनाए रखते हैं। मन एकाग्रचित्त होता है।

मनुष्य जीवन की सबसे अधिक मधुर और सुनहरी अवस्था विद्यार्थी जीवन ही होता है। विद्यार्थी जीवन ही सारे जीवन की नींव माना जाता है। एक चतुर कारीगर बहुत ही सावधान और प्रयत्नशील रहता है कि वह जिस मकान का निर्माण कर रहा है कहीं उसकी नींव कमज़ोर न रह जाए। यदि नींव मज़बूत होगी तभी मकान धूप–छांव, आंधी–पानी और भूकंप के वेग को सह सकता है। इसी प्रकार बुद्धिमान व्यक्ति अपने जीवन की नींव को सुदृढ़ बनाने के लिए सावधानी से यत्न करता है।

भली प्रकार विद्या ग्रहण करना विद्यार्थी का प्रमुख कर्तव्य होना चाहिए। विद्यार्थी का कर्तव्य होना चाहिए कि वह अपने शरीर, बुद्धि, मस्तिष्क, मन और आत्मा के विकास के लिए पूरा–पूरा यत्न करे। अनुशासन प्रियता, नियमितता, समय पर काम करना, उदारता, दूसरों की सहायता करना, सच्ची मित्रता, पुरुषार्थ, सत्यवादिता, नीतिज्ञता, देशभक्ति, विनोद प्रियता आदि गुणों से विद्यार्थी जीवन सोने के समान निखर उठता है।

किंतु जिस प्रकार हम उन्नति की ओर बढ़ रहे हैं, हमारी शिक्षा में भी नित नए परिवर्तन आते जा रहे हैं। आज की शिक्षा पद्धति में प्राचीनकाल वाली शिक्षा पद्धति वाली बात नहीं रही। आज शिक्षा धन कमाने का ही साधन बन कर रह गई है। यह बात सही है कि हमें आधुनिक शिक्षा पद्धति में नए–नए परिवर्तन करने चाहिए परंतु इसके साथ–साथ अपनी सभ्यता एवं संस्कृति को भूलना नहीं चाहिए।

आज की शिक्षा पद्धति जहां एक तरफ छात्रों से कमरतोड़ मेहनत करवाती है वहीं उनमें नया जोश और उत्साह भी भर देती है। आज उन में कुछ कर दिखाने का जोश भर दिया है। उनमें देश के प्रति कुछ करने की लग्न पनप रही है। यह सब तभी चल सकता है जब शिक्षकों को उनकी योग्यता के अनुसार कार्य करने के अवसर प्राप्त

होते रहेंगे और उन्हें उनकी योग्यता के आधार पर वेतन मिलता रहेगा। जब शिक्षक को अपनी नौकरी के न खोने और वेतन की चिंता नहीं रहेगी तभी वह अपने विद्याथियों को निश्चिंत होकर शिक्षा प्रदान कर सकेगा। तभी वह नवयुवकों का सही मार्गदर्शन कर सकेगा।

- यदि हम राष्ट्र की विकासशीलता से निश्चित परिणति चाहते हैं तो सामान्य शिक्षा के साथ श्रम के महत्व को भी प्रमुख स्थान देना होगा।

- शारीरिक श्रम के साथ बौद्धिक श्रम को भी समकक्ष रखना होगा।

- सुयोग्य, सुशिक्षित नागरिक तैयार करने होंगे।

इन उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए हमें अपनी शिक्षा को जीवन उपयोगी, व्यावहारिक तथा वास्तविकता के अनुरूप बनाना होगा। यह आवश्यक हो गया है कि हम राष्ट्र निर्माताओं को उनकी रूचि, अभिरूचि तथा योग्यतानुसार शिक्षा दें। स्थानीय उद्योग धंधों में शैक्षणिक क्रिया कलापों का समन्वय स्थापित कर एक नए वातावरण की रचना करें ताकि हमारे समस्त उद्देश्यों की पूर्ति हो सके तथा आर्थिक अवरोध और बेकारी की समस्या हल हो सके। ◈

महत्वाकांक्षाओं के हाथों बच्चे कैद

◈ **dkey** दसवीं
भिवानी पब्लिक स्कूल
भिवानी, हरियाणा

चाहे कोई भी युग हो, प्रत्येक युग का भविष्य उसकी आगामी पीढ़ी पर ही निर्भर करता है। जिस युग की नई पीढ़ी जितनी अधिक शालीन, सुसंस्कृत, सुघड़ और शिक्षित होती है, उस युग के विकास की संभावनाएं भी उतनी ही अधिक रहती हैं। राष्ट्र, समाज और परिवार के साथ भी यही सिद्धांत घटित होता है। आज सर्वाधिक महत्वपूर्ण या करणीय कार्य है भावी पीढ़ी को संस्कारित करना।

f'ाक्षा में ज्ञान, उचित आचरण और तकनीकी दक्षता, शिक्षण और विद्या प्राप्ति आदि समाविष्ट हैं। इस प्रकार यह कौशलों, व्यापारों या व्यवसायों एवं मानसिक, नैतिक और सौन्दर्यविषयक के उत्कर्ष पर केंद्रित हैं।

शिक्षा प्रणालियां शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदान करने लिए अक्सर बच्चों और युवाओं के लिए स्थापित की जाती हैं। एक पाठ्यक्रम छात्रों को क्या पता होना चाहिए, बोध और शिक्षा के परिणाम के रूप में करने के लायक समझ को परिभाषित करता है। शिक्षा एक व्यापक अवधारणा है जो छात्रों में कुछ सीख सकने के सभी अनुभवों का हवाला देती है।

प्राचीन समय से भारत की शिक्षा पद्धति का प्रथम उद्देश्य बच्चों को एक परिपक्व इंसान बनाना होता है ताकि वो कल्पनाशील, वैचारिक रूप से स्वतंत्र और देश का भावी कर्णधार बन सकें, किंतु भारतीय शिक्षा पद्धति अपने इस उद्देश्य में पूर्ण सफलता नहीं प्राप्त कर सकी है। आधुनिक युग के माता–पिता भी बच्चों को स्कूल के भरोसे छोड़कर

अपने कर्तव्यों को पूरा समझ बैठते हैं। पारिवारिक शिक्षा का तो आधुनिक शिक्षा में कोई स्थान नहीं रह गया है।

एक समय हुआ करता था जब बच्चे की प्रारंभिक शिक्षा घर से शुरू होकर स्कूल तक जाती थी, पर वर्तमान शिक्षा प्रणाली में ढ़ाई वर्ष के बच्चों को स्कूल भेज दिया जाता है और शायद मां–बाप अपने कर्तव्यों की इतिश्री मान बैठते हैं। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में बौद्धिक विकास, संस्कृति एवं संस्कारपक्ष को तो पूरी तरह से त्याग दिया गया है।

चाहे कोई भी युग हो, प्रत्येक युग का भविष्य उसकी आगामी पीढ़ी पर ही निर्भर करता है। जिस युग की नई पीढ़ी जितनी अधिक शालीन, सुसंस्कृत, सुघड़ और शिक्षित होती है, उस युग के विकास की संभावनाएं भी उतनी ही अधिक रहती हैं। राष्ट्र, समाज और परिवार के साथ भी यही सिद्धांत घटित होता है। आज सर्वाधिक महत्वपूर्ण या करणीय कार्य है भावी पीढ़ी को संस्कारित करना।

अक्सर सुनने में आता है कि बाल्यमन एक सफेद कागज की भांति होता है। उस पर व्यक्ति जैसे चाहे वैसे चित्र उकेर सकता है या फिर जैसा भी चाहे लिख सकता है। उसकी सोच को जिस दिशा में मोड़ना चाहो, सरलता से मोड़ा जा सकता है। पर यह सर्वांगीण दृष्टिकोण नहीं है। क्योंकि हर बच्चा अपने साथ अनुवांशिक में कुछ लेकर आता है, जो कि गुणसूत्र और संस्कार सूत्र के रूप में विद्यमान रहते हैं।

सामाजिक वातावरण भी उसके व्यक्तित्व का एक घटक है। इसका अर्थ हुआ कि संस्कार निर्माण के बीज हर बच्चा अपने साथ लाता है। सामाजिकता, पारिवारिकतावरण में उसे ऐसे निमित्त मिलते हैं, जिनके आधार पर उसके संस्कार विकसित होते हैं। प्रायः देखा जाता है कि माता–पिता अपनी संतान के लिए भौतिक सुख–सुविधाओं के साधन जुटा देते हैं, शिक्षा एवं चिकित्सा की व्यवस्था कर देते हैं, किंतु उनके लिए सर्वांगीण विकास के अवसर नहीं खोज पाते। कुछ अभिभावक ऐसे होते हैं जो उनकी शिक्षा और आत्मनिर्भरता के बारे में भी उदासीन रहते हैं।

आज शिक्षा की सबसे बड़ी चुनौती है उसका जीवनोन्मुखी न होकर परीक्षोन्मुखी होना। आज सभी का सारा जोर परीक्षा पास करने या परीक्षा में अधिकाधिक अंक प्राप्त करने में है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे शिक्षा परीक्षा के लिए है न कि जीवन के लिए। शिक्षक हो या अभिभावक या फिर विद्यार्थी, सभी का परम लक्ष्य परीक्षा में बेहतर से बेहतर परिणाम प्राप्त करना मात्र रह गया है।

पूरी शिक्षा परीक्षा पर केंद्रित हो चुकी है जिसके कारण पूरा वातावरण घोर गलाकाट प्रतिस्पर्धा से भर गया है। बच्चे तो फिर बच्चे हैं, अध्यापकों और अभिभावकों की महत्वाकांक्षाओं के हाथों कैद परीक्षा के अलावा किसी अन्य चीज के बारे में सोचना बच्चों के लिए संभव ही नहीं। परीक्षा ने बच्चों को महज किताबी कीड़ा बना दिया है।

आधुनिक शिक्षा और गांधी जी की बुनियादी शिक्षा हमारे रहने, जीने और सोचने का ढंग बदलती है। आज की आधुनिक शिक्षा प्रणाली कितनी सार्थक व जीवन उपयोगी है हम भलीभांति जानते हैं। गांधी जी ने ''हनिद् स्वराज'' में लिखा था– ''अंग्रेजी शिक्षा लेकर हमने अपने राष्ट्र को गुलाम बनाया है।'' जो लोग अंग्रेजी पढ़े हुए हैं, उन की संतान को नीति ज्ञान, मातृभूमि, मातृभाषा सिखानी चाहिए और हिंदुस्तान की दूसरी भाषा सिखानी चाहिए।

अन्य प्राचीन धर्मों की तरह वैदिक दर्शन की भी यह मान्यता है कि प्रकृति प्राणधारा से स्पन्दित है। संपूर्ण चराचर जगत अर्थात् पृथ्वी, आकाश, स्वर्ग, आग, वायु, जल, वनस्पति और जीव–जंतु सब में दैवत्व की धारा प्रवाहित है। वैदिक दर्शन ने हमें संपूर्ण अस्तित्व के प्रति गहन श्रद्धा और स्नेह से जीना सिखाया। दृष्टि का इतना अधिक प्रभाव था कि जब प्रकृति की गोद में स्थित एक आश्रम में पली–पोसी कालीदास की शकुंतला अपने पति दुष्यंत से मिलने की लिए शहर जाने वाली थी तो उसकी जुदाई से वे पौधे आदि अत्यधिक दुखी हुए। यहां तक कि लताओं ने भी अपने पीले पत्तों को झाड़कर रुदन करना शुरू कर दिया।

शिक्षित मनुष्य में अपना टुकड़ा कमा खाने की योग्यता का होना भी परमावश्यक है। जो मनुष्य अपने आपको पढ़ालिखा कहकर स्वतंत्र टुकड़ा कमाने की शक्ति नहीं रखता उसका पढ़ना–लिखना व्यर्थ है।

आज हमारे स्कूल और कॉलेजों में पढ़ने वाले छात्र किस प्रकार इधर–उधर मारे–मारे फिरते हैं। छः वर्ष के हुए तो मां–बाप ने पढ़ने को भेजा। दस वर्ष के हुए मेहनत करके परीक्षा पास की। चार वर्ष दिमाग खाली कर बी.ए. की डिग्री ले ली। डिग्री लेने पर भी वही सामने है– हमें रोटी कैसे मिलेगी? माता–पिता ने अपनी जायदाद नीलाम कर लड़के को पढ़ाया, हजारों रुपये खर्च हो गया। कर्ज पर कर्ज हो गए। जब पढ़–लिखकर बाहर निकला और माता–पिता की आशा हुई कि अब सारी दरिद्रता दूर तो जाएगी, उस समय नया दृश्य क्या? अब नौकरी की सिफारिश करने वाला चाहिए। कहीं सिफारिश लगे, किसी साहब के सामने जाकर गिड़गिड़ाया जाये, उसको गालियां दी जाएं, किसी गरीब की नौकरी हटवाकर अपना उल्लू सीधा किया जाए, तब कहीं जाकर नौकरी लगे।

बी.ए. पढ़ने वाले का 'सब्ज बाग' देखा जाए। स्कूल और कॉलेजों की शिक्षा असल में शिक्षा नहीं है, यह केवल परीक्षा पास कराने की मशीन है। खूब रट–रट कर, घोटा लगाकर परीक्षा पास कर लेना ही इसका मुख्य उद्देश्य है। प्रत्येक कॉलेज का अधिवक्ता परीक्षोत्तीर्ण, विद्यार्थियों की संख्या बढ़ाना–फीसदी अधिक लड़के पास करना ही अपना उद्देश्य समझता है। स्कूलों के अध्यापक निरीक्षकों को बड़े गौरव से कहते हैं–'बस मतलब पूरा हो गया शिक्षा की इतिश्री हो गई। लड़कों की तंदुरुस्ती, उनका चरित्र बिगड़ जाए तो बिगड़ जाए, पर पास होना चाहिए।

लड़के परीक्षा पास करना अपना मुख्य कर्तव्य समझ सब कुछ उसके लिए बलिदान कर देते हैं और परीक्षा पास कर लेने पर समझ बैठते है–बस अब मैदान मार लिया। अब संसार के दुखों से छूट गए। बेचारे यह नहीं जानते कि जीवन का सबसे अच्छा समय गुजर गया और

अब मुसीबतों का आरंभ होने लगा है। मिल और स्पोन्सर के उपदेश तो उन्हें कण्ठ हैं पर उनसे रोटी कमाने में कुछ भी सहायता नहीं मिल सकती।

पहले तो इस शिक्षा द्वारा शरीर खो दिया–तंदुरुस्ती नष्ट हुई–जो कुछ बचा उससे आर्थिक स्वतंत्रता लाभ पाने को सर्वथा असमर्थ हैं। चौदह वर्ष की शिक्षा नवयुवकों को इस योग्य नहीं बना सकती कि वे स्वतंत्रपूर्वक जीवन निर्वाह कर सकें। घर की पूंजी से कॉलेज में समय नष्ट न किया जाता तो अच्छा रहता।

भारतीय बच्चों के सामने हमें शिक्षा का नया आदर्श रखना है। उनका कर्मवीर बनाने की शिक्षा देनी है। उनके अंदर स्वावलम्बन संजीवनी शक्ति भरनी है। यह सच तभी होगा जब मजदूरी के महत्व को शिक्षा में प्रथम स्थान दिया जाएगा, जब देश के लोग चरित्र की कसौटी से ऊँच–नीच की परख करेंगे। अकर्मण्यता का जहर जो आज हमारे सामने फैल रहा है उससे मनुष्य केवल किसी भलेमानस की बात समझाने लायक बनता है। उसको मैं शिक्षा नहीं कहती। शिक्षा दूसरी वस्तु है। वर्तमान शिक्षा से भीरूता, कायरता और अकर्मण्यता फैल गई है। इसलिए हमारा बल नष्ट हो रहा है। इसलिए हमें सच्ची शिक्षा की ओर आना चाहिए और अपनी पिछली भूलों को सुधारने का यत्न करना चाहिए। ◈

खत्म हो शिक्षा में भेदभाव की प्रणाली

◈ **gf'krk ilkn** आठवीं
जिनवाणी भारती पब्लिक
स्कूल द्वारका, से.–4, दिल्ली

वर्तमान शिक्षा दो श्रेणियों में दी जा रही है। यह दो माध्यम हैं- सरकारी तथा गैर सरकारी। सरकारी विद्यालयों में ज़्यादातर हिन्दी माध्यम से पढ़ाया जाता है और गैर सरकारी स्कूलों में अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाया जाता है। सरकारी स्कूल के अध्यापक छात्रों पर विशेष ध्यान नहीं देते जिसके कारण सरकारी स्कूल के छात्र गैर सरकारी स्कूलों के छात्रों से मुकाबला नहीं कर पाते हैं। सरकार शिक्षा के लिए योजनाएं बहुत बनाती है परंतु यह कागज़ों में ही रह जाती है।

gमारे जीवन में शिक्षा का विशेष महत्व है। शिक्षा के माध्यम से जीवन को परिपूर्ण बनाया जा सकता है। केवल पाठ्य पुस्तक का ज्ञान देना ही शिक्षण संस्थाओं की नैतिक जिम्मेदारी पूरी नहीं हो जाती। वर्तमान शिक्षा का वास्तविक अर्थ विद्यार्थियों के अज्ञान का विनाश कर उनके जीवन में ज्ञान का प्रकाश आलोकित करना है।

वर्तमान शिक्षा में नियमों, नैतिकताओं, शिष्टाचार जैसे आदर्शों को न थोपकर विद्यालय का वातावरण ऐसा बने कि बच्चे इन आदर्शों के प्रति आकर्षित हों। वर्तमान शिक्षा को बेहतर बनाने के लिए हमारी सरकार कई प्रयास कर रही है। वर्तमान शिक्षा दो श्रेणियों में दी जा रही है। यह दो माध्यम हैं– सरकारी तथा गैर सरकारी।

सरकारी विद्यालयों में ज़्यादातर हिन्दी माध्यम से पढ़ाया जाता है और गैर सरकारी स्कूलों में अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाया जाता है। सरकारी स्कूल के अध्यापक छात्रों पर विशेष ध्यान नहीं देते जिसके कारण सरकारी स्कूल के छात्र गैर सरकारी स्कूलों के छात्रों से मुकाबला

नहीं कर पाते हैं। सरकार शिक्षा के लिए योजनाएं बहुत बनाती है परंतु यह कागज़ों में ही रह जाती है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली बच्चों में भेदभाव उत्पन्न कर रही है। यह भेदभाव अमीरी–गरीबी का है। गैर सरकारी विद्यालयों में अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा दी जा रही है। कई क्रियाकलापों की भी शिक्षा दी जा रही है जिसके बदले में अभिभावकों से मोटी फीस वसूली जा रही है। समाज का एक तबका अपने बच्चों के अच्छे भविष्य के लिए इनकी मनमानी सह रहा है।

शिक्षा का स्तर सामान्य होना चाहिए जिससे बच्चों में भेदभाव उत्पन्न न हो। आज के बच्चे हिंसक प्रवृत्ति के हो गए हैं। पढ़ाई का बोझ इतना हो गया है कि उन्हें खेलने–कूदने का समय नहीं मिल पा रहा है जिससे उनका पूर्ण विकास नहीं हो पा रहा है। विद्यालयों में समय–समय पर खेल–कूद, पठन–पाठन, नृत्य–संगीत, चित्रकला, वाद–विवाद, लेखन आदि की प्रतियोगिताओं का आयोजन होते रहना चाहिए जिससे बच्चों की प्रतिभा का बहुमुखी विकास हो।

वर्तमान शिक्षण प्रणाली गांव और शहरों की बिल्कुल विपरीत है। आज भी कुछ गांवों में शिक्षा को महत्व नहीं दिया जा रहा है। गांव में अभी भी माध्यमिक स्तर तक पढ़ाई की व्यवस्था है। उच्च शिक्षा के लिए बच्चों को शहर आना पड़ता है। समुचित व्यवस्था न होने की वजह से बच्चों को बीच में ही पढ़ाई छोड़नी पड़ती है, खासकर लड़कियों को शिक्षा से वंचित रहना पड़ जाता है। गांव में ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि बच्चों को उच्च शिक्षा के लिए शहर की तरफ रुख न करना पड़े और उनकी शिक्षा रोज़गार से संबंधित हो।

आज की वर्तमान शिक्षा को बेहतर बनाने की कोशिश तो हमारी सरकार कर रही है पर यह पर्याप्त नहीं है। आज का युवा वर्ग पैसे के अभाव में उच्च शिक्षा नहीं प्राप्त कर पा रहा है। होनहार बच्चों को पैसे की वजह से पढ़ाई बीच में छोड़नी पड़ रही है। इनकी शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो पढ़ाई के साथ–साथ कोई नौकरी कर सके। वर्तमान शिक्षा

पद्धति पहले से बेहतर हो चुकी है। आज स्कूलों में पढ़ाई के साथ–साथ कम्प्यूटर शिक्षा दी जा रही है जो आगे चलकर बच्चों के रोज़गार में सहायक हो रही है। हमारी सरकार यह कोशिश कर रही है कि पैसे के अभाव में कोई बच्चा अपनी पढ़ाई बीच में न छोड़े।

जीवन के सर्वांगीण विकास में वर्तमान शिक्षा पद्धति उपयोगी भी सिद्ध हो रही है परंतु इसको और बेहतर बनाया जा सकता है। शिक्षा को रोज़गार से जोड़ना चाहिए। प्रत्येक स्कूल में ऐसी शिक्षा का प्रावधान होना चाहिए जो रोज़गारोन्मुख हो ताकि हमारे देश को एक अच्छा शिक्षक, डॉक्टर, इन्जीनियर आदि मिले। बच्चा जो भी करना चाहता हो उसमें वह पारंगत हो। सरकार कोशिश तो कर रही है पर यह पूरी नहीं है। सरकार को और सजग होने की ज़रूत है ताकि हमारे आज के बच्चे कल समाज में सिर उठा कर जीने लायक बनें। खुद अपनी सहायता करें और दूसरों के लिए भी मददगार बनें।

कुछ शिक्षण संस्थाएं ऐसी हैं जिनमें फर्जी डिग्री दी जा रही है जो बच्चों के भविष्य के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। स्कूलों में नकल भी खूब करायी जा रही है। सरकार को इन पर नज़र रखनी चाहिए ताकि यह बुराई समाज में न फैल सके। सरकार द्वारा सर्वशिक्षा का अभियान सफल साबित हो रहा है। बच्चों को व्यवसाय से जोड़ने के लिए व्यावसायिक शिक्षा की व्यवस्था की जा रही है। कुछ स्वयंसेवी संस्थाएं इस क्षेत्र में बढ़–चढ़ कर हिस्सा ले रही हैं। यहां लड़कियों को सिलाई–कटाई, ब्यूटीशियन आदि की शिक्षा दी जा रही है।

स्कूलों में अनुशासन लाने के लिए समय–समय पर निरीक्षण की व्यवस्था होनी चाहिए। बच्चों में प्रतियोगिता उत्पन्न करने के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं और पुरस्कार की व्यवस्था होनी चाहिए। जब वर्तमान शिक्षा इतनी सुढ़ृढ़ होगी तो समाज का कायाकल्प होगा और बहुत सी बुराई जैसे ऊँच–नीच, अमीर–गरीब, छुआछूत, दहेज आदि समस्याएं अपने आप समाप्त हो जाएंगी तब जाकर हम सही मायने में शिक्षित कहलाएंगे। ◈

सभी को है पढ़ने का अधिकार

◈ **jkgy dekj** दसवीं
आदर्श हिंदी विद्यालय
जे.सी. रोड, अंबेडकर कॉलोनी,
कोलकाता, प. बंगाल

कुछ अमीर लोग ऐसे होते हैं जो अपने नौकरों पर अत्याचार करते हैं और नौकर शिक्षित न होने के कारण कुछ नहीं कर पाते हैं और पीड़ा को सहन करते रहते हैं। यही कारण है कि अगर नौकर शिक्षित होता तो उसे अच्छी नौकरी भी मिल सकती थी। शिक्षा हमारे जीवन की कई मुश्किलों को आसान बना देती है।

tीवन में शिक्षा हमारे लिए अति आवश्यक है। शिक्षा के बिना हमारी जिंदगी अधूरी है। हम शिक्षा के बिना इस संसार में कुछ नहीं कर सकते। हमारे जीवन में शिक्षा ही एक ऐसी है जो हमें दुनिया में कैसे रहना है इसका ज्ञान देती है। शिक्षा हमारे जीवन का एक मूल शब्द है। शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए सबसे जरूरी चीज है सोच। भारत के लोगों की सोच में बदलाव लाना होगा। वह समझते हैं कि शिक्षा हमारे जीवन में कोई मोल नहीं रखती। कुछ व्यक्तियों को शिक्षा बुरे साये की तरह लगती है।

कुछ लोग शिक्षा को महत्व नहीं देते। जो व्यक्ति अपने बच्चों को पढ़ाना चाहते हैं उनके पास पैसे नहीं होते हैं एवं अन्य कारणों से वह बच्चे को नहीं पढ़ा पाते। ऐसे नागरिकों की हमें मदद करनी चाहिए।

वर्तमान में यह देखा गया है कि लोग अपने स्वार्थ की पूर्ति करने हेतु अपने बच्चों को नहीं पढ़ाते हैं। हमें वर्तमान शिक्षा को और उपयोगी बनाने में हाथ बंटाना चाहिए। यह हम अकेले नहीं कर सकते। हमें

इस कार्य को अपने समाज से मिलकर करना होगा। शिक्षा के प्रति नागरिकों में जागरूकता भरनी होगी। हमने राष्ट्र को आगे बढ़ाना है तो हमें पूरे राष्ट्र को शिक्षित करना होगा। शिक्षा के बिना किसी के जीवन का उद्धार नहीं हो सकता। शिक्षा का अर्थ है पढ़ाई।

इस जीवन में सभी नागरिकों को पढ़ने का अधिकार है। फिर भी हम लोग यह क्यों नहीं समझ पाते कि पढ़ाई करने से हमारे जीवन में खुशियां ही खुशियां आती हैं। पढ़ाई ही वह कड़ी है जिसके माध्यम से हमारे देश की गरीबी दूर हो सकती है। जीवन में सभी क्षेत्रों का विकास पाने के लिए शिक्षा अति आवश्यक है। शिक्षा को अगर आगे बढ़ाएंगे तभी हमारे देश से गरीबी, भ्रष्टाचार, अमीरों एवं गरीबों के बीच भेदभाव दूर हो सकता है।

कुछ लोग ऐसे होते हैं जो अपने नौकरों पर अत्याचार करते हैं और नौकर शिक्षित न होने के कारण कुछ नहीं कर पाते हैं और पीड़ा को सहन करते रहते हैं। यही कारण है कि अगर नौकर शिक्षित होता है तो उसे अच्छे नौकरी भी मिल सकती थी। शिक्षा हमारे जीवन की कई मुश्किलों को आसान बना देती है।

शिक्षा को और उपयोगी कैसे बनाया जाए, कुछ सुझाव दिए जा रहे हैं:–

- इसे आगे बढ़ाने के लिए हमें अच्छे विद्यालयों का निर्माण करना होगा। विद्यार्थी को सभी सहायक वस्तुएं उपलब्ध होनी चाहिए। जो गरीब हैं उनके लिए भी। यह करके हम वर्तमान शिक्षा को आगे बढ़ा सकते हैं।

- हमें शिक्षा को आगे बढ़ाना है तो जिस विद्यार्थी के माता–पिता शिक्षित हैं, उन्हें अपने बच्चों को और आगे पढ़ाने के उद्देश्य देने चाहिए। जिससे बच्चे अपने दोस्तों को भी पढ़ायें।

- शिक्षा हमारे जीवन का मूल कर्तव्य है, जिससे हम अपने सफाई, सामाजिक व्यवस्था, खेल–कूद के बारे में और आत्मनिर्भर हो सकते हैं।

- जो व्यक्ति शिक्षित होते हैं, वह यह जानते हैं कि सफाई हमारे लिए कितनी आवश्यक है। जो व्यक्ति शिक्षित नहीं होते हैं, वह क्या जाने कि सफाई न करने से बहुत सी बीमारियां फैलती हैं, अगर वह शिक्षित होते तो वह अपने आसपास की सफाई पर भी ध्यान देते।

- हमारे समाज की व्यवस्था में शिक्षित का एक आधार है। जिससे हम अपने समाज में अन्य साधनों का उपयोग कर सकते हैं। शिक्षा हमारे जीवन में बहुत मूल्य रखती है। इससे हम अपने समाज के विकास में उपयोग करते हैं इसे हम अपने समाज के उद्धार में उपयोग कर सकते हैं।

शिक्षा का उपयोग अन्य कार्य को सम्पूर्ण करने में कर सकते हैं। समाज की अर्थव्यवस्था शिक्षा पर निर्भर करती है। जिस समाज में शिक्षा का महत्व सर्वपरि होता है वह समाज सबसे आगे बढ़ता है। समाज को आगे बढ़ाने में एक शिक्षित समाज–व्यवस्था का ही साथ होता है। शिक्षा की अहम भूमिका में खेलकूद का सम्मिलित होना जरूरी है। इसके लिए सरकार को सभी साधन अपने खर्चे पर स्वयं पर उठाने चाहिए। ◈

वर्तमान शिक्षा में विद्या का समावेश होना आवश्यक है। शिक्षा के साथ छात्रों को जीवन जीने की कला, जीवन प्रबंधन एवं जीवन मूल्यों की नैतिक शिक्षा की भी जरूरत है। वर्तमान स्थिति का समाधान क्रांति की नई रोशनी में है। इसी के उजाले में नए जीवन मूल्य दिखाई देंगे। छात्रों की दशा सुधरेगी और उन्हें सही दिशा मिलेगी।

शिक्षा के साथ जीवन मूल्य सिखाएं जाएं

◈ ,dr eYgk=k दसवीं
भारत नेशनल पब्लिक स्कूल
राम विहार, कड़कड़डूमा, दिल्ली

मनुष्य जीवन में शिक्षा का बहुत अधिक महत्व होता है। शिक्षा मनुष्य को शिष्ट आचरण के साथ–साथ समाज में प्रतिष्ठित होने में सहायता प्रदान करती है। शिक्षा शब्द का अर्थ है अध्ययन के माध्यम से ज्ञान ग्रहण करना। वर्तमान युग में शिक्षा के लिए ज्ञान, विद्या, एज्यूकेशन आदि कई पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

वर्तमान युग में शिक्षा ने चेतन या अचेतन रूप में मनुष्य की रूचियों, योग्यताओं, सोच एवं सामाजिक मूल्यों के प्रति उनके नजरिये को बहुत हद तक बदला है। शिक्षा ने मनुष्यों का सर्वांगीण विकास भी किया है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली के नए आयामों ने मनुष्य जीवन को और भी बेहतर बनाया है। लोगों का नज़रिया बदला है, समाज के रूढ़ीवादी विचारों में भी बदलाव आया है।

शिक्षा आंतरिक अंकुरण है, बाहरी आरोपण नहीं। शिक्षा सटीक अभिव्यक्ति की कला खोजती है परंतु वर्तमान शिक्षा केवल बाहरी आरोपण का

माध्यम बनी हुई है। श्रम, साहस और संकल्प से विहीन बेरोजगारों की बढ़ती भीड़ आज की शिक्षा का वर्तमान है।

शिक्षा का मूल उद्देश्य है– मनुष्य को उसकी बाहरी और आंतरिक आवश्यकताओं से परिचित कर उनको पूरा करने की कला प्रदान करना। शिक्षा जीवन की भौतिक जरुरतें जैसे बौद्धिक, नैतिक एवं आत्मिक मूल्यों की पहचान एवं इनके अभिवर्द्धन की कला प्रदान करती है, परंतु दुर्भाग्य से शिक्षा को एकांगी बना दिया गया है। इसको केवल जीविकोपार्जन एवं व्यवसाय प्राप्त करने का एकमात्र जरिया बना दिया गया है। इसी कारण शिक्षा के व्यज्ञवसायीकरण का दौर प्रारंभ हुआ।

व्यावसायिक शिक्षा अपने व्यवसाय में निःसंदेह काफी आगे बढ़ी है परंतु इसका दूसरा एवं अन्य पहलू उतना ही निराशाजनक एवं चुनौतीपूर्ण है। जो प्रतिभाशाली छात्र उच्च शिक्षण संस्थाओं से निकल रहे हैं, यदि इनके जीवन मूल्यों, समाज एवं राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व के प्रति दृष्टिकोण का पता लगाया जाए तो निराशा ही हाथ लगेगी। इन छात्रों का स्वयं के विचार, भाव एवं आंतरिक क्षमताओं के प्रति समझ और उसका नियोजन नहीं के बराबर है। शिक्षा के रूप में उनको जो ज्ञान प्राप्त हुआ है, वह केवल जानकारी इकट्ठी करता है और यह बौद्धिक समझ तक सीमित है। वस्तुतः यथार्थ ज्ञान है–अनुभूति, जीवंत प्रतीत।

वर्तमान शिक्षा पद्धति में जो ज्ञान परोसा जाता है, वह तो केवल बौद्धिक धरातल तक सीमित है, इससे हमारे अंदर दबी–पड़ी सुप्त क्षमताओं का जागरण संभव नहीं है। वह तो हमें केवल जीविकोपार्जन तक सीमित रखता है। शिक्षा का अन्य रूप जिसे विद्या कहते हैं, यही सच्चा ज्ञान है, जो कहीं बाहर से नहीं आता, यह भीतर से जागता है। इसे स्कूल या कॉलेज के पाठ्यक्रम से सीखना नहीं, बल्कि स्वयं के अंदर से उघाड़ना होता है। सीखा हुआ ज्ञान जानकारी है, जबकी उघाड़ा हुआ ज्ञान अनुभूति है। जिस ज्ञान को सीखा जाए, उसके अनुसार जीवन को जबरदस्ती ढालना पड़ता है, फिर भी वह कभी संपूर्णतया स्वयं के अनुकूल नहीं बन पाता।

सीखे हुए ज्ञान और जीवन में हमेशा एक अंतर्द्वंद्व बना ही रहता है, पर जो ज्ञान उघाड़ा जाता है, उसके आगमन से ही आचरण सहज उसके अनुकूल हो जाता है। सच्चे ज्ञान के विपरीत जीवन का होना एक असंभावना है।

वर्तमान शिक्षा में विद्या का समावेश होना आवश्यक है। शिक्षा के साथ छात्रों को जीवन जीने की कला, जीवन प्रबंधन एवं जीवन मूल्यों की नैतिक शिक्षा की भी जरूरत है। वर्तमान स्थिति का समाधान क्रांति की नई रोशनी में है। इसी के उजाले में नए जीवन मूल्य दिखाई देंगे। छात्रों की दशा सुधरेगी और उन्हें सही दिशा मिलेगी। इस शिक्षा–क्रांति से ही शिक्षा के परिदृश्य में छाया हुआ कुहासा मिटेगा और उसका विद्या वाला स्वरूप निखरकर सामने आएगा। तभी पता चलेगा कि शिक्षा जीवन की सभी दृश्य एवं अदृश्य शक्तियों का विकास है।

वर्तमान शिक्षा पद्धति में इसी विचार एवं संस्कार रूप व्यक्तित्व गढ़ने की कला जोड़नी होगी। इसके बिना पुस्तकीय ज्ञान गर्दनतोड़–कमरतोड़ के सिवाय और कुछ नहीं। शिक्षा जगत में एक नई क्रांति होने से सूझबूझ, सोच–समझ के नए आदर्श प्रकट होंगे और तभी साहस, संकल्प एवं श्रम के सामर्थ्य से भरे–पूरे प्रचंड आत्मबल के धनी मनुष्यों का जन्म होगा। आज इसी शिक्षा की आवश्यकता है, जिसे अपनाना चाहिए।

आज शिक्षा के क्षेत्र में बहुत से बदलाव की आवश्यकता है। वैसे तो समय–समय पर इसमें नित नए परिवर्तन समय अनुकूल होते रहते हैं लेकिन जहाँ तक हमारी सोच है, उनमें से पर्याय कई परिवर्तनों की मांग है जो आज भी शिक्षा के क्षेत्र में बनी हुई हैं, जैसे छात्रों के रूचि अनुसार विषयों का समावेश होना अनिवार्य है, क्योंकि छात्र अपनी रूचि अनुसार विषय को बड़ी रोचकता व गहराई से पढ़ते हैं।

इसके साथ ही शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न शिक्षा पद्धतियों का होना भी आवश्यक है ताकि शिक्षा के क्षेत्र में संतुलन बना रहे। साथ–साथ शिक्षा का ढ़ांचा केवल पाठ्यक्रमों की सीमा तक ही न बंध कर रह जाए। इसके साथ–साथ हमें चारित्रिक विकास पर भी बल देने की आवश्यकता

है। शिक्षा का स्वरूप केवल अपने तक ही निर्धारित न हो कर 'हम' की ओर अग्रसर होना चाहिए।

इस प्रकार छोटी–छोटी बातों को ध्यान में रखकर हम वर्तमान शिक्षा को उपयोगी बनाकर भविष्य में उन्नति के शिखर पर पहुंच सकें और जीवन में सर्वांगीण विकास को सरलता से प्राप्त कर सकते हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली को अपने जीवन के सर्वंगीण विकास में इस तहर उपयोग में लाएं कि यह हमें भविष्य में उन्नति के शिखर पर पहुंचा सके। इन पंक्तियों के साथ अंत में अपने शब्दों को विराम देती हूं। ◈

वर्तमान पद्धति में नैतिकता का अभाव

◈ ikt Drk idk'k आठवीं
के.रा. कोतकर माध्यमिक
विद्यालय, महाराष्ट्र

कहने का तात्पर्य यही है, शिक्षा का अर्थ केवल किताबी ज्ञान से शिक्षित होना ही नहीं है बल्कि इसकी वर्तमान कमियों को दूर कर जनमानस, विशेषकर शिक्षा जगत से जुड़े हर एक छोटे बड़े विचारकों से सुझाव मांग कर भविष्य की शिक्षा पद्धति को इस तरह उपयोगी बनाया जाये ताकि मनुष्य का नैतिक, सामाजिक व आर्थिक आधार सुदृढ़ हो।

1858 में Indian Education Act बनाया गया। आज हमारी शिक्षा व्यवस्था इसी कानून पर आधारित है। यह मैकाले नाम के अंग्रेज ने बनायी थी हमें गुलाम बनाने के लिये और संस्कृति को नष्ट करने के लिए। मैकाले का स्पष्ट कहना था कि भारत को हमेशा–हमेशा के लिए अगर गुलाम बनाना है तो भारत के आध्यात्मिक और सांस्कृतिक शिक्षा व्यवस्था को पूरी तरह से ध्वस्त करना होगा और उसकी जगह अग्रेंजी शिक्षा व्यवस्था लानी होगी। तभी इस देश में शरीर से भारतीय लेकिन दिमाग से अंग्रेज पैदा होंगे। जब वे इस देश की यूनिवर्सिटी से निकलेंगे तो हमारे हित में काम करेंगे।

मैकाले का भूत आज सबसे अधिक प्रसन्न होगा यह देखकर कि इतने साल पहले की गयी उसकी भविष्यवाणी सही साबित हुई। मुहावरा इस्तेमाल करती हूं'' कि जैसे किसी खेत में कोई फसल लगाने के पहले पूरी तरह जोत दिया जाता, वैसे ही इसे जोतना होगा और अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था लानी होगी''; इसलिए उसने सबसे पहले गुरुकुलों को गैरकानूनी घोषित

किया। जब गुरुकुल गैरकानूनी हो गए तो उनको मिलने वाली सहायता जो समाज की तरफ से होती थी, वह गैरकानूनी हो गयी, फिर संस्कृत को गैरकानूनी घोषित किया। अंग्रेजी शिक्षा को कानूनी घोषित किया गया और कोलकाता में पहला कांवेंट स्कूल खोला गया।

उस समय इसे 'फ्री' स्कूल कहा जाता था। इसी कानून के तरह भारत में कलकत्ता यूनिवर्सिटी बनाई गयी, बम्बई यूनिवर्सिटी बनाई गयी, मद्रास यूनिवर्सिटी बनाई गयी और ये तीनों गुलामी के जमाने के यूनिवर्सिटी आज भी इस देश में कार्यरत हैं। हमारी शिक्षा व्यवस्था भी मैकाले का वही Indian Education Act है अर्थात् आज भी हमारे भारत में वही शिक्षा व्यवस्था चल रही है जो मैकाले ने हमें गुलाम बनने के लिए बनाई थी।

आज यही कारण है कि अपनी महान संस्कृति को हम स्वयं ही शिक्षा के नाम पर नष्ट करने में व्यस्त हो रहे हैं। सच्चाई यही है कि हमारा अध्यात्म, हमारी संस्कृति आज के विज्ञान से अत्यधिक उच्च और संपन्न है। आवश्यकता है तो उसे अपनाने की और मैकाले के षड्यंत्र को विफल करने की। यह तब ही संभव है जब हम अंग्रेजी शिक्षा पद्धति को निकालकर अपनी शिक्षा पद्धति का अवलंब करे।

'शिक्षा' शब्द का अर्थ है, अध्ययन तथा ज्ञान ग्रहण करना। वर्तमान युग में शिक्षण के लिए ज्ञान, विद्या, एज्यूकेशन आदि अनेक पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग होता है। शिक्षा चेतन या अचेतन रूप से मनुष्य को रूचियों, समताओं, योग्यताओं और सामाजिक मूल्यों को ध्यान में रखते हुए आवश्यकता के अनुसार स्वतंत्रता देकर उसका सर्वांगीण विकास करती है।

शिक्षा हमारे सोचने, रहने और जीने के ढंग को बदलने में सहायता करती है। आधुनिक शिक्षा पद्धति हमें धनी बना सकती है परंतु उसमें नीति और संस्कारों का नितांत अभाव मिलता है। हमारी प्राचीन शिक्षा पद्धति हमें प्रकृति और सभी प्राणियों से संपर्क बनाए रखने में सहायता करती थी। यह संस्कारों, नीतियों और अपने परिवेश को बेहतर समझने में सहायक थी।

मनुष्य प्रकृति के बहुत समीप था। आधुनिक शिक्षा आज जीविका कमाने का साधन मात्र बनकर रह गई है। संस्कार, नीतियां और परंपराएं बहुत–बहुत पीछे छूट गए हैं। आधुनिक शिक्षा प्रणाली यथार्थ और व्यावहारिक ज्ञान से बहुत दूर है। यह मात्र आधुनिकता की बात करती है। यह शोषण की नीति पर आधारित है। अपने विकास और प्रगति के नाम पर प्रकृति व हर उस चीज का शोषण करती है जो उसके नाम पर बाधा है या जिसके विनाश से उसे कुछ हासिल हो सकता है।

इसका उद्देश्य मनुष्य को रोजी–रोटी दिलाना है। मानवीय संवेदना से उसका कोई संबंध नहीं है। ऐसी शिक्षा से युक्त व्यक्ति उच्च महत्वकांक्षाओं का गुलाम होता है। उसे हर व्यक्ति अपना प्रतिस्पर्धी दिखाई देता है। वह इससे बड़े–बड़े महल खड़े कर सकता है परंतु मानवीय संवेदना कहां से लाए, जो प्राचीन शिक्षा प्रणाली का मुख्य आधार हुआ करती थी। आधुनिक शिक्षा प्रणाली के स्वयं भी लाभ हैं। रोगों पर उसने विजय पाई है परंतु कहीं न कहीं वह स्वयं को खो रहा है।

आज की शिक्षा व्यवस्था में कई बदलाव हो रहे हैं। अब तो मोबाइल, इंटरनेट पर भी हम पढ़ाई कर सकते हैं। आज की शिक्षण पद्धति विकास तो कर रही है पर कुछ लोग शिक्षण का अर्थ पैसा, संपत्ति समझते हैं; उन लोगों को समझाने के लिए यह बताना जरूरी है–

तुम न समझो बाग की स्वाधीनता यूं ही मिली है,
हर कली इस बाग की कुछ खून पीकर ही खिली है।
बिछड़ गए वे नींव में दीवार के नीचे गड़े हैं,
ये महल अपने शहीदों की चिताओं पर खड़े हैं।

कहने का तात्पर्य यही है, शिक्षा का अर्थ केवल किताबी ज्ञान से शिक्षित होना ही नहीं है बल्कि इसकी वर्तमान कमियों को दूर कर जनमानस, विशेषकर शिक्षा जगत से जुड़े हर एक छोटे–बड़े विचारकों से सुझाव मांग कर भविष्य की शिक्षा पद्धति का इस तरह उपयोगी बनाया जाये ताकि मनुष्य का नैतिक, सामाजिक व आर्थिक आधार सुदृढ़ हो। ◈

भाषा के दो पाटों में पिसता बचपन

◈ ¶ykfj| दसवीं
पैरामाउंट इंटरनेशनल स्कूल
सैक्टर–23, द्वारका, दिल्ली

छात्रों की शक्ति एवं प्रतिभा के पुष्प अगर खिलते हैं तो सुंदर क्यारियां और उद्यान बनते हैं किंतु वही प्रतिभा जब गुमराह होती है या उसका दुरुपयोग होता है तो वह प्रतिभा सुंदर पुष्प बनने की जगह एक ऐसी बेल बन जाती है जो समाज रूपी वृक्ष पर फैल कर उसे नष्ट-भ्रष्ट कर देती है। ऊर्जा, सृजनात्मकता तथा संस्कारशीलता का पाठ पढ़ाना होगा। जिससे नन्हा छात्र एक मजबूत वटवृक्ष बन कर समाज को सदा अपनी छाया से लाभान्वित करता रहे।

;ह पूर्णतः सत्य है शिक्षा मनुष्य की आधारभूत अनिवार्यता है। यह व्यक्तित्व निर्माण के साथ जीवन की मूल चेतना निर्माण का साधन भी है। आधुनिक जीवन में शिक्षा की प्रासंगिकता बढ़ती जा रही है। किसी देश को यदि शक्ति सम्पन्न होना है तो उसे अपनी युवा–शक्ति को शिक्षित तथा ज्ञानवान होने की शर्त को पूरा करना होगा।

प्रत्येक देश में शिक्षा व्यवस्था का उद्देश्य सामाजिक–सांस्कृतिक पहचान को प्रखर करना तथा समयानुकूल चुनौतियों के सामने राष्ट्र को पेश करना होता है। शिक्षा व्यवस्था आर्थिक तथा प्रौद्योगिक विकास के साथ लक्ष्य तक पहुंचने का एकमात्र उच्च मार्ग है। इसके द्वारा ही संसाधनों के पूर्ण दोहन द्वारा कोई राष्ट्र शक्तिशाली हो सकता है। भारत जनसंख्या के दृष्टिकोण से विश्व का दूसरा बड़ा देश है, पर शिक्षा के मामले में भी सबसे बड़ी अशिक्षित जनसंख्या भी यहीं निवास करती है। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद देश ने जहां आर्थिक विकास किया, वहीं शिक्षा के क्षेत्र में भी विकास हुआ लेकिन जितनी तेजी से

विकास होना चाहिए था या जितनी गति से साक्षरता दर बढ़नी चाहिए थी, नहीं बढ़ी।

इसके कई कारण थे, जिनमें बेरोजगारी और निर्धनता प्रमुख थी। ऐसी स्थिति में भारत की चहुँमुखी प्रगति की कल्पना करना चंद्रमा को छूने के समान था। किंतु फिर भी इन सभी बाधाओं के चलते न केवल हमें चांद छूना था बल्कि उसे हासिल भी करना था। महान विचारक 'सिसरो' ने क्या खूब कहा है, ''अपने तरुणों को शिक्षित करने से बढ़कर प्रजातंत्र को हम और कौन–सा उपहार दे सकते हैं।''

स्पष्टतः एक आदर्श विद्यार्थी ही राष्ट्र की डूबती नौका का कर्णधार होता है। विद्यार्थी ही अपने संरक्षकों को राष्ट्र की स्थिति से भली–भांति अवगत कराते हैं। अतः ऐसे विद्यार्थियों को दी जाने वाली शिक्षा को तो अवश्य भावी नैतिकतापूर्ण, व्यावहारिक, ज्ञानोत्तेजक तथा सर्वश्रेष्ठ होना चाहिए।

प्राचीन भारत में शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थी को बहुमुखी प्रतिभा का धनी बनाना था, उसे भौतिक ज्ञान के साथ–साथ आत्मज्ञानी भी बनाना था। साथ ही उस समय जो शिक्षा दी जाती थी वह व्यक्ति को आत्मनिर्भर, चिंतक एवम् सत्यमार्गी बनाती थी। हमारी प्राचीन शिक्षा पद्धति का उद्देश्य विद्यार्थी को मुक्ति के मार्ग से परिचित करना था। हम सभी जानते हैं कि प्राचीन भारत में गुरुकुलों एवं ब्राह्मणों द्वारा खोली गई पाठशालाओं में शिक्षा दी जाती थी। वहां विद्या धन ही प्रमुख था। न किसी तरह के दिखावे की आवश्यकता थी, न फीस ली जाती थी। गुरुकुलों को राजाओं की ओर से अनुदान मिला करता था तथा प्रकृति की गोद में छात्र विद्याध्ययन करते थे। इस प्रकार भारतीय शिक्षा पद्धति की नींव बहुत मज़बूत थी और उद्देश्य केवल यही था कि 'दीप से दीप जले, एक से दस पढ़ें।'

समय के परिवर्तन के साथ–साथ शिक्षण पद्धति में भी परिवर्तन आया लेकिन शिक्षा के उद्देश्य में विशेष परिवर्तन नहीं आया। किंतु अंग्रेजों के शासन काल के आरंभ में ही 'लार्ड मैकाले' नाम का कानून मंत्री

इंग्लैंड से आया। यहां आकर उसने सबसे पहले यहां की शिक्षा, व्यवसाय की जानकारी ली। लार्ड मैकाले ने एक कुटिल योजना बनाई अपने साथियों के बीच यह कि यदि हमें भारत को पूरी तरह अपने शिकंजे में कसना है तो सबसे पहले इसकी श्रेष्ठ शिक्षा व्यवस्था को भंग करना होगा। उसकी कुटिल नीति का प्रारंभ हो गया। जबरदस्ती पाठशालाएं बंद करवाई गईं। प्रतिष्ठित परिवार के बच्चों के लिए अंग्रेजी ढंग की शिक्षा व्यवस्था करके अलग विद्यालय खोले गए।

मैकाले ने अंग्रेजी को भारतवर्ष की राष्ट्रभाषा घोषित किया। उसने खुले शब्दों में यह कहा कि मेरा उद्देश्य इस शिक्षा से केवल यही है कि भारत में क्लर्क हों और भारत बहुत दिनों तक गुलाम बना रहे। इसीलिए शिक्षा के नाम पर सबसे अधिक बल अंग्रेजी भाषा एवं गणित पर दिया जाता था। परिणामस्वरूप ऐसी शिक्षा ने केवल बाबू ही उत्पन्न किए जो अत्यंत संकुचित मस्तिष्कता के कारण शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी ही समझने लगे। प्राचीन शिक्षा के उद्देश्य मनुष्यता का विकास, आत्मनिर्भरता, चरित्र निर्माण तथा मोक्ष प्राप्ति न जाने कहां गुम हो गए।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भी लॉर्ड मैकाले द्वारा प्रचारित तथा प्रसारित शिक्षा पद्धति में कोई विशेष परिवर्तन नहीं आया है। आज की शिक्षा पद्धति न तो अच्छे नागरिकों का निर्माण कर पा रही है, न ही अच्छे सैनिक उत्पन्न कर सकती है। ऐसे में प्रश्न उठता है कि केवल शिक्षा पद्धति की खामियों के वर्णन से ही हमारे कर्तव्य की इतिश्री हो जाती है। उत्तर है कदापि नहीं, क्योंकि न केवल सरकारों को, अफसरों को, शिक्षा तंत्र से जुड़े प्रत्येक शिक्षक तथा शिक्षार्थी को बल्कि प्रत्येक नागरिक को शिक्षा के क्षेत्र में आमूल–चूल परिवर्तन के लिए तत्पर होना होगा।

एक साधे सब सधे, सब साधे सब जाय,
रहिमन सीचें मूल को फूलहि, फलहि अधाय।

सर्वप्रथम आज की शिक्षा व्यवस्था का सबसे बड़ा दोष है बच्चों के मानसिक

विकास की उपेक्षा। पहले से ही कहा जा रहा है 'लालयेत पंचवर्षाणि' अर्थात् पांच वर्ष तक बच्चों को लाड़–प्यार करो, किंतु आज तीन वर्ष के बच्चे को भी अंग्रेजी भाषी विद्यालय भेज दिया जाता है। विचारणीय है कि जो बच्चा अपनी आवश्यकताओं और इच्छाओं को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त नहीं कर सकता, अपनी मातृभाषा को पूर्णतः नहीं जानता, उस पर जबरन एक विदेशी भाषा अंग्रेजी को लाद दिया जाता है।

भाषा के दो पाटों के बीच फंसा बच्चा न तो अपने को सुरक्षित महसूस कर पाता है न ही उसका बौद्धिक विकास उच्च स्तर का हो पाता है। सबसे बड़ी हानि होती है उसकी सृजनात्मक क्षमता के राज की। दूसरी भाषा का अनावश्यक बोझ उसके आत्मविश्वास को हर लेता है जो कहीं न कहीं उसकी आत्मनिर्भरता में बाधा उत्पन्न करता है।

शिक्षा को केवल अर्थोपार्जन का साधन न बना कर उसे विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास हेतु प्रस्तुत करना चाहिए। इसके लिए आवश्यक है शिक्षा में नैतिक शिक्षा, व्यावहारिक शिक्षा तथा शारीरिक शिक्षा को पाठ्यक्रम का अनिवार्य अंग बना दिया जाए। इसके लिए प्रतिदिन योग–व्यायाम तथा खेल–कूद का कालांश का प्रत्येक कक्षा में प्रावधान रखा जाए। यदि समूचे देश में शिक्षा के पाठ्यक्रम में व्यावसायिक शिक्षा की उचित व्यवस्था भी कर दी जाए तो भी छात्रों में बढ़ती अनुशासनहीनता को कम किया जा सकता है।

छात्रों की शक्ति एवं प्रतिभा के पुष्प अगर खिलते हैं तो सुंदर क्यारियां और उद्यान बनते हैं किंतु वही प्रतिभा जब गुमराह होती है या उसका दुरुपयोग होता है तो वह सुंदर पुष्प बनने की जगह एक ऐसी बेल बल जाती है जो समाज रूपी वृक्ष पर फैल कर उसे नष्ट–भ्रष्ट कर देती है ऊर्जा, सृजनात्मकता तथा संस्कारशीलता का पाठ पढ़ाना होगा जिससे नन्हा छात्र एक मजबूत वटवृक्ष बन कर समाज को सदा अपनी छाया से लाभान्वित करता रहे। ◈

शिक्षा से छू सकते हैं सितारें

◈ **lnhi dkj** सातवीं
डी.ए.वी. पब्लिक सी.सै. स्कूल
ककराला, पंजाब

हमें शिक्षा की कद्र करनी चाहिए। क्योंकि जो शिक्षा एक बार हाथ से निकल जाए तो वह कभी वापस नहीं आती। हमें शिक्षा के अनुसार अच्छे-अच्छे काम करने चाहिए। शिक्षा बहुत ताकतवर है। शिक्षा हमारे जीवन में कई तरह के नए रंग लाती है कभी खुशी या गम? अगर हम समय, पढ़ाई के साथ चलेंगे तो सफलता भी हमारे कदम चूम सकती है।

tीवन के सर्वांगीण विकास में वर्तमान शिक्षा पद्धति को और उपयोगी बनाने के लिए हमें खूब परिश्रम करना होगा। उदाहरण के लिए जैसे एक बार एक शक्तिशाली राजा घने जंगल में शिकार खेल रहा था। अचानक आकाश में काले बादल छा गए और मूसलाधार वर्षा होने लगी। अंधकार में राजा अपनी राह भूल गया और सिपाहियों से भी अलग हो गया।

सूर्य अस्त हो गया था लेकिन अकेला राजा राजमहल तक नहीं पहुंच सका। वह भूख–प्यास और थकावट से व्याकुल हो गया। राजा जंगल के किनारे एक टीले पर बैठ गया। थोड़ी देर बाद उसने कुछ बच्चों को बाग की ओर जाते हुए देखा, कहा, ''सुनो बच्चो, जरा यहां आओ''। जब बच्चे पहुंचे तो राजा ने उनसे पूछा, ''थोड़ा भोजन और जल मिलेगा। मैं बहुत भूखा–प्यासा हूं।''

नन्हें बच्चों ने उत्तर दिया, ''अवश्य। हम घर जाकर अभी सब कुछ ले आते हैं।'' वे गांव की ओर भागे और तुरंत जल और भोजन ले आए।

राजा बच्चों को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। वह बोला, ''प्यारे बच्चो! अब मुझे बताओ कि तुम जीवन में क्या करना चाहते हो। मैं तुम सभी की मदद करना चाहता हूं।''

कुछ देर सोचने के बाद एक बालक बोला, ''मुझे धन चाहिए''। राजा मुस्करा कर बोला, ''ठीक है, मैं तुम्हें इतना धन दूंगा कि तुम जीवन भर सुखी रहोगे। मैंने तो कभी दो समय की रोटी नहीं खाई है। कभी सुंदर कपड़े नहीं पहने हैं। अब मैं यह सब कुछ कर सकता हूं।''

यह शब्द सुनते ही बालक की खुशी का ठिकाना न रहा। दूसरे बालक ने बड़े उत्साह से पूछा, ''हे राजन! क्या आप मुझे घोड़ागाड़ी देंगे?'' वह उत्तर की प्रतीक्षा में सांस रोके खड़ा था। ''अगर तुम्हें यही चाहिए तो तुम्हारी इच्छा भी पूरी हो जाएगी।'' राजा ने कहा।

''धन्यवाद–धन्यवाद'' लड़के ने कहा। उसकी आंखें चमकने लगीं। उसने कहा, ''आज से मेरे घर में दीये जलेंगे।'' तीसरे बालक ने कूदते हुए पूछा, ''महाराज क्या आप मेरा सपना पूरा करेंगे?'' राजा (हंसते हुए) ''क्यों नहीं।'' ''महाराज! मुझे न धन चाहिए न बंगला, मुझे तो आप आशीर्वाद दीजिए जिससे मैं पढ़–लिखकर विद्वान बन सकूं। शिक्षा समाप्त होने पर मैं अपने देश की सेवा करना चाहता हूं।'' लड़के ने कहा।

राजा तीसरे बच्चे की इच्छा सुनकर बहुत प्रभावित हुआ। उसने उसके लिए शिक्षा का प्रबंध किया। वह मेहनती बालक था, इसलिए उसने दिन रात एक कर दिया और प्रत्येक कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने लगा। वह विद्वान था। इसलिए राजा और नगरवासी उसका सम्मान करते थे। दुर्भाग्य से जिस बालक ने धन मांगा था, उसने बुद्धिमानी से काम न लिया, व्यापार में उसका सारा धन डूब गया। दूसरे बालक का बंगला और गाड़ी एक भूकंप में नष्ट–भ्रष्ट हो गये। दोनों उदास मित्र राजा के दरबार में अपने विद्वान मित्र से मिलने के लिए आए। हमें दोनों ने राजा से पुरस्कार मांगने में भूल कर दी। तीसरे मित्र ने उन्हें

समझाते हुए कहा, ''धन सदा पास नहीं रहता है, ज्ञान मनुष्य की जिंदगी भर काम आता है और उसे कोई भी चुरा नहीं सकता।''

शिक्षा ही मनुष्य को विद्वान और बड़ा बनाती है। दुनिया में कोई और चीज़ नहीं है। तो हमने देखा कि शिक्षा ही सबसे बड़ी चीज है। जो बच्चे कक्षाओं में फेल हो जाते हैं इसका कारण यह है कि उनके पास समय नहीं होता है। इस रचना में मैं आपको उनके पढ़ने के लिए उनके पास समय के न होने का कारण बता रही हूं।

एक वर्ष में 365 दिन होते हैं। साल में 35 दिन दीपावली, होली, दशहरा, ईद और जन्म दिवस आदि के कारण छुट्टी होती है। अब 35 दिन छुट्टी होने के कारण बचे 330 दिन। उनमें 50 दिन गर्मियों और सर्दियों के कारण छुट्टी होती है। इस प्रकार 50 दिन और कम होने के कारण 280 दिन। साल में 52 दिन रविवार होने के कारण छुट्टी होती है। विद्यार्थी एक दिन में 8 घंटे सोता है जिस कारण कुल मिलाकर 120 दिन सोने में ही खर्च जो जाते हैं। अब विद्यार्थी के पास सिर्फ108 दिन बचते हैं। हर विद्यार्थी लगभग कपड़े पहनने, नहाने, खाना खाने और तैयार होने में ढाई घंटे लगाता है जिस कारण रोज ढाई घंटे मिलाने से साल में 38 दिन ऐसे निकल जाते हैं। अब बच जाते हैं 70 दिन। हर महीने कई फंक्शन, पार्टियां आदि होती हैं।

अंदाजे के साथ 35 दिन ऐसे फंक्शनों में निकल जाते हैं। अब बच जाते हैं सिर्फ 35 दिन। बाकी बचे 35 दिनों में से 15 दिन हर विद्यार्थी औसतन बीमारी या जरूरी काम होने के कारण छुट्टी लेता है। अब बचा आखिरी दिन। अब आप सोच रहे होंगे कि विद्यार्थी इंतजार करता है क्योंकि उस दिन रिजल्ट आना होता है। इस तरह विद्यार्थी पढ़ने के लिए समय न होने के कारण फेल हो जाते हैं।

हमे शिक्षा की कद्र करनी चाहिए। क्योंकि जो शिक्षा एक बार हाथ से निकल जाए तो वह कभी वापस नहीं आती। हमें शिक्षा के अनुसार अच्छे–अच्छे काम करने चाहिए। शिक्षा बहुत ताकतवर है। शिक्षा हमारे

जीवन में कई तरह के नए रंग लाती है, कभी खुशी या गम? अगर हम समय, पढ़ाई के साथ चलेंगे तो सफलता भी हमारे कदम चूम सकती है। शिक्षा का वरदान हर किसी को नहीं मिलता। यह फूलों और काँटों से भरी है। हमें इसका सही उपयोग करना चाहिए। हमें इसके लिए बच्चों में विश्वास जगाना होगा। इससे हमें दुनिया के बारे में पता चलता है। हम शिक्षा के कारण सूरज, चांद और सितारों को छू सकते हैं। हमें इसके कारण बहुत कुछ मिलता है। इसलिए हमें इसे अपनाना चाहिए।

शिक्षा से हमें बहुत सारा ज्ञान मिलता है। इसके लिए अब नैट, कंप्यूटर यह सब आ गया। इसको आगे बढ़ाने के लिए स्कूलों और कॉलजों में पूरा प्रबंध है। इसका एक–एक पल बहुत कीमती होता है। हर विद्यार्थी को अपना सारा समय मौज–मस्ती का साधन न मान कर उसे अपनी शिक्षा ग्रहण करने में लगाना चाहिए। ◈

गाँवों में शिक्षा के स्तर को सुधारना जरूरी

◈ **I f"V vkun** दसवीं
बाल भवन पब्लिक स्कूल
मयूर विहार, फेज–2, दिल्ली

आज की यह शिक्षा पद्धति प्राचीन शिक्षा पद्धति से भिन्न है। प्राचीन शिक्षा पद्धति धर्म-मनोविज्ञान पर बल देती थी किंतु अब विज्ञान संगणक, तकनीकि शिक्षा, भूविज्ञान, इतिहास आदि विषय पढ़ाए जाते हैं जो छात्रों के लिए विभिन्न क्षेत्रों में उपयोगी सिद्ध होते हैं।

f'ाक्षा मानव जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। शिक्षा मनुष्य में अच्छे विचारों का संचार करती है। उसका मार्ग प्रशस्त करती है। समाज में मानव को प्रतिष्ठित करने का कार्य करती है। उसके ज्ञानचक्षु खोलती है, मार्गदर्शन करती है, सुखशांति देती है। दुर्गुणों को दूर करती है, उन्नति के द्वार खोलती है, चरित्र निर्माण में सहायक है।

आज के वैज्ञानिक युग में शिक्षा वास्तविक अर्थों में मनुष्य को जीना सिखाती है, यह ज्ञान प्राप्ति का साधन है। शिक्षा का महत्व दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है। यह मानव के सर्वांगीण विकास का आधार है।

वर्तमान शिक्षा पद्धति 'सतत मूल्यांकन पद्धति' पर आधारित है। इससे पूर्व शिक्षा पद्धति में मुख्य रूप से परीक्षा के अंकों पर ही ध्यान केन्द्रित किया जाता था। उससे छात्र केवल परीक्षा के दिनों से पूर्व ही अध्ययनरत रहकर अच्छे अंक लाना ही अपनी जिम्मेदारी अथवा भूमिका समझते थे। इससे छात्रों का सर्वांगीण विकास होने की संभावना कम रहती थी, छात्र केवल रटन पद्धति की ओर अग्रसर हो रहे थे। वर्तमान शिक्षा पद्धति

'सतत मूल्याकंन पद्धति' पर आधारित है तथा छात्रों के सर्वांगीण विकास में सहायक है जिससे छात्रों का मूल्यांकन पूरे वर्ष लगातार ही किया जाता है। इस पद्धति में सभी छात्रों को अपनी प्रतिभा दिखाने का पूर्ण अवसर प्राप्त होता है वह चाहे भाषण, नाट्यमंचन, कविता गायन और चित्रकला आदि क्षेत्र हो।

छात्रों की परीक्षा भी समय–समय पर ली जाती है। इससे वे पाठों की तैयारी उनके पूर्ण होते ही कर लेते हैं। वे अपनी अभ्यास पुस्तिका में भी सुंदर कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किए जाते हैं ताकि उन्हें अच्छे अंक प्राप्त हो सकें। परिणामस्वरूप उनका ग्रेड भी अच्छा हो जाता है।

छात्रों को समय–समय पर रचनात्मक कार्य जैसे प्रोजेक्ट, पावर पॉइन्ट प्रेजेंटेशन आदि बनाने का अवसर प्राप्त होता है जो उन्हें व्यावसायिक बनाने में सहायक है। वर्तमान शिक्षा पद्धति के अंतर्गत समय–समय पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन होता है वे चाहे मण्डलीय हों, राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय। इनमें भाग लेने से न केवल छात्रों का मनोबल बढ़ता है बल्कि उनमें आत्मविश्वास भी बढ़ता है। यह उनके सर्वांगीण विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

आज की यह शिक्षा पद्धति प्राचीन शिक्षा पद्धति से भिन्न है। प्राचीन शिक्षा पद्धति धर्म–मनोविज्ञान पर बल देती थी किंतु अब विज्ञान संगणक, तकनीकि शिक्षा, भूविज्ञान, इतिहास आदि विषय पढ़ाए जाते हैं जो छात्रों के लिए विभिन्न क्षेत्रों में उपयोगी सिद्ध होते हैं। वर्तमान शिक्षा पद्धति जो जीवन के सर्वांगीण विकास में बहुत उपयोगी है उसे और अधिक उपयोगी बनाने के लिए निम्नलिखित कदम यदि उठाए जाएं तो लाभकारी होंगेः

- शिक्षा को न केवल किताबी ज्ञान बल्कि व्यावहारिक शास्त्र के रूप में प्रदान करना चाहिए।
- कंप्यूटर शिक्षा सभी विद्यालयों में अनिवार्य होनी चाहिए।

- शिक्षा के साथ व्यावसायिक ज्ञान भी दिया जाना चाहिए। छात्रों को नई खोज करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
- विद्यालयों में 'स्टूडेंट एक्सचेंज प्रोग्राम' अवश्य होने चाहिए। इससे हम विभिन्न प्रकार की संस्कृतियों भोजन वेशभूषा आदि के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।
- छात्रों के सर्वांगीण विकास में प्रत्येक विद्यालय में 'सेक्स एजूकेशन' अवश्य दी जानी चाहिए।
- रचनात्मक कार्यों को प्रोत्साहित करने वाली शिक्षा प्रणाली को प्रोत्साहित करना चाहिए।
- विद्यालयों में यदि 'स्मार्ट बोर्ड्स' द्वारा अध्ययन करवाया जाए तो अध्ययन रोचक हो जाएगा।
- ग्रामीण शिक्षा स्तर को सुधारना आवश्यक है। छात्रों के भावी जीवन निर्माण, विषय चयन आदि महत्वपूर्ण विषयों पर वर्कशॉप होनी चाहिए अथवा पाठ्यक्रम का हिस्सा होना चाहिए।

उपरोक्त सुझावों से शिक्षा पद्धति और अधिक उपयोगी सिद्ध होगी, इसी मत के साथ अपनी राय करती हूं समाप्त। ◈

भीमराव अम्बेडकर जी का यह कहना था कि व्यक्ति को केवल निज़ी स्वार्थ ही नहीं बल्कि ऊपर उठकर भी सोचना चाहिए। हम सभी लोगों में देश के प्रति कुछ करने की भूख होनी चाहिए जिससे देश का संपूर्ण रूप से विकास हो तथा देश विकसित हो। अतः जीवन के सर्वांगीण विकास में शिक्षा का महत्व जितना जरूरी है, उससे ज्यादा इसको और उपयोगी बनाने के लिए समुचित ज्ञान-विज्ञान व आधुनिकता के साथ व्यावहारिक बनाना आवश्यक है।

शिक्षा है विकास का मेरूदंड

◈ uohu uYlucXk] बारहवीं
जवाहर नवोदय विद्यालय
नवोदया नगर, मध्य अंडमान

tीवन केवल एक बार प्राप्त होता है, एक ही बार मिलता है और इस अनमोल जीवन का उचित प्रकार से प्रयोग करना अति आवश्यक है। यह हमारा प्रथम कर्तव्य भी है।

जीवन के हर क्षेत्र में संपूर्ण रूप से विकास होना भी अति आवश्यक है। इसमें कोई दो राय नहीं है। जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा के क्षेत्र में भी विकास होना बहुत जरूरी है क्योंकि हर क्षेत्र के विकास का आधार शिक्षा का विकास होना है।

यह तो सत्य है और इसीलिए सरकार भी हर क्षेत्र में विकास होने के लिए प्रथम कार्य, शिक्षा के क्षेत्र में विकास होना बहुत जरूरी मानती है। शिक्षा किसी भी क्षेत्र में विकास लाने का एकमात्र ऐसा मार्ग है जो सभी क्षेत्रों में विकास लाने में मददगार साबित होता है।

पूरा विश्व भली–भांति जानता है कि शिक्षा ही विकास का मेरूदंड है और यही देश को प्रगति–उन्नति में चार कदम और आगे ले जाने में

मददगार साबित होता है। आज पूरे विश्व भर में शिक्षा के महत्व को समझाया जा रहा है। यह हमारे देश की सरकार की उच्च कोटि, दूर–दृष्टि को प्रकट करता है। आज के वर्तमान समय में सरकार को अपनी ज्यादा से ज्यादा पूंजी शिक्षा के क्षेत्र में लगानी चाहिए ताकि बच्चों में ऐसी शिक्षा आए, जिससे देश की प्रगति, उन्नति का मार्ग स्थापित हो।

हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के अनुसार शिक्षा का अर्थ है ''मैं उच्च शिक्षा उसी को कहूंगा, जिससे व्यक्ति के अंदर (भीतर) विनम्रता, परोपकार, ईमानदारी जन्म ले।''

शिक्षा ही हमारे संकुचित विचारों की सुधारक होती है। शिक्षा में ही प्रगति, उन्नति तथा प्रत्येक क्षेत्र में विकास लाने की रोशनी सम्मिलित है। ''हर–एक बच्चा स्कूल पढ़कर साक्षार होना चाहिए, अगर घर में एक भी बच्चा पढ़–लिख लेता है तो वह पूरे घर को आगे बढ़ा देता है। अगर वही बच्चा एक गांव का होता है तो वह पूरे गांव को आगे बढ़ा देता है। अगर वही बच्चा एक देश का होता है तो वह पूरे देश को चार गुणा आगे बढ़ा देता है।''

हमारा देश शिक्षा दिवस (Education Day) 11 नवंबर को प्रत्येक वर्ष मनाता है। शिक्षा के क्षेत्र में अनेक विकास हो इसका एकमात्र चिह्न प्रदर्शित करता है। शिक्षा ही व्यक्ति को प्रबल, शक्तिशाली और ज्ञान आदि का मार्ग दर्शित करती है। प्रत्येक व्यक्ति का साक्षर होना तथा देश की उन्नति में अपना योगदान देना है। कहने का सारांश यह है कि सवा सौ करोड़ व्यक्तियों का साक्षर होना अति आवश्यक है। साथ ही साथ प्रत्येक व्यक्ति का शिक्षा के प्रति सकारात्मक सोच होनी भी अति आवश्यक है।

प्रत्येक व्यक्ति को यह विचार रखना चाहिए कि वह देश के प्रति प्रेमभाव, मित्रता, बलिदान आदि का भाव रखे। भारत की जरूरत गरीबी को कम करना है और यह तभी संभव है जब प्रत्येक व्यक्ति पढ़ा–लिखा

और साक्षर हो। मुख्य रूप से कहें तो बच्चे के होश संभालते ही बच्चों में यह गुण अवश्य डाल दें कि हमें देश के प्रति महान कार्य करना है और देश को समृद्ध, प्रगतिशील, उन्नतिशील बनाना है। इन सभी का आधार शिक्षा का ही माध्यम है। अनेक महान पुरुषों ने इन सभी चीजों का महान अनुभव किया है तथा शिक्षा के विकास को प्राथमिक विकास माना है। इनमें शामिल थे मौलाना अबुल कलाम आज़ाद व महात्मा गांधी जी आदि।

वर्तमान काल में शिक्षा का महत्व इतना बढ़ गया है कि गांव–गांव में शिक्षा का प्रचार–प्रसार बहुत तेजी से हो रहा है। आज देश में कई तरह की योजनाएं शिक्षा से संबंधित हैं, जिनका प्रमुख लक्ष्य है प्रत्येक व्यक्ति को साक्षर करना तथा साक्षर होना।

शिक्षा को ग्रहण करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति की प्रबल इच्छा होनी चाहिए। जैसा कि मैंने पहले ही स्पष्ट रूप से बताया कि शिक्षा ही ऐसा एक माध्यम (पथ, मार्ग) है जिसमें हर क्षेत्र में बदलाव (विकास) देखने को मिलता है। यह तो मेरे अनुभव में लिखे गए सत्य कथन तथा एकमात्र सत्य दर्पण है। देश का विकास, शिक्षा के क्षेत्र में विकास होना है।

यह हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री जी (जो स्वयं को देश का प्रधान सेवक मानते हैं) के उच्च कोटि के ज्ञान, प्रचार को प्रदर्शित करता है और जिनका जीवन भी अनेक शिक्षाओं से भरा हुआ है। देश का सर्वांगीण विकास, गांव के विकास से आरंभ होकर शहर के विकास तक जाता है। गांव का विकास तभी संभव है जब गांव में शिक्षा का विकास हो तथा लोगों में शिक्षा के प्रति जागरूकता आए तथा लोग साक्षर हों।

प्रथम कार्य हमारा यह होना चाहिए कि गांव का विकास हो। यह भाग हमारे देश की गाड़ी का पहिया है। अगर एक पहिया शहर का विकास, दूसरा पहिया गांव का विकास और इन पहियों से बनी गाड़ी देश का विकास, ये सभी एक–दूसरे से जुड़े हुए हैं।

सिर्फ एक पहिया चलेगा तो गाड़ी को लक्ष्य तक पहुंचने के लिए ज्यादा समय लगेगा। इसी की तुलना में अगर दोनों पहिये बराबर चाल से तेज चलेंगे तो हमारे देश नामक विकास की गाड़ी की रफ्तार भी तेज़ हो जाएगी। देश के विकास के लिए दोनों का विकास होना बहुत जरुरी हैं।

किसी ने कहा है, ''अनुभव सबसे बढ़ा विश्वविद्यालय है। मेरे अनुसार, लोगों में शिष्टाचार वाले गुण, शिक्षा के माध्यम से भी आना अनिवार्य हैं। शिष्टाचार वाली शिक्षा प्राप्त कर व्यक्ति अपने आप को एक सही दिशा की ओर ले जाता है तथा देश के सर्वांगीण विकास के लिए एक अहम् तथा मुख्य भूमिका अदा करता है।

भीमराव अम्बेडकर जी का यह कहना था कि व्यक्ति को केवल निज़ी स्वार्थ ही नहीं बल्कि उससे ऊपर उठकर भी सोचना चाहिए। हम सभी लोगों में देश के प्रति कुछ करने की भूख होनी चाहिए जिससे देश का संपूर्ण रूप से विकास हो तथा देश विकसित हो। अतः जीवन के सर्वांगीण विकास में शिक्षा का महत्व जितना जरूरी है उससे ज्यादा इसकी ज्ञान–विज्ञान व आधुनिकता के साथ व्यावहारिक बनाना आवश्यक है। ◈

शिक्षा का रोजगार उन्मुख होना जरूरी

वर्तमान शिक्षा-प्रणाली अपने दायित्वों के निर्वहन में सफल नहीं हो पा रही, अतः इसे बदलना नितांत जरूरी है। सबसे पहली आवश्यकता शिक्षा को पढ़ने वालों का चयन ऐसा होना चाहिए कि जो हमें जीवन-व्यवहारों में निपुण बना सके न कि केवल साक्षर। उसका रोजगारोन्मुख होना भी जरूरी है।

◈ vf'kdk Hkkjrh सातवीं
सरस्वती विद्यालय
अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली

f'kक्षा का वास्तविक अर्थ होता है कुछ सीखकर अपने को पूर्ण बनाना। इसी दृष्टि से शिक्षा को मानव–जीवन की आंख भी कहा जाता है। वह आंख कि जो मनुष्य को जीवन के प्रति सही दृष्टि प्रदान कर उसे इस योग्य बना दे कि वह भला–बुरा सोचकर समस्त प्रगतिशील कार्य कर सके। उचित मानवीय जीवन जी सके। उसमें सूझबूझ का निवास हो, कार्य क्षमताएं बढ़ें और सोई शक्तियों को जगा कर उसे अपने साथ–साथ राष्ट्र के जीवन को भी प्रगति पथ ले जाने में समर्थ हो सके।

पर क्या आज का विद्यार्थी इस प्रकार की शिक्षा पा रहा है? शिक्षा प्रणाली का जो रूप जारी है, वह यह सब कर पाने में समर्थ है? उत्तर निश्चय ही 'नहीं' है। वह इसलिए कि आज की शिक्षा प्रणाली व्यक्ति को साक्षर बनाने तक का ही कार्य करती है, सुशिक्षित, सुयोग्य और सक्षम बनाने का नहीं। यही कारण है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के इतने वर्षों बाद भी, कहने को शिक्षा का बहुत अधिक विस्तार हो जाने पर भी इस देश का व्यक्ति आम तौर पर साक्षर होने से अधिक कुछ नहीं कर सकता।

वह अपने आपको सुशिक्षित तो क्या सामान्य स्तर का शिक्षित होने का दावा भी नहीं कर सकता। इसका कारण है, आज भी उसी घिसी–पिटी शिक्षा प्रणाली का जारी रहना कि जो इस देश को कुंठित करने, अपना साम्राज्य चलाने के लिए कुछ मुंशी या क्लर्क पैदा करने के लिए लार्ड मैकाले ने लागू की थी।

स्वतत्रंता प्राप्ति की वास्तविकता के नाम पर यह देश मात्र साक्षरता के अंधेरे में भटक रहा है, वह भी विदेशी माध्यम से, स्वदेशीपन के सर्वथा अभाव में। हमारे विचार में वर्तमान शिक्षा प्रणाली शिक्षित होने का दंभ होने वालो लोगों का उत्पादन करने वाली निर्जीव मशीन मात्र बनकर रह गयी है। तभी तो वह उत्पादन के नाम पर प्रतिवर्ष लाखों दिशाहीन नवयुवकों को उगलकर अपने कर्तव्यों की इतिश्री समझ लेती है।

इस शिक्षा प्रणाली का ही तो दोष है कि बी.ए., एम.ए. करने के बाद भी सक्रियता या जीवन व्यवहारों के नाम पर व्यक्ति अपने को कोरा बल्कि थका–हारा और पराजित तक अनुभव करने लगता है। यह प्रणाली अपने मूल रूप में कई–कई विषयों की सामान्य जानकारी देकर शिक्षित होने का बोझ तो हम पर लाद देती है पर वास्तविक योग्यता और व्यावहारिकता का कोना तक भी नहीं छूने देती। परिणामस्वरूप व्यक्ति व्यक्तित्व से हीन होकर अपने लिए एक अबूझ पहेली बनकर रह जाता है।

ऐसे व्यक्ति से देश–जाति के लिए कुछ करने की आशा करना व्यर्थ है। यह शिक्षा और इसके साथ जुड़ी परीक्षा प्रणाली शिक्षार्थी की वास्तविक योग्यताओं का जागरण तो क्या, अनुभव तक नहीं होने देती। वास्तव में यह योग्य–अयोग्य का कोई मानदण्ड भी तो अभी तक प्रस्तुत नहीं कर पायी। इसके द्वारा अक्सर योग्य तो पिछड़ कर भटक जाते हैं और अयोग्य लाभ उठा लेते हैं।

कई–कई विषयों का बोझ लदा होने के कारण व्यक्ति पारंगत किसी में भी नहीं हो पाता, विभिन्न विषयों को मात्र गिना ही सकता है। फिर यह शिक्षा प्रणाली बोझिल और महंगी भी इतनी अधिक हो गयी।

दिन–प्रतिदिन और भी होती जा रही है कि प्रत्येक परिवार और व्यक्ति उसे सुधार नहीं सकता। आत्मा–बोध, देश, राष्ट्र–बोध एवं मानवीयता का बोध तक दे पाने में यह शिक्षा सफल नहीं कही जा सकती। इन्हीं सब कारणों से समय–समय पर इसे बदल डालने का स्वर उठता रहता है। विचार करने के लिए आयोग भी गठित होते रहते हैं, फिर भी पता नहीं कौन–सी विवशता है कि हम लोग उसी घिसे–पिटे, अपने देश की इच्छा–आकांक्षाओं और आवश्यकताओं से सर्वथा विपरीत शिक्षा प्रणाली के जुए को ही कंधों पर लादे कोल्हू के बैल बने हुए हैं।

इस मानसिकता को किसी भी तरह से स्वस्थ एवं सुखद नहीं कहा जा सकता। यह सुशिक्षा की जड़ें काट रही है। शिक्षा का अर्थ होता है योग्य नागरिक उत्पन्न करना, जीवन को जीने योग्य बनाना, अपने कर्तव्यों के प्रति सजग करना। क्योंकि वर्तमान शिक्षा प्रणाली अपने दायित्यों के निर्वहन में सफल नहीं हो पा रही, अतः इसे बदलना नितांत जरूरी है।

सबसे पहली आवश्यकता शिक्षा को पढ़ने वालों का चयन ऐसा होना चाहिए कि जो हमें जीवन–व्यवहारों में निपुण बना सके, न कि केवल साक्षर। उसका रोजगारोन्मुख होना भी जरूरी है। शिक्षा को कम खर्चीली भी बनाया जाना चाहिए ताकि इच्छुक प्रत्येक व्यक्ति और परिवार उसके बोझ को वहन कर सके। जैसा कि आजकल कुछ विषय केवल परीक्षा पास करने के लिए ही पढ़ाये जाते हैं चाहे वे जीवन व्यवहार के लिए उपयोगी और छात्र की रुचि–इच्छा के अनुकूल हों या न हों, ऐसे विषयों का पठन–पाठन बन्द होना चाहिए।

ललित साहित्य जैसे विषय यदि ऐच्छिक बना दिए जाएं, केवल सुरूचि–सम्पन्न ही उन्हें पढ़ें तो बहुत अच्छा होगा। पढ़ाने का ढंग भी केवल पुस्तकीय न होकर व्यावहारिक होना चाहिए। इसी प्रकार बन्द कमरों की बजाय खुले क्षेत्रों में शिक्षा दी जानी चाहिए तभी शिक्षा अपने वास्तविक लक्ष्यों में सफल हो सकती है। निरर्थक माल उत्पन्न करने वाली मशीन के समान उसका चालू रहना उचित नहीं है।

अंत में हम यही कहना चाहते हैं कि यदि वास्तव में हम देश और जाति का भला चाहते हैं तो यथा संभव इस प्रकार की शिक्षा प्रणाली को बदल कर इसके स्थान पर देश–काल की जरूरत के अनुरूप किसी नयी प्रणाली को जारी करना आवश्यक है, नहीं तो हम धीरे–धीरे अपनी अस्मिता को खोकर कहीं के भी नहीं रह जायेंगे। आज की भटकाव की स्थिति हमारी अस्मिता को ले जाकर ऐसे गर्त में डुबो देगी जहां से निकल पाना अत्यंत कठिन हो जाएगा। ऐसी स्थिति में तत्काल सजग हो जाना बहुत जरूरी है। ◈

प्रतिस्पर्धा वाली डिग्रियां हों खत्म

> जिस निबंध स्पर्धा में मैं भागीदारी कर रही हूं, मेरा स्पष्ट मत है, यह स्पर्धा नहीं वैचारिक अनुष्ठान है। इस तरह के अनुष्ठानों की अनवरत श्रृंखला अणुव्रत न्यास को संचालित करते रहना चाहिए। क्योंकि जिस शिक्षा पद्धति में विचारों की धार को अधिक धारदार बनाया जाता है, वही पद्धति निराधार को आधार देती है।

◈ **okxh'kk 'kek** बारहवीं
सिका स्कूल
स्कीम–78 इंदौर, मध्यप्रदेश

lर्वांगीण विकास महज दो शब्द नहीं हैं। सर्वांगीण विकास मानव के सटीक, सार्थक, सोद्देश्य, स्वस्थ और सुंदर जीवन जीने की पद्धति है। ऐसा जीवन केवल तभी जिया जा सकता है जब वर्तमान शिक्षा पद्धति को पूरी तरह डिग्रियों से अलग करके इसे सद्गुणों, सद्विचारों और सद्रोज़गार से जोड़ा जाए। आखिरकार शिक्षा का मकसद एक शांतिपूर्ण, अहिंसक, वैज्ञानिक और संवेदनशील समाज का निर्माण ही है। जो डिग्रियों आपसी प्रतिस्पर्धा को जन्म देती हैं, वह समन्वय भाव के लिए घातक हैं। अतः शिक्षा को हर तरह की वर्जनाओं से मुक्त करना होगा। प्राचीन भारतीय दर्शन बिल्कुल ठीक कहता है– ''सा विद्या या विमुक्तये'' यानि Education that liberator.

or'eku f'k{kk i)fr dh i'BHkfe % भारतवर्ष में प्रचलित आज की शिक्षा प्रणाली की बुनियाद एक षड्यंत्र का परिणाम है। सन् 1835 में ब्रिटेन की संसद में एक अंग्रेज, (लॉर्ड मैकाले हमारे लिए कभी नहीं)

मैकॉले की मंशानुरूप फिरंगियों ने भारत देश में कॉन्वेंट पद्धति का

प्रचार–प्रसार किया ताकि भारत में ऐसे भारतीय पैदा हों जो जन्म से तो भारतीय हों किंतु कर्म से अंग्रेज़ीयत के गुलाम। निष्पक्षता का चश्मा लगाकर देखा जाए तो आज स्वतंत्र भारत में परतंत्र शिक्षाधारियों की फौज खड़ी हो गई है। ये हमारी प्राचीनतम, प्रथम वंदनीय संस्कृति का उपहास करती हैं और मांसभक्षणीय, मदिरा रमणीय पाश्चात्य कुसंस्कृति के तलवे चाटती है। अधकचरी पीढ़ी वर्णसंकर हो रही है–न पूरी तरह अंगेज़ न भारतीय।

or'eku f'k{kk i)fr dh dfe;k % वर्तमान पद्धति की सबसे बड़ी कमी यह है कि विद्यार्थी अक्षर ज्ञान तो प्राप्त कर रहे हैं मगर अक्षत ज्ञान से पूर्णतः वंचित हैं। यह पद्धति बी.ए., एम.ए., बी.एस.सी., बी.ई., एम.ई., एम.बी.बी.एस., बी.कॉम., एम.कॉम, तो बना रही है मगर इंसानियत के सबक के अभाव में ये डिग्रीधारी ही व्यापम जैसे व्यापक घोटालों का कारण बन रहें हैं। एक अंधी आपाधापी है रुपये बटोरने की।

शिक्षा कहती है कि उसे धन कमाना है वो भी तब तक जब तक उसका निधन न हो जाए। समाज, देश, परिवार से कोई सरोकार नहीं। एकल जीवन। सहनशीलता का ज़बरदस्त अभाव। स्वयं की अस्मिता से नफरत। संबंधों की तिजारत। अपने आप को कथित स्मार्ट दिखाने के लिए स्मार्ट फोन से होती अभद्र टिप्पणियां ये साबित करने के लिए पर्याप्त हैं कि हमारे यहां की कक्षाओं में कैसे भविष्य की तामीन्न हो रही है?

mi;kxh cuku d mik;k % सर्वप्रथम केजी से लेकर पी.जी. तक नैतिक शिक्षा अनिवार्य कर दी जानी चाहिए। हर छात्र के लिए एन.सी.सी. का कैडेट होना जरूरी हो। प्रत्येक शिक्षक और विद्यार्थी को प्राच्य देव वाणी संस्कृत तथा हिन्दी का प्राथमिक ज्ञान होना चाहिए। प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की तनख्वाह विश्वविद्यालयों के प्राध्यापकों से कम नहीं होनी चाहिए। विद्यालयों के नामकरण जाति, मज़हब पर आधारित नहीं होने चाहिए। नामकरण में राष्ट्रीयता, उदारता और वसुधैव कुटुम्बकम् के भाव होने चाहिए। जैसे भारत विश्वविद्यालय, ऋषभदेव महाविद्यालय आदि।

प्रतिस्पर्धा वाली डिग्रियों को समाप्त करना चाहिए। ये परस्पर ईर्ष्या, द्वेष, षड्यंत्रों को बढ़ावा देती है। इसकी जगह सद्गुण और विषय की गुणवत्ता को समझने वाले विद्यार्थियों का चयन उनकी व्यावहारिक कुशलता के आधार पर होना चाहिए। इसका आकलन करने के लिए विशेष विशेषज्ञों की टीम निष्पक्षता के मापदंड से मनोनीत होनी चाहिए। प्राथमिक स्तर से विद्यार्थी की अभिरूचि को समझने के लिए अत्यंत गंभीर और ज़िम्मेदार शिक्षकों की नियुक्ति होनी चाहिए। फिर विद्यार्थी की अभिरूचि के अनुरूप ही उन्हें चित्रकार, संगीतकार, खिलाड़ी, डॉक्टर, वकील, इंजीनियर, नेतृत्वकर्ता, लेखक, कवि, धर्मवेत्ता, सैनिक, प्रशासनिक सेवक आदि बनाने का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

विद्यार्थी की ईमानदारी के अनवरत टेस्ट होते रहने चाहिए। इसके लिए किसी परीक्षा की नहीं बल्कि छात्रों के आचरणों पर बल देने की आवश्यकता है। विद्यार्थियों, शिक्षकों को गणवेष, शालीन होना चाहिए। हर रोज कक्षा की शुरुआत किसी महापुरुष के प्रेरक प्रसंग से होनी चाहिए।

D;k dj v.kqor U;kl % जिस निबंध स्पर्धा में मैं भागीदारी कर रही हूं, मेरा स्पष्ट मत है, यह स्पर्धा नहीं वैचारिक अनुष्ठान है। इस तरह के अनुष्ठानों की अनवरत श्रंखला अणुव्रत न्यास को संचालित करते रहना चाहिए। क्योंकि जिस शिक्षा पद्धति में विचारों की धार को अधिक धारदार बनाया जाता है, वही पद्धति निराधार को आधार देती है।

अणुव्रत न्यास से जुड़े सेवाधारियों ने व्यापक पैमाने पर अधिकतम ऊर्जा के साथ ऐसे स्कूलों का संचालन करना चाहिए जहां संस्कारों, सद्विचारों के साथ सदरोज़गार की भी गारंटी हो। इसलिए अणुव्रत न्यास ने ऐसे अनेकानेक प्रकल्प तैयार करते रहना चाहिए जहां विद्यार्थियों को अच्छे डॉक्टर, अच्छे इंजीनियर, अच्छे शिक्षकों के रूप में दायित्व दिया जा सके जो भावी पीढ़ी के लिए प्रकाश–स्तंभ का काम करें।

सारे मोर्चे एक साथ नहीं खोले जाते, इसलिए शिक्षा पद्धति की एक–एक

कमी को बारी–बारी से दूर करना चाहिए। यह बड़ा काम है। इसका परिणाम भी दशकों के बाद आएगा। त्वरित परिणामों की व्यग्रता कभी–कभी काम को बिगाड़ देती है।

धीरे–धीरे रे मना धीरे सब कुछ होय।
माली सीचें सौ घड़ा, रितु आये फल होय।।

चूंकि शिक्षा दूरंदेशी अंनतकाल के लिए होती है, इसलिए शिक्षकों यानि विद्या सैनिकों को शिक्षा की विसंगतियों के विरुद्ध जनजागरण का बिगुल फूंकना होगा।

स्वामी विवेकानंद के शब्दों में ''हर तरह की शिक्षा का एक ही उद्देश्य है और वह है मनुष्य का चरित्र निर्माण। यही उसके सर्वांगीण अर्थात् आर्थिक, धार्मिक, नैतिक और सामाजिक विकास का बीजमूल है। शिक्षा विश्व वसुंधरा को उत्कृष्टतम बनाने का सोपान है। ◈

अणुव्रत से शिक्षा पद्धति में सुधार संभव

◈ eLdku flg आठवीं
कमल पब्लिक सी.सै. स्कूल
डी. ब्लॉक, विकासपुरी, दिल्ली

शिक्षा मानव के लिए सबसे अमूल्य धन है जिससे उसका सर्वांगीण विकास होता है, इसलिए शिक्षा पद्धति दोष रहित होती है। जहां तक वर्तमान शिक्षा पद्धति का प्रश्न है, वह चिंताजनक है, इसलिए वर्तमान शिक्षा पद्धति को उपयोगी बनाना आवश्यक है। सबसे पहले वर्तमान शिक्षा पद्धति के दोषों को दूर करना होगा। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि वर्तमान शिक्षा पदधति को केवल अणुव्रत ही दोष रहित बना सकता है।

f'k{kk विहीन व्यक्ति पशु के समान होता है। शिक्षा मनुष्य को देवत्व की ओर ले जाती है। मनुष्य के भीतर विकास की जो संभावनाएं रहती है उन्हें विकसित करना ही शिक्षा का मुख्य कार्य है। शिक्षा के अभाव में मनुष्य न अपने लिए और न ही समाज के लिए उपयोगी हो पाता है। मानव सभ्यता का विकास, शिक्षा का विकास भी है।

प्राचीन काल में शिक्षा में गुरु तथा ग्रंथ का अधिक महत्व रहता था। गुरुजनों ने जो सत्य उपलब्ध किया उसे वह शिष्यों तक पहुंचाना अपना कर्तव्य समझते थे। पुस्तकीय ज्ञान को विद्यार्थियों के मस्तिष्क में ठूस देना ही शिक्षा का मुख्य लक्ष्य स्वीकार नहीं किया जा सकता। आधुनिक शिक्षा पद्धति व्यक्ति केन्द्रित है। शिक्षा की आधुनिक पद्ध ातियां मनोविज्ञान पर आधारित है।

शिक्षा के द्वारा मनुष्य अपने परिवेश को पहचानने और समझने में सक्षम होता है। विश्व में ज्ञान का जो विशाल भंडार है उसे शिक्षा के माध्यम से ही हम प्राप्त कर सकते हैं। सृष्टि के रहस्यों को खोलने की कुंजी

शिक्षा ही है। अशिक्षित व्यक्ति ही रुढ़ियों, अंधविश्वासों एवं कुरीतियों का शिकार हो सकता है। साहित्य और कलाओं से हमारी संवेदशीलता तीव्र होती है। शिक्षा हमारे दृष्टिकोण को उदार बनाती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि शिक्षा का उद्देश्य मानव का सर्वांगीण विकास करना है।

प्राचीन भारत के इतिहास को हम यदि शिक्षा की व्यवस्था की दृष्टि से पढ़ें तो ऐसा लगता है कि उस जमाने में भी शिक्षा पर काफी जोर दिया जाता था। प्राचीन भारत के वैज्ञानिकों ने इतनी बड़ी–बड़ी खोजें की थीं जो यूरोप आदि में हजारों साल बाद भी नहीं हो सकीं। खगोल शास्त्र, गणित, रसायन विज्ञान एवं चिकित्सा शास्त्र में भारत का बहुत नाम था। प्राचीन भारत में तक्षशिला, विक्रमशिला नालंदा, काशी और उज्जयिनों में इस प्रकार के विश्वविद्यालय थे, जहां भारत के ही नहीं अपितु चीन, जापान, दक्षिण–पूर्व एशिया एवं मध्य एशिया के लोग पढ़ने आया करते थे।

भारत की शिक्षण संस्थाएं मंदिरों के आसपास होती थीं। कुछ शिक्षा केन्द्र गुरुकुल अथवा ऋषिकुल के रूप में थे, जहां रहकर विद्यार्थी को पढ़ना होता था। ऐसे विद्या केंद्रों में जहां बालकों को आवश्यक परम्परागत शिक्षा दी जाती थी, वहीं उनमें एक आदर्श नागरिक, उपयोगी, सामाजिक तथा कलाविद् बनने के संस्कार भी डाले जाते थे ताकि विद्यार्थी जीवन के उपरांत वे लोग देश के लिए एक उपयोगी घटक सिद्ध हो सकें और अपने कार्यों द्वारा देश, समाज एवं जाति का कल्याण कर सकें।

कालांतर में हिन्दू शासन तंत्र बिखरने लगा। विदेशी हमलावर, जो वीर तो थे किंतु क्रूर और अशिक्षित होने के कारण शिक्षा–केन्द्रों, ग्रंथकारों का महत्व नहीं समझते थे। उन्होंने ऐसे मूल्यवान केन्द्रों को भस्म कर दिया और सहस्त्रों वर्षों के उपयोगी ज्ञान के आगारों को उन अदूरदर्शियों ने मिट्टी में मिला दिया। परिणाम यह हुआ कि शताब्दियों तक भारत में शिक्षा व्यवस्था काफी पिछड़ी रही और कुछ स्थानों और कुछ विभिन्न वर्ग के लोगों में वह सिमट गई।

भारत में शिक्षा का वर्तमान परिवेश आवश्यकताओं के अनुकूल नहीं है क्योंकि जिन बातों का उल्लेख किया गया है उनकी भूमिका ऐसी रही है जिसकी वजह से हमारा देश शिक्षा को जन–जन तक पहुंचाने में अक्षम रहा है। शिक्षा ग्रहण करने के उपरांत भी कई लोग किसी खास कार्य को करने में निपुण नहीं है। इसका कारण शिक्षा व्यवस्था है क्योंकि केवल पाठ्यक्रम दोहराने से कोई ज्ञानी नहीं बन सकता, केवल पढ़ा–लिखा माना जा सकता है।

ज्ञान की वृद्धि तथा किसी कार्य में निपुण होना ही शिक्षा का असली लक्ष्य है। जो शिक्षा की स्थिति भारत में आजकल चल रही है वह कदापि संतोषजनक नहीं मानी जा सकती है। भारत की शिक्षा का वर्तमान स्वरूप निःसंदेह चिंताजनक है तथा इस वर्तमान शिक्षा प्रणाली में आमूल–चूल परिवर्तन करने की जरूरत है। ऐसा करने से ही देश और समाज तथा मानव का अपना हित होना संभव बन सकेगा। जीवन के सर्वांगीण विकास में वर्तमान शिक्षा पद्धति को उपयोगी बनाना अनिवार्य हो गया है। यह तभी संभव है, यदि हम शिक्षा के स्तर को बढ़ाएं। शिक्षा का विकास ही मनुष्य को विकास के मार्ग पर ले जा सकता है।

शिक्षा मानव के लिए सबसे अमूल्य धन है जिससे उसका सर्वांगीण विकास होता है, इसलिए शिक्षा पद्धति दोष रहित होनी चाहिए। जहां तक वर्तमान शिक्षा पद्धति का प्रश्न है, वह चिंताजनक है, इसलिए वर्तमान शिक्षा पद्धति को उपयोगी बनाना आवश्यक है। सबसे पहले वर्तमान शिक्षा पद्धति के दोषों को दूर करना होगा। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि वर्तमान शिक्षा पदधति को केवल अणुव्रत ही दोषरहित बना सकता है। अणुव्रत के आदर्शों और नियमों का पालन करने से ही हमारे सपने साकार हो सकते हैं तथा हम शिक्षित होकर अपने जीवन में विश्वास ला सकते हैं। यही कारण है कि आचार्य तुलसी जी के अणुव्रत आंदोलन का शिक्षा के क्षेत्र तथा मनुष्य के विकास में काफी योगदान रहा है। ◈

नैतिक शिक्षा दी जानी चाहिए

◈ l/kk dekjh छठी
असम राइफल्स हाई स्कूल
कोहिमा, नागालैंड

जीवन के सर्वांगीण विकास में शिक्षा पद्धति को अधिक उपयोगी बनाने में नैतिक शिक्षा का बड़ा योगदान है। समाज के चतुर्मुखी विकास के लिए नैतिक शिक्षा काफी कारगर साबित होगी। नैतिक शिक्षा के द्वारा ही हम समाज में शिष्टाचार के बारे में जानते हैं। शिष्टाचार के बिना समाज के विकास की कल्पना ही नहीं की जा सकती।

eनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में पलता, बढ़ता और विकास करता है। उसे किसी न किसी रूप में समाज पर आश्रित रहना पड़ता है। जहां तक जीवन के सर्वांगीण विकास की बात है, शिक्षा पद्धति को और अधिक उपयोगी बनाने के बहुत तरीके हैं।

n';J0; f'k{kk : दृश्य श्रव्य शिक्षा के माध्यम से शिक्षा को जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए उपयोगी बना सकते हैं। जिसके बारे में हम पढ़ते हैं यदि हम उसे आंखों से देख लें और कानों से सुन लें तो शायद शिक्षा जीवन के सर्वांगीण विकास में उपयोगी साबित होगी।

l)kfrd vkj 0;kogkfjd f'k{kk % इस शिक्षा को जीवन के सर्वांगीण विकास में प्रयोग कर के उपयोगी बनाया जा सकता है। जिस शिक्षा को हम पुस्तकों में सैद्धांतिक रूप में पढ़ते हैं यदि हम व्यावहारिक रूप में उसे प्रयोग करें तो मैं समझती हूं कि जीवन के सर्वांगीण विकास में शिक्षा काफी उपयोगी होगी।

ufrd f'k{kk dk fodkl djd % जीवन के सर्वांगीण विकास में

शिक्षा पद्धति को अधिक उपयोगी बनाने में नैतिक शिक्षा का बड़ा योगदान है। समाज के चतुर्मुखी विकास के लिए नैतिक शिक्षा काफी कारगर साबित होगी। नैतिक शिक्षा के द्वारा ही हम समाज में शिष्टाचार के बारे में जानते हैं। शिष्टाचार के बिना समाज के विकास की कल्पना ही नहीं की जा सकती।

oSf'od f'k{kk % संपूर्ण विश्व एक ग्लोब की तरह है। इंटरनेट के माध्यम से पूरी दुनिया की शिक्षा एक हो गई है। लोगों का सर्वांगीण विकास हुआ है। कंप्यूटर जगत ने तो शिक्षा की रूपरेखा ही बदल दी है। वर्तमान युग को कंम्यूटर का युग कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। जीवन के सर्वांगीण विकास में शिक्षा पद्धति को और अधिक उपयोगी इन बिन्दुओं पर ध्यान देकर बना सकते हैं।

i=&if=dkvk dk ek/;e % विभिन्न पत्र–पत्रिका एवं समाचार पत्रों के माध्यम से शिक्षा का सर्वांगीण विकास संभव है। पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से एक–दूसरे को जाना और समझना नितांत आवश्यक हो गया है। शिक्षा के सर्वांगीण विकास के बारे में जीवन जानकारी हमें पत्र–पत्रिका से मिलती है। प्राचीन माध्यम एवं आधुनिक शिक्षा के बारे में जानकारी हमें पत्रिका ही देती है। शिक्षा के प्राचीन माध्यम एवं आधुनिक यात्रा किस रूप में विकसित की है, इसकी जानकारी पुस्तक एवं पत्र में मिलता हैं।

वर्तमान युग में शिक्षण के लिए ज्ञान विद्या, एजूकेशन, आदि अनेक पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग होता है। शिक्षा या अचेतन रूप से मनुष्य की रूचियों समताओं, योग्यताओं और सामाजिक मूल्यों को ध्यान में रखते हुए आवश्यकता के अनुसार स्वतंत्रता देकर उसका सर्वांगीण विकास करती है। शिक्षा हमारे सोचने, रहने और जीने के ढंग को बदलने में सहायता करती है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली हमें धनी बना सकती है परंतु उसमें नीति और संस्कारों का नितांत अभाव मिलता है। हमारी प्राचीन शिक्षा पद्धति हमें प्रकृति के समीप ले जाती थी परंतु आधुनिक शिक्षा आजीविका कमाने का साधन मात्र बनकर रह गई है। ◈

आधुनिक ज्ञान से जोड़ना होगा

◈ **b'kk feUky** नौवीं
डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल
वंसत कुंज, दिल्ली

इस संसार को शिक्षा से उज्ज्वल बनाया जा सकता है, अशिक्षा से नहीं। कुछ अशिक्षित लोग गंदे कामों में उतरते हैं, अच्छे कामों में नहीं। शिक्षा प्राप्त करना बहुत आवश्यक है। शिक्षा के माध्यम से हम अच्छे काम कर जाते हैं। हम बस यही कहना चाहेंगे कि अच्छे व्यक्ति बनो, बुरे व्यक्ति नहीं। शिक्षा को प्राप्त करो। लोग शिक्षा प्राप्त करने के योग्य हैं पर प्राप्त नहीं कर सकते क्योंकि उनके पास पैसा नहीं है।

f'क्षा को लेकर हम अपने विचार व्यक्त करना चाहते हैं। शिक्षा का अर्थ है जीवन की आवश्यकता का पूर्ण ज्ञान। हमें शिक्षा की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि हम इसकी सहायता से वह हासिल कर सकते हैं जिसकी हमें आवश्यकता है। शिक्षा हमें एक अच्छा इन्सान बनाती है। अच्छे इन्सान बनने की राह दिखाती है। अगर शिक्षा ना हो तो हम एक अच्छा इंसान नहीं बन सकते।

शिक्षा अभी जितनी उपयोगी है अगर हम उसे और ज्यादा उपयोगी बनाना चाहते हैं तो हमें शिक्षा का उपयोग सही जगह करना होगा। शिक्षा का उपयोग सही तरीके से करेंगे तो शिक्षा का फायदा होगा और देश की प्रगति होगी। देश की प्रगति की राह शिक्षा ही दिखा सकती है। अगर हम अपने जीवन का विकास करना चाहते हैं तो हमें पढ़–लिखकर एक अच्छा इंसान बनना होगा जो शिक्षा से संभव है।

हमें देश की प्रगति के बारे में सोचना चाहिए। ईश्वर ने हमें इतनी

क्षमता दी है कि हम पढ़–लिखकर देश की प्रगति कर सकें। हमें बस शिक्षा की ओर ध्यान देना है।

शिक्षा हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। हर एक बच्चे को शिक्षा मिलनी चाहिए। शिक्षा को और उपयोगी बनाने के लिए हमें नई सुविधाएं पैदा करनी चाहिए। नई सुविधाओं से शिक्षा प्राप्त करना आसान होता जा रहा है। अगर हमने शिक्षा प्राप्त कर ली तो हम देश में हो रहे भ्रष्टाचार को भी रोक सकते हैं क्योंकि यह भ्रष्टाचार तभी बढ़ता है जब लोग शिक्षित नहीं होते। अगर हर एक व्यक्ति ने शिक्षा प्राप्त कर ली तो कोई भ्रष्टाचार करने के बारे में सोचेगा भी नहीं। भ्रष्टाचार का मुख्य कारण हम हैं जो उन भ्रष्टाचारियों के खिलाफ आवाज नहीं उठाते लेकिन शिक्षित व्यक्ति भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाएगा। जो अध्यापक एव अध्यापिका हमें पढ़ाते हैं वे हमारे लिए काम करते हैं। वे यही चाहते हैं कि हम अच्छे व्यक्ति बनें।

शिक्षा से अच्छे व्यक्तित्व का विकास होता है। शिक्षा से भ्रष्टाचार बढ़ेगा ऐसी सोच गलत है। शिक्षा से भ्रष्टाचार घटेगा। जितने शिक्षित लोग राजनीति में आएंगे, उतने भ्रष्ट नेताओं पर अंकुश लगेगा। भ्रष्ट नेता अपने प्रभाव व पदवी की वजह से भ्रष्टाचार पर उतर आए हैं। अगर अभी से हर बच्चे को यह बात सिखा दी जाए की हमने बड़े होकर भ्रष्टाचार को खत्म करना है तो भ्रष्टाचार का नाम इस संसार से मिट जाएगा।

भ्रष्टाचार की असली वजह हम सब हैं जो यह बात नहीं समझते कि रिश्वत गलत बात है। अगर इस संसार के सभी लोग यह बात समझ जाएं कि हम शिक्षा एक अच्छे व्यक्ति बनने के लिए प्राप्त करते हैं तो किसी को भ्रष्टाचार के गंदे काम में पड़ने की जरूरत नहीं है।

इस संसार को शिक्षा से उज्ज्वल बनाया जा सकता है, अशिक्षा से नहीं। अशिक्षित लोग गंदे कामों में उतरते हैं, अच्छे कामों में नहीं। शिक्षा प्राप्त करना बहुत आवश्यक है। शिक्षा के माध्यम से हम अच्छे

काम कर जाते हैं। हम बस यही कहना चाहेंगे कि अच्छे व्यक्ति बनो, बुरे व्यक्ति नहीं। शिक्षा को प्राप्त करो। जो लोग शिक्षा प्राप्त करने के योग्य हैं पर प्राप्त नहीं कर सकते क्योंकि उनके पास पैसा नहीं है।

शिक्षा ही हमें गरीब या अमीर बनाती है। शिक्षा को प्राप्त कर अच्छी नौकरी पाएं यही अच्छे व्यक्ति की पहचान है। सच्चा व्यक्ति अच्छा व्यक्ति। शिक्षित व्यक्ति अच्छा व्यक्ति। अच्छे व्यक्ति बनो, शिक्षा ग्रहण करो। शिक्षा भविष्य को संवारती है। शिक्षा से हमारा शारीरिक और मानसिक विकास होता है। शिक्षा को जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए और उपयोगी बनाने के लिए इसकी खामियों को दूर कर आधुनिक ज्ञान–विज्ञान के साथ जोड़ना होगा। ◈

क्रांतिकारी बदलाव की जरूरत

◈ **ufnuh xxukuh]** आठवीं
भिवानी पब्लिक स्कूल
भिवानी, हरियाणा

> *आज पैसा ही भगवान हो गया है। पैसे वाले को ही शरीफ, धनी को ही 'भले घर' का माना जाता है। यही कारण है कि सब लोगों का लक्ष्य पैसा कमाना हो गया है। यदि त्याग-तपस्वी को सम्मान मिलता होता तो लोग इस दिशा में भी बढ़ते। भले और भोले इंसान को आज मूर्ख माना जाता है।*

xांधी जी कहते थे– ''शिक्षा से मेरा अभिप्राय है बच्चे की संपूर्ण शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्तियों का सर्वांगीण विकास। साक्षरता न तो शिक्षा का अंत है और न आरंभ।'' अरविंद लिखते हैं–''शिक्षा का कार्य आत्मा को विकसित करने में सहायता देता है।

oreku f'k{kk % दुर्भाग्य से आज की शिक्षा का स्तर बहुत गिर चुका है। आज के विद्यालयों में छात्रों को आजीविका और पाठ्यक्रम में छात्र के मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास को कोई महत्व नहीं दिया जाता। इसलिए वे न तो समाज–सेवा की ओर ध्यान देते हैं और न ही अध्यात्म को किसी काम की चीज मानते हैं। वे पैसा कमाने की मशीन तो बन जाते हैं किंतु अच्छे आदमी भी हों, इसकी कोई गारंटी नहीं।

ckf)d Je dk egRo % वर्तमान शिक्षा केवल बौद्धिक श्रम को महत्व देती है। प्रतियोगिताओं में परीक्षा इस बात की होती है कि कौन कितनी सूचनाओं को एक साथ ढो सकता है। जिसने तकनीक का अच्छा अभ्यास किया होता है, वही प्रतियोगिता जीत लेता है। इस

प्रवृत्ति का बुरा परिणाम यह हो रहा है कि समाज–सेवा या प्रशासन में भी ऐसे लोग जा रहे हैं जिन्होंने न कभी समाज–सेवा की और न जिन्हें सेवा के संस्कार मिले; बस वे नौकरी में जाते ही पैसा कमाने की होड़ करने लगते हैं। सेवा, विकास, अच्छा इंसान, आत्मा का विकास आदि शब्द उन्हें व्यर्थ प्रतीत होने लगते हैं।

nk"kh dkUk % आज पैसा ही भगवान हो गया है। पैसे वाले को ही शरीफ, धनी को ही 'भले घर' का माना जाता है। यही कारण है कि सब लोगों का लक्ष्य पैसा कमाना हो गया है। यदि त्याग–तपस्वी को सम्मान मिलता होता तो लोग इस दिशा में भी बढ़ते। भले और भोले इंसान को आज मूर्ख माना जाता है।

mi;kxh dl cuk, % विद्यालयों में पढ़ाये जाने वाले विषयों का दैनिक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान हो।

- शिक्षा–क्रम में औद्योगिक तथा शिल्प सम्बंधी विषयों का स्थान हो, जिनसे शिक्षा और प्रतिदिन के जीवन में निकटता बनी रहे।
- शिक्षा में शारीरिक परिश्रम संबंधी विषयों को भी उचित स्थान दिया जाए जिससे सभी वर्ग के विद्यार्थी लाभ उठा सकें।
- शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो। सभी विषयों को आजकल अंग्रेजी भाषा में पढ़ने वाले विद्यार्थी पचास प्रतिशत बातें तो इसलिए नहीं समझ पाते कि विदेशी भाषा में उन्हें अपने विषय पढ़ने होते हैं।
- विद्यालयों में व्यक्तिगत चरित्र निर्माण और सदाचार सम्बंधी बातों का भी आवश्यक प्रबंध होना चाहिए। अध्यापक सच्चे अर्थों में शिक्षक हों।

आचार्य विनोबा के शब्दों में, ''सेना पर 800 करोड़ रुपया खर्च होता है, वह भी मुझे उतना खतरनाक मालूम नहीं होता जितनी खतरनाक आज की शिक्षा प्रणाली मालूम होती है।'' वास्तव में परीक्षाएं शिक्षा–माध्यम बन गई हैं, जो किसी प्रकार से योग्यता और परिश्रम का मापदण्ड नहीं हैं। आज जिन लोगों के हाथ में शासन है, यदि ठीक समय पर उन्होंने शिक्षा प्रणाली में क्रांतिकारी परिवर्तन न किये तो हमारा प्रजातंत्र खतरे में पड़ जाएगा। ◈

शिक्षा और आचरण अन्योन्याश्रित हैं। बिना आचरण के शिक्षा अधूरी है और बिना शिक्षा के आचरण और अंततोगत्वा ये दोनों भी अनुशासन के ही भिन्न रूप हैं। शिक्षा ग्रहण करने के लिए कठोर अनुशासन की आवश्यकता है। अनुशासन भाषण से नहीं, आचरण से आता है। 'लक्ष्य' अनुशासन का सबसे बड़ा प्रेरक है। यदि शिक्षा प्राप्त करने के लिए किसी ऊंचे लक्ष्य को अपने में ठान लें तो अनुशासन दास बनकर उसका अनुगमन करेगा।

बिना आचरण शिक्षा अधूरी

◈ f'kokuh 'kek नौवीं
नवहिन्द गर्ल्स सी.सै. स्कूल
करोल बाग, दिल्ली

f'kक्षा आज के युग में बहुत महत्व स्थान रखती है। शिक्षा व्यक्ति में सहज मानवीय गुणों को उजागर करने में निश्चय ही बहुत अधिक सहायक हो सकती है। वह संयम, अनुशासन, चारित्रिक दृढ़ता, निर्भरता अटूटता आदि का संचार कर सकती है। शिक्षा ही हमें यह सिखा सकती है कि जीवन और समाज में किस व्यक्ति का क्या स्थान और महत्व है।

समाज में सामूहिक और वैयक्तिक स्तर पर कब कहां हमारा आचरण–व्यवहार कैसा रहना चाहिए, कहां हमें झुकना है और कहां हर मूल्य पर अड़ या डट जाना चाहिए। यह एक कटु सत्य है कि जीवन, समाज, देश तथा राष्ट्र व्यक्तियों के आचरण और व्यवहार से ही बना है। समाज में व्यक्ति अपने आचरण से ही पहचाना जाता है, साथ ही यह भी निर्भात और परीक्षित सत्य है कि व्यक्ति के सद्आचरण और व्यवहार का निर्माण उसकी प्रत्यक्ष–परोक्ष शिक्षा के द्वारा ही होता है।

शिक्षा भी ऐसी तभी पा सकते हैं जब उसके कुछ नैतिक मान और

मूल्य हों। कोश से शब्द ज्ञान करा देना या कुछ विषय रटा देना ही तो शिक्षा नहीं है। शिक्षा विविध जानकारियों का ढेर नहीं है, जो मस्तिष्क में ठूंस दिया गया है और जो आत्मसात हुए बिना वहां आजन्म पड़ा रहकर गड़बड़ मचाया करता है। हमें उन विचारों की अनुभूति कर लेने की आवश्यकता है जो जीवन निर्माण, मनुष्य निर्माण तथा चरित्र निर्माण कर लेते हैं–तो आप पूरे ग्रथांलय को कंठस्थ करने वाले की अपेक्षा शिक्षित हैं।

शिक्षा और आचरण अन्योन्याश्रित हैं। बिना आचरण के शिक्षा अधूरी है और बिना शिक्षा के आचरण और अंततोगत्वा ये दोनों भी अनुशासन के ही भिन्न रूप हैं। शिक्षा ग्रहण करने के लिए कठोर अनुशासन की आवश्यकता है। अनुशासन भाषण से नहीं, आचरण से आता है। 'लक्ष्य' अनुशासन का सबसे बड़ा प्रेरक है। यदि शिक्षा प्राप्त करने के लिए किसी ऊंचे लक्ष्य को अपने में ठान लें तो अनुशासन दास बनकर उसका अनुगमन करेगा।

शिक्षा मनुष्य को मस्तिष्क तथा शरीर का उचित प्रयोग करना सिखलाती है। वह शिक्षा जो मनुष्य को पाठ्य पुस्तकों के ज्ञान के अतिरिक्त कुछ गंभीर चिंतन न दे, व्यर्थ है। हमारी शिक्षा से सुसंस्कृत, उस नामक से सभ्य, सच्चरित्र परंतु अनपढ़ कुली कहीं अच्छा है, जो निर्दय और चरित्रहीन हो। संसार का समस्त वैभव तथा सुख–साधन भी मनुष्य को तब तक सुखी नहीं बना सकते जब तक मनुष्य को आत्मिक ज्ञान ना हो।

हमारे कुछ अधिकार और उत्तरदायित्व भी हैं। यदि हम अपने घर को तो स्वच्छ रखें, किंतु दूसरों के घर अथवा गली को अस्वच्छ रहने दें तो हमारी उपेक्षा के कारण रोग निकलते हैं। आज शिक्षा के साधन के रूप में चलचित्र बड़े उपयोगी साबित हुए हैं। जो बात कक्षा में प्रभावी नहीं हो पाती, उसी बात को पर्दे पर देखकर बड़ी सरलता से समझा जा सकता है। उदाहरण के लिए ऐतिहासिक घटनाओं, युद्धों आदि को पर्दे पर सजीव रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। विज्ञान, भूगोल जैसे विषयों की जानकारी चलचित्रों द्वारा अत्यंत रोचक ढंग से प्रस्तुत

की जा सकती है। सामाजिक बुराइयों, अंधविश्वासों, कुप्रथाओं आदि को समाप्त करने में अच्छे चलचित्र महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

युवा शक्ति किसी भी देश का प्राण और भविष्य होती हैं। जिस देश की युवा शक्ति भटक जाती है, उस देश को अवनति के गर्त में गिरने से काई नहीं बचा सकता। दुर्भाग्यवश, आज भारत की अधिकांश युवा शक्ति दिशाहीन है, अपराधियों की सूची में युवाओं की तादाद अधिक है। लूट–खसोट, डाकेजनी, चोरी, बलात्कार, हत्याकांड आदि में अधिकतर युवा वर्ग लिप्त पाया जाता है।

यहां का अशिक्षित युवा तो दिशाहीन है। उसे समझ में नहीं आता कि वह क्या करे? दूसरी ओर उच्चस्तरीय जीवन–शैली उसे आकृष्ट करती है। उसे भी मोबाइल, मोटरकार, बंगला आदि की इच्छा होती है। ऐसी कर्महीन इच्छाएं उसे अपराधों की ओर धकेल देती है। शिक्षा को रोजगार से जोड़कर और पाठ्यपुस्तक में नैतिक शिक्षा अनिवार्य कर इस दिशाहीनता को काफी हद तक कम किया जा सकता है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में देश ने प्रत्येक व्यक्ति के लिए शिक्षा के द्वार खोल दिये हैं। हर स्थान पर व हर गांव में शिक्षा के अवसर जुटाये जा रहे हैं। शिक्षालयों में किसी के साथ किसी प्रकार का भेदभाव नहीं बरता जाता है। माध्यमिक स्तर तक बच्चे को लगभग हर विषय का ज्ञान कराया जाता है जो जीवन के लिए उपयोगी है।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में प्रथम दोष यह है कि यहां बड़े घरों के बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के पब्लिक स्कूल हैं। गरीबों के बच्चे घर में अंग्रेजी भाषा का प्रयोग न होने से अंग्रेजी भाषा में कुशल नहीं हो पाते। मां–बाप को अपने बच्चों को शिक्षा का माहौल देना चाहिए। आजीविका का आधार अंग्रेजी भाषा होने के कारण निजी क्षेत्र के उच्च पदों पर केवल स्व–भाषा होनी चाहिए।

अतः 'शिक्षा जीवन का आधार, शिक्षा बिन सब कुछ बेकार। ◈

शिक्षा पद्धति में सुधार की गुंजाइश

◈ xkjo Qjkldh] आठवीं
रेनबो पब्लिक स्कूल
चौरास, टिहरी गढ़वाल
उत्तराखण्ड

आज इस बात पर जोर नहीं कि मानव को मानव के रूप में तैयार किया जाए बल्कि मानव को मशीन बनाने का प्रयास जोरों पर है। यह एक प्रकार से देश की सांस्कृतिक धरोहर को दमन करने का एक ऐसा प्रयास है जिसके परिणामस्वरूप संस्कृति व संस्कारों के विनाश का एक ऐसा चक्र चलेगा जो मानव को केवल भौतिक संसाधनों में ही चरम सुख की अनुभूति करने को बाध्य करेगा।

Hkkरतीय शिक्षा का इतिहास भारतीय सभ्यता का भी इतिहास है। भारतीय समाज के विकास और उसमें होने वाले परितर्वनों की रूपरेखा में शिक्षा की जगह और उसकी भूमिका को भी निरंतर विकासशील पाते हैं। सूत्रकाल तथा लोकायत के बीच शिक्षा की सार्वजनिक प्रणाली के पश्चात् हम बौद्धकालीन शिक्षा को निरंतर भौतिक तथा सामाजिक प्रतिबद्धता से परिपूर्ण होते देखते हैं। बौद्धकाल में स्त्रियों और शूद्रों को भी शिक्षा की मुख्य धारा में सम्मिलित किया गया।

शिक्षा का अर्थ है शिक्षित करना, प्रशिक्षण देना, पालन–पोषण करना, संवर्द्धन, नैतिक उत्थान, जीवन मूल्यों का विकास, चारित्रिक गठन तथा प्रदर्शन करना। शिक्षा के इस अर्थ के अनुसार शिक्षा व्यक्ति को शिक्षित करती है या उसका पथ प्रदर्शन करती है तो उसे वर्तमान परिस्थितियों के अनुकूल होना चाहिए।

वर्तमान समाज में जहां भ्रष्टाचार, आतंकवाद, बेरोजगारी जैसी कई बुराइयां फैली हुई हैं, वहां शिक्षा क्या इन समस्याओं के समाधान में

अपनी भूमिका निभा रही है या निभाने में सक्षम है। जो शिक्षा समय के साथ–साथ परिवर्तित न हो वह बोझिल, बेकार और अनुपयुक्त हो जाती है। साधारण शब्दों में हम यह भी कह सकते हैं शिक्षा वह जो व्यक्ति को हर परिस्थिति के लिए तैयार करे। शिक्षा वह जो आसपास के वातावरण के अवलोकन को आधार बनाकर दी जाए। शिक्षा को विकास चक्र के अनुसार अपने आप में परिवर्तन लाना चाहिए। शिक्षा का एक और अर्थ हम ले सकते हैं वह है सीख।

f'k{kk dh vko';drk % शिक्षा कि कई जरूरी आवश्यकताएं हैं, जैसे–

- सामाजिक आवश्यकताएं।
- सम्मान हेतु आवश्यकता।
- विकास की आवश्यकता।
- सुरक्षात्मक आवश्यकता।
- शारीरिक आवश्यकता।
- आध्यात्मिक आवश्यकता।

शिक्षा की आवश्यकता काफी विस्तृत है। इसे हम किसी एक जगह या विषय के साथ बांध नहीं सकते। मानव के विकास की प्रथम सीढ़ी है शिक्षा। इसके बिना एक सम्पूर्ण व्यक्तित्व की कल्पना करना असंभव है। यह मानव के सम्मान के विषय के साथ–साथ उसके विकास की बात भी करती है।

f'k{kk dk y{; % शिक्षा का मुख्य लक्ष्य युवा पीढ़ी का शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक विकास होता है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति के भीतर विद्यमान गुणों को विकसित करना होता है और उसे पूर्णता प्रदान करना होता है। शिक्षा के माध्यम से भौतिक जीवन व आध्यात्मिक जीवन के बीच के अंतर को स्पष्ट करने का प्रयास किया जाता है। शिक्षा के माध्यम में इस तरह युवा पीढ़ी को आध्यात्मिक; नैतिक मूल्यों एवं आत्मिक ज्ञान से परिपूर्ण किया जाता है ताकि युवा पीढ़ी का पूर्ण विकास हो सके।

orZeku f'k{kk i.kkyh % वर्तमान शिक्षा, जिस पर आधुनिकता व भौतिक के लक्ष्य को आधार मान कर युवा पीढ़ी को शिक्षित करने का एक नया दौर जन्म ले चुका है और यही आज की वर्तमान शिक्षा पद्धति का सबसे भयानक रूप है जो आर्थिक रूप से सक्षम व्यक्तियों तक ही पहुंच कायम किए हुए है।

आज इस बात पर जोर नहीं कि मानव को मानव के रूप में तैयार किया जाए बल्कि मानव को मशीन बनाने का प्रयास जोरों पर है। यह एक प्रकार से देश की सांस्कृतिक धरोहर को दमन करने का एक ऐसा प्रयास है जिसके परिणामस्वरूप संस्कृति व संस्कारों के विनाश का एक ऐसा चक्र चलेगा जो मानव को केवल भौतिक संसाधनों में ही चरम सुख की अनुभूति करने को बाध्य करेगा।

मानव स्वयं भी यह जानता है कि उसके जीवन का ध्येय भौतिक संसाधनों की उपलब्धि न होकर आध्यात्मिकता एवं जीवन जीना है जो उसके जीवन को शांति व आध्यात्मिक सुख को संचारित करता है और उसे उस परम तत्व का बोध कराता है जिसके लिए हमारे पूर्वजों ने हजारों वर्षों के अपने अथक प्रयास से सींच कर संस्कृति व संस्कारों के रूप में पल्लवित किया है। आज पाश्चात्य संस्कृति के बहाव और काम के प्रभाव ने मानव को अमानुष बना कर रख दिया है। यह इस युग के अंत का परिचायक है।

lq/kkj gsrq lq>ko %–

- बच्चों के समग्र विकास के प्रयास किए जाएं।
- शिक्षा सुविधाओं पर अधिक से अधिक खर्च किया जाए।
- पाठ्यक्रम के अंतर्गत बस्ते के बोझ को कम करने के प्रयास किए जाएं।
- सभी बच्चों के लिए माध्यमिक शिक्षा अनिवार्य की जाए।

- परंपरागत शिक्षण पद्धति को छोड़ व्यावसायिक शिक्षा पद्धति को अपनाने पर बल दिया जाए।
- बच्चों में विषयों के चुनाव की स्वतंत्रता के प्रयास किए जायें।
- परीक्षा की समय सारणी पूरे देश में एक–सी लागू की जाए।
- परीक्षा परिणाम पूरे देश में एक साथ ही समय चक्र के अनुसार घोषित किए जाएं।
- कक्षा बारहवीं तक परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत पास घोषित किये जायें।
- परियोजना आधारित शिक्षा के क्षेत्र में शोध कार्य सम्पन्न किये जायें जिसके दूरगामी उद्देश्य प्राप्त किये जा सकें।

इस तरह हम देख सकते हैं कि इन सुझावों पर यदि गौर किया जाए तो हम शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी हो सकते हैं। तकनीकी शिक्षा एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी प्रयास किये जायें।

अंत में, हम यही कह सकते हैं कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सुधार की अभी भी गुंजाइश है। शिक्षा वही जो मानव के विकास पर पूरा–पूरा जोर दे जिसका यह परिणाम होगा कि हम अपनी युवा पीढ़ी का देश एवं समाज के हित में उपयोग कर सकेंगे। ◈

'वोकेशनल स्टडीज' को मिले बढ़ावा

◈ dhfr| छठी
ग्रीन फील्ड पब्लिक स्कूल,
जी.टी.बी.एन्क्लेव
दिलशाद गार्डन, दिल्ली

आज चहुं ओर शिक्षा संस्थाओं की भरमार है। पब्लिक स्कूलों की तो बाढ़ आई है जहां पाश्चात्य वेशभूषा एवं पाश्चात्य भाषा के बिना प्रवेश वर्जित है। हालत यह है कि चपरासी, अफसर और देश के नेताओं तक बच्चे प्रवेश के लिए उनके स्कूलों में धक्के खा रहें है। कहां गए भारत के आदर्श और संस्कृति के आधार स्तंभ ? इन पब्लिक स्कूलों में भी शिक्षा व्यवसायपरक नहीं है। वहां भी केवल टीमटाम और अंग्रेजी ज्ञान को बढ़ावा दिया जा रहा है।

vाज की शिक्षा पद्धति अभी भी 'व्हाइट कॉलर जॉब्स' वाली शिक्षा पद्धति है जिसकी बुनियाद लार्ड मैकाले ने क्लर्क आपूर्ति के लिए डाली थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से अब तक कितनी ही समितियां और शिक्षा कमीशन शिक्षा सुधार हेतु अपनी रिपोर्ट दे चुकें हैं। कुछ सुधार हुए भी हैं परंतु अभी भी शिक्षा पद्धति बेमानी है।

शिक्षा का उद्देश्य क्या है? जीवन यापन के लिए समर्थ बनना क्या शिक्षा का उद्देश्य यह नहीं होना चाहिये। आज बेकारी का दानव जो मुंह बाए। खड़ा है उसका कारण है बेमानी शिक्षा पद्धति। आज भी स्कूल, कॉलेज केवल किताबी ज्ञान तक सीमित हैं। लगभग 45 वर्ष पूर्व महात्मा गांधी ने बेसिक शिक्षा (बुनियादी शिक्षा पद्धति) राष्ट्र को समर्पित की थी किंतु उसे ठीक प्रकार से लागू नहीं किया गया।

आज चहुं ओर शिक्षा संस्थाओं की भरमार है। पब्लिक स्कूलों की तो बाढ़ आई है जहां पाश्चात्य वेशभूषा एवं पाश्चात्य भाषा के बिना प्रवेश वर्जित है। हालत यह है कि चपरासी, अफसर और देश के नेताओं

तक के बच्चे प्रवेश के लिए उनके स्कूलों में धक्के खा रहे हैं। कहां गए भारत के आदर्श और संस्कृति के आधार स्तंभ? इन पब्लिक स्कूलों में भी शिक्षा व्यवसायपरक नहीं है। वहां भी केवल टीमटाम और अंग्रेजी ज्ञान को बढ़ावा दिया जा रहा है। शिक्षा को व्यवसायात्मक होना ही चाहिए। जिस व्यक्ति को जीवन में व्यावसायिक स्तर पर जो पेशा अपनाना है उसका उसे प्रारंभ से ही प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। कम से कम माध्यमिक स्तर पर छात्र–छात्राओं की व्यवसाय संबंधी रूचि परीक्षाएं होनी चाहिए। उनकी रूचि निर्धारण के लिए विशेष अध्ययन कार्यक्रम आयोजित होने चाहिए।

आवश्यकता तकनीकी तथा औद्योगिक विषयों के प्रशिक्षण को प्रोत्साहन देने की है। कॉलेज स्तर पर 'वोकेशनल स्टडीज' को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। शिक्षा प्रणाली को जब तक व्यावसायिक रूप नहीं दिया जाता, तब तक शिक्षा के साथ जुड़े बेकारी शब्द की लक्ष्मण–रेखा को पार कर पाना असंभव है। यदि ऐसा न किया गया तो मात्र लिपिकों की भीड़ बढ़ेगी और इससे व्यवहार तथा व्यावसायिक स्तर पर राष्ट्र की उत्पादन क्षमता नहीं बढ़ पाएगी।

आज संसार द्रुत गति से बढ़ रहा है। पाश्चात्य देश मंगल और वृहस्पति ग्रहों तक पहुंचने का प्रयास कर रहे हैं। संसार की दौड़ में हम पीछे न रह जाएं, इसलिये शिक्षा को उन्नत होना ही चाहिए। हमें चाहिए कि हम भावी राष्ट्र निर्माताओं को उनकी रूचि और योग्यता के अनुसार शिक्षा दें। स्थानीय उद्योग धन्धों में शैक्षणिक क्रिया–कलापों का समन्वय स्थापित कर देश की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करें। ◈

शिक्षा वो, जो दबाओं से उबरना सिखाये

◈ J;k pØorh सातवीं
श्री वैष्णव बाल मंदिर
इंदौर, मध्यप्रदेश

शैक्षणिक संस्थाओं को ऐसे पाठ्यक्रम बनाने के लिए खुद को तैयार करना चाहिए जो भारत की सामाजिक और प्रौद्योगिकी संबंधी आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील हों। वर्तमान पाठ्यक्रम में विकास कार्यों की गतिविधियों को अनिवार्यतः स्थान दिया जाना चाहिए ताकि समाज की भावी पीढ़ी पूरी तरह से सामाजिक परिवर्तन के सभी पहलुओं के अनुकूल हो सके।

f'kक्षा से मानव का व्यक्तित्व संपूर्ण, विनम्र और संसार के लिए उपयोगी बनता है। सही शिक्षा से मानवीय गरिमा, स्वाभिमान और विश्व बंधुत्व में बढ़ोतरी होती है। अंततः शिक्षा का उद्देश्य है–सत्य की खोज। इसका केन्द्र अध्यापक होता है, जो अपने विद्यार्थियों को शिक्षा के माध्यम से जीवन में और व्यवहार में सच्चाई की शिक्षा देता है।

छात्रों को जो भी कठिनाई होती है, जो भी जिज्ञासा होती है, जो वे जानना चाहते हैं, उन सबके लिए वे अध्यापक पर ही निर्भर रहते हैं। सही मार्गदर्शन में प्रत्येक व्यक्ति शिक्षा को उसके वास्तविक अर्थ में यदि ग्रहण कर मानवीय गतिविधि के प्रत्येक क्षेत्र में उसका प्रसार करता है तो मौजूदा 21वीं सदी में दुनिया काफी सुंदर हो जाएगी।

आज की युवा पीढ़ी ऐसी शिक्षा प्रणाली चाहती है जो उसके खोजी और सृजनशील मन को सबल बनाने के साथ–साथ उसके सामने चुनौती प्रस्तुत करे। देश का भविष्य उन पर टिका हुआ है। वे वर्तमान में शिक्षा प्रणाली के संबंध में सोच–विचार करना चाहते हैं। एक अच्छी

शिक्षा प्रणाली में ऐसी क्षमता होनी चाहिए जो छात्रों की ज्ञान प्राप्ति की तीव्र जिज्ञासा को शांत कर सके।

शैक्षणिक संस्थाओं को ऐसे पाठ्यक्रम बनाने के लिए खुद को तैयार करना चाहिए जो भारत की सामाजिक और प्रौद्योगिकी संबंधी आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील हो। वर्तमान पाठ्यक्रम में विकास कार्यों की गतिविधियों को अनिवार्यतः स्थान दिया जाना चाहिए ताकि समाज की भावी पीढ़ी पूरी तरह से सामाजिक परिवर्तन के सभी पहलुओं के अनुकूल हो सके।

विज्ञान एक रोमांचकारी विषय है और एक वैज्ञानिक के लिए समूचे जीवन का मिशन। विज्ञान में निपुण होने के लिए गणित का ज्ञान जरूरी है। गणित और विज्ञान के संयोग से एक दीप्ति पैदा होती है। सूचना प्रौद्योगिकी में प्रगति से दुनिया सिमट गई है। दुनिया की वास्तविक जटिल समस्याओं के निदान के लिए दुनिया के वैज्ञानिकों के बीच तालमेल होना अनिवार्य है।

प्राचीन काल में भारत को शिक्षा, वैज्ञानिक अनुसंधान और दर्शन का गढ़ माना जाता था, किंतु कुछ दशकों से भारत के वैज्ञानिकों का रुख पूर्व से पश्चिम की ओर हो गया है। देर से ही सही, पश्चिमी देशों के वैज्ञानिक फिर भारत की ओर आकृष्ट होने लगे हैं। हमें भारत को विज्ञान और अनुसंधान के क्षेत्र में श्रेष्ठता का केंद्र बनाने के लिए और श्रम करना होगा।

बच्चे और युवक किसी देश के भविष्य की तस्वीर होते हैं। हमारे समाज का एक महत्वपूर्ण, सशक्त और संसाधनों से भरा हुआ वर्ग युवकों का है जिनमें आसमान की बुलंदियों को छू लेने की आकांक्षा धधक रही है। यदि उनकी ऊर्जा को सही दिशा दी जाए तो उससे ऐसी गतिशीलता पैदा होगी जो राष्ट्र को विकास के तेज वाहन में दौड़ा देगी। युवकों को अपनी योजना और विकास प्रक्रिया का केंद्र बिंदु मानते हुए हमें इस बहुमूल्य मानव संसाधन की देखरेख करने की आवश्यकता है।

ई–शिक्षा का अर्थ इंटरनेट से सूचना प्रदान करने से है। ई–शिक्षा उन सभी चीजों तथा प्रक्रिया को अपने अंदर समाहित करती है जो इलेक्ट्रॉनिक माध्यम का उपयोग व्यावसायिक शिक्षा को सुचारू रूप से प्रस्तुत करते हैं। ई–शिक्षा का प्रयोग एक ऐसे ढांचे के रूप में किया जाता है जो लगभग सभी इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों (इन्टरनेट, इंट्रानेट, एक्सट्राने, कृत्रिम उपग्रह प्रसारण, ऑडियो/विडियो, इंटरैक्टिव टेलीविजन, सी.डी. इत्यादि) को विद्यार्थियों तक बड़े ही रोचक तरीके से पहुंचाता है।

ई–शिक्षा हमारी कक्षा व्यवस्था का ही विकसित रूप है, सिर्फ अंतर यही है कि यहां पर शिक्षा को विद्यार्थी की सुविधा के अनुसार बनाया जा रहा है, वह अपने द्वारा निश्चित किए गए समय पर, अपनी गति से सीख सकता है। ई–शिक्षा के जरिये कोई भी विद्यार्थी, शिक्षक तथा अन्य सूचना तथा विचारों को आदान–प्रदान करते हुए एक दूसरे से जुड़े रहते है। यदि किसी विद्यालय के नजरिये से देखा जाए तो सभी के पास ज्यादा अवसर रहते हैं।

शिक्षा का सही अर्थ यही है कि अपने आपको समर्थ बनाएं। यह आवश्यक है कि किसी भी समस्या का ठीक ढंग से सामना करने के लिए शिक्षित होना जरूरी है। सम्यक शिक्षा वही है जो विद्यार्थी को इस जीवन का सामना करने में मदद करे ताकि वह जीवन को समझ सके, उससे हार न माने, उसके बोझ से दब न जाए, जैसे कि हममें से अधिकांश लोगों के साथ होता है।

लोग, विचार, देश, जलवायु, भोजन, लोकमत, यह सभी कुछ लगातार आपको उस खास दिशा में धकेल रहे हैं जिसमें कि समाज आपको देखना चाहता है। आपकी शिक्षा ऐसी हो कि वह आपको इस दबाव को समझने के योग्य बनाए, इसे उचित ठहराने की बजाए आप इसे समझें और इससे बाहर निकलें जिससे कि एक व्यक्ति होने के नाते, एक मनुष्य होने के नाते, आप आगे बढ़कर कुछ नया करने में सक्षम हो सकें और केवल परंपरागत ढंग से ही विचार करते न रह जाए। यही वास्तविक शिक्षा हो।

शिक्षा का प्रथम उद्देश्य बच्चों को एक परिपक्व इंसान बनाना होता है, ताकि वो कल्पनाशील, वैचारिक रूप से स्वतंत्र और देश का भावी कर्णधार बन सके, किंतु भारतीय शिक्षा पद्धति अपने इस उद्देश्य में पूर्ण सफलता नहीं प्राप्त कर सकी, जिसके कई कारण हैं। पहला तो यही कि अंगूठाछाप लोग तय करते हैं कि बच्चों को क्या पढ़ाना चाहिये, जो कुछ शिक्षाविद् हैं वो अपने दायरे और विचारधाराओं से बंधे हैं और उनसे निकलने या कुछ नया सोचने से डरते हैं।

कुल मिलाकर शिक्षा पद्धित पर सभी लोग चारों तरफ से आक्रमण कर रहे हैं और ऊपर से तुर्रा ये कि ये सभी लोग समझते हैं कि सिर्फ वे ही शिक्षा का सही मार्गदर्शन कर रहे हैं। पहले किसी बच्चे से पूछा जाता था कि बड़े होकर तुम क्या बनोगे तो उसका जवाब डॉक्टर, इन्जीनियर, पायलट या कुछ और होता था, इसके पीछे पैसा नहीं होता था, बल्कि देशसेवा और समाज को आगे बढ़ाने का जज्बा होता था।

आजकल बच्चा बोलता है कि मैं बड़ा होकर नेता बनना चाहता हूं, क्योंकि इस पेशे में ज्यादा पैसा है। क्या शिक्षा सिर्फ जीवन में पैसा कमाने के लिये ली जाती है? क्या हम बच्चों का मार्गदर्शन सही दिशा में कर रहे हैं ? हर बच्चा चाहता है कि जल्द से जल्द अपनी पढ़ाई पूरी करे और किसी जगह पर फिट हो जाये। उसने क्या पढ़ा और कितना पढ़ा, उससे इसको मतलब नहीं है या जो पढ़ा उसका जीवन में कितना प्रयोग होगा, उससे भी इसको सरोकार नहीं है।

उसको तो बस अपने शिक्षा के इन्वेस्टमेंट के रिटर्न से मतलब है, यानि कि शिक्षा और रोजगार एक व्यापार हो गया है। पैसा लगाओ और पैसा पाओ। बच्चों को ही दोष क्यों दें, उनके माता–पिता भी तो इसी तरह सोचते हैं, कि जल्दी बच्चा पढ़–लिख ले तो पैसा कमाने की मशीन की तरह काम करे।

शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जो हमारे जीवन को एक नई विचारधारा, नया सवेरा देता है, यह हमें एक परिपक्व समाज बनाने में मदद करता है। यदि शिक्षा के उद्देश्य सही दिशा में हों तो वह इंसान को नये–नये

प्रयोग करने के लिए उत्साहित करते हैं। शिक्षा और संस्कार साथ–साथ चलते हैं, या कहा जाये तो एक–दूसरे के पूरक हैं। शिक्षा हमें संस्कारों को समझने और बदलती सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप उनका अनुसरण करने की समझ देती है। आज शिक्षा जिस मुकाम पर पहुंच चुकी है वहां उसमें परिवर्तन की गुंजाइश है। कुछ सुझाव हैं जिन्हें अमल में ला सकते हैं:

- शिक्षा को न केवल किताबी ज्ञान बल्कि व्यावहारिक शास्त्र के रूप में प्रदान करना चाहिए।
- परीक्षा के प्रारूप और शिक्षा के स्वरूप में आमूल परिवर्तन की गुंजाइश है।
- कंप्यूटर शिक्षा अनिवार्य कर देनी चाहिये।
- बच्चों से शिक्षा के एक्सट्रा लोड को कम कर देना चाहिये। उनके मानसिक, तार्किक विकास और पर्सनेल्टी पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये।
- शिक्षा के साथ–साथ व्यावसायिक ज्ञान भी दिया जाना चाहिये, एडवांस क्लासेस में यह अनिवार्य हो।
- छात्रों को नई खोजें करने और नये प्रयोग करने के लिए उत्साहित करना चाहिए।
- भारतीय संस्कृति और संस्कार की शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए।
- स्टूडेंट एक्सचेंज प्रोग्राम को ज्यादा बढ़ावा दिया जाना चाहिए। ताकि छात्र दूसरे देशों के छात्रों से ज्यादा कुछ सीख सकें।
- ग्रामीण शिक्षा के स्तर को सुधारा जाना आवश्यक है।

प्रौढ़ शिक्षा के लिए स्वयंसेवी संगठनों को ज्यादा से ज्यादा प्रोत्साहन एवं सहायता दी जानी चाहिए। ◈

देश प्रेम से ओत-प्रोत हो शिक्षा

हमारी वर्तमान शिक्षा पद्धति लोक कल्याण पर आधारित होनी चाहिए। प्राचीनकाल में ऋषि दधीचि ने लोक कल्याण के लिए अपनी अस्थियां भी दान कर दी थीं। महाराज शिवि ने अपना मांस तक दे डाला था। अतः हमारी वर्तमान शिक्षा पद्धति में देश प्रेम व देश भक्ति की शक्ति को भी जोड़ना होगा।

◈ iHkkr ikjk'kj दसवीं
सेंट जेवियर स्कूल
सैक्टर–26, शाहबाद
दौलतपुर रोहिणी, दिल्ली

f'kक्षा हमारे जीवन में एक अनमोल धन है। इसकी तुलना किसी भी धन से नहीं की जा सकती है। हीरे–मोती, सोना–चांदी सब शिक्षा के सामने न के बराबर है। शिक्षा मनुष्य के ज्ञान–चक्षु खोलती है। जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा का अपना अलग ही महत्व है। सर्वांगीण विकास से मेरा तात्पर्य है–किसी के भी जीवन में शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, बौद्धिक व भौतिक विकास का होना। आज की वर्तमान शिक्षा पद्धति को इस तरह से उपयोग में लाना होगा जिससे पूरे समाज का सम्पूर्ण विकास हो सके।

हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली पुस्तकों तक सीमित नहीं है। आज प्रत्येक विद्यालय में विभिन्न प्रकार की क्रियाएं होती हैं। विद्यार्थियों का आंकलन पढ़ाई के साथ–साथ इन क्रियाओं पर भी निर्भर करता है। छात्र–छात्रा का व्यवहार कक्षा–कक्ष में कैसा है? वह ज़रूरतमंद छात्र–छात्रा की सहायता करता है या नहीं। वह खेलकूद में भाग लेता है या नहीं। उसका अध्यापक–अध्यापिका के साथ कैसा व्यवहार है? वह दैनिक कार्य करता है या नहीं। उसका स्वास्थ्य कैसा है, इत्यादि।

हमारी वर्तमान शिक्षा पद्धति में बहुत सी खूबियां हैं परंतु फिर भी मैं चाहता हूं कि मेरे देश की वर्तमान शिक्षा पद्धति कुछ ऐसी हो जो जीवन का सर्वांगीण विकास करे। जीवन के हर पल वह काम आये।

जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए मेरा मानना है कि शिक्षा को व्यावहारिक ज्ञान से जोड़ा जाये। व्यावहारिक ज्ञान जीवन के हर पल काम आता है। मनोबल को कम नहीं पड़ने देता है। व्यावहारिक ज्ञान से अनुकूल सहायता व प्रेरणाएं मिलती हैं। मन वासना पर नियंत्रण हो जाता है। मनु ने कहा था– *''मन एवं मनुष्याणां कारणं बंध मोक्षयोः''।*

अर्थात् मनुष्य का मन ही बंधन और मुक्ति का कारण है। यदि मन पर ही नियंत्रण पा लिया तो उस मनुष्य को आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता। अतः वर्तमान शिक्षा को व्यावहारिक शिक्षा के साथ जोड़ना देश को उन्नति की ओर ले जाएगा।

हमें अपनी शिक्षा प्रणाली को समय के साथ जोड़ना होगा। सभी छात्र–छात्राओं को समय को सुनिश्चित करना होगा। जिस कार्य के लिए जो समय निश्चित किया है, उसे उसी समय करना होगा। समय का पहिया सदैव घूमता रहता है। वह किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। मनुष्य का जीवन क्षणभंगुर है, अतः जीवन क्षण को मूल्यवान समझकर कार्य में तब तक जुटे रहना चाहिए जब तक सफलता हाथ न लग जाए।

मेरा मानना है कि भाषा–सामाजिक संस्कारों का दूसरा नाम है, जिसे कोई समाज विरासत के रूप में प्राप्त करता है। दूसरे शब्दों में भाषा उस देश की पहचान होती है। मातृभाषा को अनिवार्य भाषा के रूप में स्वीकार करना होगा ताकि समस्त राष्ट्र के सामने हमारी भी अलग पहचान हो सके। मातृभाषा से किसी देश का मनोबल बढ़ता है। वर्तमान शिक्षा पद्धति आत्मविश्वास पर केन्द्रित होनी चाहिए। आत्मविश्वास से मन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। हमें अपने देश के नागरिकों को ऐसी शिक्षा देनी होगी जिससे नागरिकों पर सकारात्मक प्रभाव पड़े। आगे बढ़ने की भावना पनपे। सकारात्क विचार ही किसी देश को तरक्की के रास्ते पर पहुंचा सकते हैं। अपने मनोबल को कभी भी कमजोर नहीं

पड़ने देना चाहिए। जीवन में सफलता पाने के लिए कठिन से कठिन परिस्थिति में भी हिम्मत, साहस व धैर्य बनाए रखना चाहिए।

हमारी वर्तमान शिक्षा पद्धति लोक कल्याण पर आधारित होनी चाहिए। प्राचीनकाल में ऋषि दधीचि ने लोककल्याण के लिए अपनी अस्थियां भी दान कर दी थीं। महाराज शिवि ने अपना मांस तक दे डाला था। अतः हमारी वर्तमान शिक्षा पद्धति में देश प्रेम व देश भक्ति की शक्ति को भी जोड़ना होगा ताकि लोगों में एक–दूसरे के प्रति प्यार के भाव हों। ऐसे में यह अनिवार्य है कि वर्तमान शिक्षा में अनुशासन शब्द के लिए भी जगह होनी चाहिए।

वर्तमान शिक्षा में खेलों का आधुनिक आगमन हो चुका है। खेलों में रूचि लेने वाले छात्र भी देश का गौरव बढ़ाते हैं। मस्तिष्क को ताजा रखने के लिए खेलों का अपना विशेष महत्व है। खेलों में मनोरंजन एवं व्यायाम साथ–साथ होते हैं। खेलों से मन में एकाग्रता आ जाती है।

मेरा मानना है कि बिना परिश्रम से सफलता पाने में इतनी खुशी नहीं मिलती जितनी परिश्रम से सफलता पाने में। शिक्षा स्तर में गिरावट आई है, जिसका मुख्य कारण है प्रथम कक्षा से आठवीं कक्षा तक किसी भी छात्र–छात्रा को फेल नहीं किया जा सकता, अगर उसकी उपस्थिति पूर्ण हो। छात्र–छात्राओं ने मेहनत करनी कम कर दी है क्योंकि उनको पता है कि वे पास तो हो ही जाएंगे। दसवीं कक्षा में भी बोर्ड परीक्षा छात्र की इच्छा पर निर्भर करती है कि वह बोर्ड परीक्षा दे या न दे। अगर शिक्षा स्तर में उपयोगिता लानी है तो दसवीं कक्षा में पुनः बोर्ड परीक्षा वापिस लानी होगी, ताकि देश को कुशल, परिश्रमी व होनकार छात्र मिल सकें।

माता–पिता का बेटी को बोझ समझना व बेटे को सहारा व वंशवृद्धि के रूप में देखने वाली सोच ने नारी सम्मान को बहुत ठेस पहुंचाई है। लड़कियों ने हर क्षेत्र में अपनी महत्ता साबित कर दी है चाहे वह अंतरिक्ष हो या खेल का मैदान राजनीतिक क्षेत्र हो या सामाजिक या

आर्थिक कोई भी क्षेत्र हो लड़कियों ने अपनी बुद्धि, कौशल का परिचय दिया है। अतः वर्तमान शिक्षा को नारी सम्मान के साथ जोड़कर अपने देश को कन्या भ्रूण हत्या जैसे अत्याचारों से बचा सकते हैं।

वर्तमान समय देश विघटन एवं आतंकवाद जैसी समस्याओं से जूझ रहा है। अतः हमें चाहिये कि हमारी शिक्षा पद्धति में देश–प्रेम की भावना भी प्रज्ज्वलित होनी चाहिए। विद्यार्थी वर्तमान खबरों से अवगत होना चाहिए। समाचार पत्र ज्ञान विज्ञान, मनोरंजन तथा शिक्षा प्रणाली में समाचार पत्रों को भी एक विषय की तरह लेना चाहिए और आने वाली खबरों से संबंधित परीक्षा भी होनी चाहिए।

स्मार्ट क्लास में पुस्तकीय ज्ञान के साथ–साथ छात्रों द्वारा विषय को समझने एवं उसे याद करने में सहायक संपूर्ण सामग्री उपलब्ध होती है। स्मार्ट क्लास के माध्यम से छात्र विषय का अधिगम भी सरलता से कर लेता है। छात्र को किसी भी जानकारी के लिए इधर–उधर भटकना नहीं पड़ता। कम समय में अधिक जानकारी प्राप्त हो जाती है। अतः स्मार्ट क्लास की उपयोगिता को समझते हुए इसे वर्तमान शिक्षा प्रणाली में स्थान देना चाहिए। मेरा स्वप्न है कि मेरे समस्त देशवासियों के लिए एक समान शिक्षा का स्तर हो। सभी शिक्षित हों। सभी एक–दूसरे का सम्मान करें। कोई भी दुःखी न हो। ◈

छात्रवर्ग स्वयं हो गया है सजग

आज के भारत के सभी विद्यालय व शिक्षण संस्थाओं में कंप्यूटर टेक्नीशियन के कोर्स होने चाहिए। इस प्रकार की शिक्षा से हमारी भावी पीढ़ी विकास के रास्ते आगे बढ़ेगी और इससे उसका सर्वांगीण विकास हो सकेगा। इन्हीं बदलावों के बाद ही हम अपने भारत के सपने 'मेड इन इंडिया' और 'डिजिटल इंडिया' को पूरा कर सकेंगे।

◈ lef) gMMk दसवीं
डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल
पुष्पांजलि एन्क्लेव
पीतमपुरा, दिल्ली

eानव जीवन में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा ही मनुष्य को मनुष्यता तक ले जाती है। बाल्यावस्था और किशोरवस्था इस ज्ञान–विज्ञान की प्राप्ति के लिए निश्चित की गई है कि संसार में आकर व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह सबसे पहले संसार में रहने योग्य बने।

प्रत्येक देश के भावी नागरिक विद्यार्थी ही होते हैं। देश की आशा देश के नवयुवकों से ही होती है। नवयुवकों की जैसी शिक्षा व्यवस्था होगी, उसका भविष्य भी वैसा ही होगा। वर्तमान में हमारी शिक्षा प्रणाली पाश्चात्य् सभ्यता व भौतिकवाद को बढ़ावा दे रही है और वैसे भी मानव जीवन का लक्ष्य प्रायः भौतिक ही रह गया है।

आज की शिक्षा का मुख्य ध्येय यह है कि शिक्षित होकर भौतिक जीवन को सुखमय कैसे बनाया जाए? इस शिक्षा प्रणाली की नींव अंग्रेजों ने डाली थी। उन्हें अपने लिए सस्ते कर्मचारियों की आवश्यकता थी। अतः इस शिक्षा के साथ नौकरी की भावना का इतना घनिष्ठ संबंध हो गया है कि हर प्रकार की शिक्षा पूरी करने पर लोग नौकरी को ध्यान में रखते हैं।

हमारी शिक्षा केवल रटने व अंक आधारित रह गई है। इसमें प्रयोगात्मक व शोध का कार्य न के बराबर है, इसलिए हमारी शिक्षा का व्यापारीकरण हो गया है। शहरों में महंगे–महंगे स्कूल व कोचिंग सैंटर खुल गए हैं, जिनका उद्देश्य बच्चों के सर्वांगीण विकास की ओर ध्यान न देकर केवल अंक पर आधारित परीक्षा को सफल बनाना है। इसलिए आजकल दिल्ली विश्व विद्यालय में अच्छे कॉलेज की अंक तालिका 90 प्रतिशत से ऊपर दाखिले के लिए बंद हो जाती है और वे मानसिक बीमारी का शिकार हो जाते हैं। कभी–कभी अंकों के दबाव के कारण विद्यार्थी आत्महत्या जैसा कदम भी उठा लेते हैं, इससे बच्चे का सर्वांगीण विकास रुक जाता है। बच्चे केवल रट कर अंक प्राप्त करने की कोशिश अधिक करते हैं जबकि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मनुष्य को मनुष्य बनाना है, उसमें आत्म–निर्भरता की भावना भरना, चरित्र निर्माण करना तथा स्वस्थ मन व तन का निर्माण करना आदि है।

हमारी शिक्षा प्रणाली में पाठ्यक्रम के अध्ययन के साथ–साथ नैतिक शिक्षा, योग शिक्षा, खेल–कूद और अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी मुख्य स्थान होना चाहिए। क्योंकि ये सब एक मनुष्य जीवन के लिए महत्वपूर्ण हैं। योग के द्वारा बच्चों का स्वास्थ्य ठीक रहता है और उसका मनोबल बढ़ता है। विद्यालय व कॉलेजों में खेल–कूद व सांस्कृतिक कार्यक्रमो द्वारा भी विद्यार्थी अपना करियर बना सकते हैं।

सिर्फ खेल में हीं नही, और भी क्षेत्रों में बहुत से लोगों ने अपना नाम कमाया, जैसे लता मंगेश्कर, अमिताभ बच्चन आदि। आज की शिक्षा में नैतिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए जिससे बच्चे का चरित्र निर्माण होता है और वह समाज व देश के लिए अच्छा नागरिक साबित होता है। नैतिक शिक्षा हमें सभी का आदर करना और समाज में फैल रही बुराइयों, जैसे हिंसा, बलात्कार, चोरी, नशे की आदत को जड़ से खत्म करती है। अच्छे चरित्र वाला व्यक्ति ही समय का सद्उपयोग करता है और देश के निर्माण में सहायक होता है।

हमारी शिक्षा में केवल रटने वाला पाठ्यक्रम न होकर शोध व प्रयोग

आधारित पाठ्यक्रम होना चाहिए जिससे बच्चे सही ज्ञान प्राप्त कर सकें। स्कूल के पाठ्यक्रम में व्यावसायिक प्रशिक्षण पर भी बल देना चाहिए जिससे हमें बेरोजगारी का सामना न करना पड़े और सभी छोटे या बड़े रोजगार को आसानी से प्राप्त कर सकें। आज के भारत के सभी विद्यालय व शिक्षण संस्थाओं में कंप्यूटर टेक्नीशियन के कोर्स होने चाहिए। इस प्रकार की शिक्षा से हमारी भावी पीढ़ी विकास के रास्ते आगे बढ़ेगी और इससे उसका सर्वांगीण विकास हो सकेगा। इन्हीं बदलावों के बाद ही हम अपने भारत के सपने 'मेड इन इंडिया' और 'डिजिटल इंडिया' को पूरा कर सकेंगे।

अतः हमें आज ऐसी शिक्षा पद्धति की आवश्यकता है जो देश के लिए अच्छे नागरिक, कुशल कार्यकर्त्ता एवं भावी सेनानी उत्पन्न कर सके जो प्रत्येक व्यक्ति की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक शक्तियों के विकास में पूर्ण योगदान दे सके। आज का प्रबुद्ध छात्र वर्ग इस घिसी–पिटी शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन के लिये स्वयं जाग उठा है। वह चाहता है कि उसे बेरोजगारी का शिकार न बनना पड़े। मनुष्य चाहता है कि उसकी शिक्षा व्यावहारिक और रचनात्मक हो। इसके साथ–साथ शिक्षा हमें विश्व बन्धुत्व की ओर सद्भावना का ज्ञान दे जिससे हम अपना समय लड़ाई–झगड़े में न लगाकर विश्व की भलाई के लिए रचात्मक कार्य करें। अतः हम कह सकते हैं कि शिक्षा केवल हमें एक पढ़ा–लिखा व्यक्ति न बनाकर एक संपूर्ण व्यक्तित्व वाला बुद्धिमान, कार्यशील, परिश्रमी और नेक व्यक्ति बनाए, जिससे हम इस विश्व की शांति और समृद्धि के लिए अधिक से अधिक योगदान कर सकें। ◈

सरकार के प्रयास भी सराहनीय

◈ nhfidk ;kno बारहवीं
श्री जवाहर जैन शिक्षण संस्था उच्च माध्य. विद्यालय उदयपुर, राजस्थान

प्राचीन विद्या इतनी श्रेष्ठ नहीं थी जितनी की आज है। विद्यार्थियों को गुरु की आज्ञा का पालन न करने पर उन्हें बेल द्वारा पीटकर दण्डित किया जाता था। तब विद्यार्थी स्व पढ़ाई से संबंधित अपने गुरुओं द्वारा दी गई शिक्षा प्राप्त करते और उनकी शिक्षा पूरी होने पर वे अपने गुरुओं को दक्षिणा प्रदान करते थे।

f'kक्षा का उद्देश्य शिक्षार्थी की समझ को बढ़ाना तथा मानवीय मूल्यों का विकास करना है। सभ्य नागरिक बनाना, समाजोपयोगी और जीवन–निर्वाह की क्षमता पैदा करना तथा व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना–इस तरह एक मनुष्य को सामाजिक बनाने की प्रक्रिया का नाम शिक्षा है। सामाजिक विज्ञान विश्वकोश के अनुसार 'एक वयस्क होते हुए बालक को समाज में प्रवेश करने योग्य बनाने की प्रक्रिया का नाम ही शिक्षा है'।

किसी भी राष्ट्र की सामाजिक एवं सांस्कृति उन्नति वहां की शिक्षा व्यवस्था पर निर्भर करती है। हमारा देश लम्बे समय तक पराधीन रहा है, इससे हमारे देश में शिक्षा व्यवस्था का पूर्ण विकास नहीं हो सका। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमारी सरकार ने शिक्षा के प्रसार के लिए काफी प्रयास किये। हमारे देश में यद्यपि शिक्षा पद्धति में नागरिक कर्तव्यों का समावेश किया गया है तथापि विद्यार्थियों को उनका सम्यक् ज्ञान नहीं है। यदि आज के विद्यार्थी ज्ञानार्जन की भावना रखकर शिक्षा के स्तर में सुधार करना चाहे और अपनी शक्ति को

शिक्षा–क्षेत्र की कमियों को दूर करने में लगाए तो निश्चय ही हमारे शिक्षा–स्तर में और सुधार हो सकता है।

ckyd f'k{kk d vf/kdkj dk Lo:i % भारत सरकार द्वारा जारी निःशुल्क और अनिवार्य बाल–शिक्षा का अधिकार–अधिनियम में यह व्यवस्था है कि प्रारंभिक कक्षा से आठवीं कक्षा तक अर्थात् चौदह वर्ष तक के प्रत्येक बालक को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा प्राप्ति का अधिकार होगा। सरकार ऐसे तंत्र को विकसित करेगी जिससे सभी बालक शिक्षा पाने के लिए उत्साहित हों। बालिकाओं, अल्पसंख्यकों तथा वंचित वर्ग के बालकों को आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई जायेगी।

केन्द्र सरकार द्वारा बालिका को आठ कक्षा तक किसी भी कारण फेल नहीं किया जायेगा। उसे अगली कक्षा में प्रौन्नत किया जायेगा और प्रारंभिक शिक्षा पूरी किये बिना विद्यालय से निष्कासित भी नहीं किया जायेगा। बालिका को शारीरिक दण्ड या मानसिक उत्पीड़न नहीं मिलेगा। राष्ट्रीय बालक अधिकार आयोग के अधिनियमों के अनुसार बालक–बालिकाओं के समस्त अधिकारों को संरक्षण दिया जायेगा एवं सभी बालकों का जीवन स्तर सुधर सकेगा।

ikphu uhfr f'k{kk dk lek;kstu % यद्यपि प्राचीन काल में श्रेष्ठ शिक्षा पद्धति के कारण भारत को 'विश्व गुरु' कहा जाता था और अन्य देशों के शिक्षार्थी यहां ज्ञान प्राप्त करने आते थे। प्राचीन काल में शिक्षार्थी/विद्यार्थी से ज्यादा गुरुओं का महत्व अधिक था। प्राचीन काल में विद्यालय की व्यवस्था न थी। गुरुजी की कोठी अर्थात् उनका निवास स्थान ही विद्यालय था, सभी विद्यार्थी पेड़ों के नीचे बैठकर शिक्षा प्राप्त करते थे।

प्राचीन विद्या इतनी श्रेष्ठ नहीं थी जिनती की आज है। विद्यार्थियों को गुरु की आज्ञा का पालन न करने पर उन्हें बेल द्वारा पीटकर दण्डित किया जाता था। तब विद्यार्थी को स्व पढ़ाई से संबंधित अपने गुरुओं द्वारा दी गई शिक्षा प्राप्त करने और उनकी शिक्षा पूरी होने पर वे अपने गुरुओं को दक्षिणा प्रदान करते थे।

कई बार उन्हें मानसिक रूप से भी दण्डित किया जाता था। किन्तु आज की शिक्षा प्रणाली प्राचीन शिक्षा की अपेक्षा अधिक उपयोगी हो गई है। विद्यार्थी स्वतंत्र रूप से पढ़ाई करते हैं तथा उनका शारीरिक या मानसिक उत्पीड़न भी नहीं किया जाता है। इस प्रकार से विद्यार्थी बिना किसी डर के अपना अध्ययन कुशलता से करते हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में अनेक सुविधाएं दी गई हैं। विद्यार्थी अपने शिक्षकों से खुलकर बात करने में सक्षम होते हैं। शिक्षक भी उनके साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करते हैं।

orZeku f'k{kk dk Lo:i % स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद आर्थिक कमजोरी के कारण शिक्षा–क्रम में परिवर्तन करना सरकार के लिए सम्भव नहीं था, फिर भी शिक्षा में जो परिवर्तन किय गये हैं उनसे वर्तमान शिक्षा के स्वरूप का संस्थात्मक विकास अवश्य हुआ है। शिक्षा के प्रसार के लिए सरकार ने विद्यालय, महाविद्यालय एवं तकनीकी शिक्षण संस्थाओं की स्थापना कर अपने दायित्व का निर्वहन राज्य सरकारों को सौंपा और राज्य सरकारों ने शिक्षा विभाग और समाज कल्याण के माध्यम से शिक्षा प्रणाली स्वरूप को बढ़ाने का प्रयास किया है। इस प्रकार वर्तमान शिक्षा प्रणाली का स्वरूप बढ़ता ही जा रहा है।

orZeku e f'k{kk dk Lrj % प्रत्येक राष्ट्र अपनी उन्नति हेतु शिक्षा के स्तर में सुधार करना चाहता है। भारत में शिक्षा प्रणाली का स्तर कागजी किताबों पर आधारित है। विद्यार्थी शिक्षा को मानसिक, चारित्रिक एवं बौद्धिक विकास का साधन मानता है। पद्धति में स्वरोजगारोन्मुखता का अभाव होने से विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्राप्त करने पर बेकारी–बेरोजगारी का शिकार बन जाते हैं। साथ ही उनमें शारीरिक श्रम से दूर रहने और पाश्चात्यानुकरण की अंध प्रवृत्ति पनप रही है। शिक्षा का स्तर बहुस्तरीय होने पर भी आज के विद्यार्थियों को उसका पूरा लाभ नहीं मिल पा रहा है।

vkfFkd fodkl e orZeku f'k{kk dk egRo % वर्तमान शिक्षा का महत्व देश के आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है। यदि व्यक्ति शिक्षित एवं योग्य है तो संभव है कि वह नौकरी कर अपने तथा देश के आर्थिक विकास में भी अपना योगदान देगा। वर्तमान में वैज्ञानिकों ने कम्प्यूटर,

टेलीफोन, टेलीविजन ई–मेल, ई–कॉमर्स आदि संचार के साधनों का प्रसार किया है जिससे शिक्षा पद्धति में विकास होगा, लोग अधिक से अधिक शिक्षित होंगे तथा वे रोजगार प्रदान करने में सक्षम होंगे तब देश आर्थिक विकास की दृष्टि से सम्पन्न होगा। इस तरह देश के आर्थिक विकास में भी शिक्षा का महत्व कम नहीं है।

vkj mi;kxh cuku ds mik; % वर्तमान शिक्षा प्रणाली के स्वरूप स्तर में सुधार लाने के लिए उपायः

शिक्षा प्रणाली में आवश्यकतानुसार आमूल–चूल परिवर्तन किया जाये, विद्यार्थी व्यावहारिक एवं व्यावसायिक ज्ञान प्राप्त करें, शिक्षा स्तर में अनुशासन एवं नैतिकता का विशेष ध्यान रहे, ज्ञान–साधना को जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य माना जाये, राष्ट्रीय एवं सामाजिक दायित्व–निर्वाह के प्रति जागृत किया जाए, शिक्षा को आदर्श चरित्र एवं संस्कार–निर्माण का साधन समझा जाए, शिक्षा प्रणाली के समस्त दोषों का निवारण किया जाए, पाठ्यक्रम संतुलित बनाया जाये, माध्यमिक स्तर तक निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था हो, व्यावसायिक शिक्षा पर जोर दिया, युवकों के सर्वांगीण विकास और नैतिक उत्थान पर ध्यान रखा जाए, मेधावी युवकों को उच्च तकनीकी शिक्षा दी जाए। सरकार द्वारा प्रसार के लिए किये जा रहे प्रयास वास्तव में ही सराहनीय हैं। ◈

दोष हैं, मगर दूर करने के प्रयास नहीं

◈ **fuf'krk oek** बारहवीं
सरस्वती विद्यालय
दरियागंज, दिल्ली

> यद्यपि वर्तमान समय में हमारी सरकार व्यावसायिक शिक्षा पर जोर दे रही है किन्तु बढ़ती हुई नकल और गिरता हुआ शिक्षा का स्तर आयवर्धक है। शिक्षा का उद्देश्य 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना होना चाहिए। त्याग एवं बलिदान तथा कर्तव्य परायण शिक्षा पर जोर देना आवश्यक है, तभी शिक्षा का उद्देश्य पूरा हो सकता है। चरित्र मन में विकास के लिए दायित्वपूर्ण शिक्षा की आवश्यकता है।

f'क्षा मानव जीवन के लिए बहुत आवश्यक है। आज जो मनुष्य का विकास दिखाई दे रहा है, शिक्षा का परिणाम है। आदिकाल से ही मानव सीखता आ रहा है। स्वतंत्रता से पूर्व हमारे देश भारत में शिक्षा के साधन सीमित थे और शिक्षा ग्रहण करना बहुत कठिन था। स्वतंत्रता के पश्चात् शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति हुई, साधनों में वृद्धि हुई और जनसाधारण के लिए शिक्षा का ग्रहण करना सुगम हो गया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में परिवर्तन होना अति आवश्यक है। हमारे शिक्षाविद् एवं सरकार निरंतर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2001 में परिवर्तन की बात कहते हैं, किंतु वास्तविकता यह है कि शिक्षा प्रणाली को बदलने का प्रयास नहीं किया जा रहा है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में दोष तो निकाले जा रहे हैं किन्तु उन्हें दूर करने का प्रयास नहीं किया जा रहा है।

स्वतंत्रता से पूर्व आधुनिक शिक्षा पद्धति का जन्मदाता लार्ड मैकाले को माना जाता है। मैकाले का दृष्टिकोण था कि ऐसे लोग शिक्षा ग्रहण करें जो सरकारी कार्यालयों में काम कर सकें। उसका मुख्य उद्देश्य अंग्रेजी

सरकार को चलाना था। फिर शिक्षा को जनसाधारण ग्रहण कैसे कर सकता था।

उस समय पढ़े–लिखे व्यक्ति उंगलियों पर गिने जा सकते थे। विद्यालय और विश्वविद्यालयों की संख्या के बढ़ने के साथ ही विद्यार्थियों की संख्या भी बढ़ती गयी। बेरोजगारी का बढ़ना और भी स्वाभाविक था। हम यह भी कह सकते हैं कि उस समय की शिक्षा उद्देश्यविहीन थी। महात्मा गांधी ने इन्हीं कारणों से लार्ड मैकाले की शिक्षा की आलोचना की थी। आज हमारे देश की शिक्षा उस समय की शिक्षा प्रणाली से प्रभावित है।

स्वतंत्रता के पश्चात् प्रत्येक क्षेत्र में अद्भुत परिवर्तन हुआ है। शिक्षा के प्रचार–प्रसार हेतु शिक्षण संस्थाओं में वृद्धि हुई है किन्तु आधुनिक शिक्षा प्रणाली के दोषों के कारण ही व्यक्ति कार्य नहीं करना चाहता। भ्रष्टाचार एवं झूठ बोलकर धन अर्जित करना चाहता है। प्रत्येक क्षेत्र में निष्क्रियता बढ़ती जा रही है। इसी कारण योग्य एवं कर्मठ व्यक्ति को रोजगार नहीं मिल पाता। इसका प्रमुख कारण उद्देश्यविहीन शिक्षा ही है।

प्राचीन काल की तरह वर्तमान में कोई भी व्यक्ति अपने पैतृक व्यवसाय को नहीं करना चाहता। प्रत्येक व्यक्ति को पढ़कर नौकरी करने की इच्छा होती है। प्राचीन समय में कृषक का पुत्र कृषि, लकड़ी का काम करने वाले वाले का पुत्र लकड़ी का काम करता था जिससे बेरोजगारी कम थी। किंतु आज किसान का पुत्र पढ़–लिखकर कृषि कार्य नहीं करना चाहता। उसे नौकरी चाहिए।

यदि शिक्षित व्यक्ति वंश परम्परागत कार्यों को करे तो बेरोजगारी को रोका जा सकता है। शिक्षा तो व्यक्ति को सभ्य एवं समझदार बनाती है किन्तु आज का युवक शिक्षा को मात्र नौकरी करना ही मानता है, वह आज येनकेन प्रकारेण अच्छी श्रेणी में कक्षा उत्तीर्ण करना चाहता है। योग्यता आये या नहीं आये यही वर्तमान शिक्षा का ध्येय है।

नैतिकता व्यक्ति का विशेष गुण है। आदर्श नागरिक की नैतिकता प्रमुख विशेषता है। नैतिकता व्यक्ति को सभ्य बनाती है। सबको इसके संपर्क

में रहना चाहिए। स्वतंत्रता के पश्चात् विभिन्न शिक्षा आयोग बनाये गये, जैसे–विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग,माध्यमिक शिक्षा आयोग, सम्पूर्ण शिक्षा आयोग। इन आयोगों की नियुक्तियां व्यावहारिक रूप में इसलिए की गई थी ताकि शिक्षा प्रणाली में सुधार होगा और उद्देश्यपूर्ण शिक्षा दी जा सकेगी, किन्तु कोई अच्छे परिणाम सामने नहीं आये।

इसका प्रमुख कारण प्राथमिक शिक्षा की ओर ध्यान न देना रहा। जो सुझाव इन आयोगों ने दिये उन्हें सरकार लागू न कर सकी। आधुनिक शिक्षा प्रणाली मनुष्य को स्वावलम्बी न बना सकी। आज सुशिक्षित नवयुवक अपने परिवार और समाज के लिए मात्र बोझ बनकर रह जाते हैं। पढ़–लिखकर न तो घर के कामकाज के रह पाते हैं और न रोजगार ही प्राप्त कर पाते हैं। यहां तक स्वयं अपने लिए बोझ बनकर रह जाते हैं। इंजीनियर, वकील, डॉक्टर, अध्यापक, वैज्ञानिक बन जाने के बाद भी ग्रामीण लोग पूर्णतः उपेक्षित हैं। आज का पढ़ा–लिखा व्यक्ति अपनी भाषा, धर्म–संस्कृति का प्रयोग नहीं करना चाहता। पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव स्पष्ट प्राथमिक हो रहा है।

आज की शिक्षा मात्र पुस्तकीय ज्ञान ही प्रदान कर पा रही है। व्यक्ति मात्र लिखा–पढ़ा रहना चाहता है। यही कारण है कि अनेक प्रकार की समस्याएं इनके समक्ष आ रही है। आज की बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण इन समस्याओं ने और भी विकराल रूप धारण कर लिया है। सम्पूर्ण देश की शिक्षा के पाठ्यक्रम में भी बहुत अधिक भिन्नता है जिसके कारण शिक्षा महत्वहीन होती जा रही है।

शिक्षा प्रणाली में पूर्ण सुधार की आवश्यकता है। हमारी सरकार ने अभी सी.बी.इस.ई. परीक्षा में ग्रेड प्रणाली लागू की है जो कि एक सराहनीय कदम है। विभिन्न प्रकार के धर्मों एवं समुदायों के कारण शिक्षा नीति में सरकार निर्णय नहीं कर पाती, मात्र शिक्षा प्राप्त करने का लक्ष्य रह गया है। आज के वैज्ञानिक युग में ज्ञान, शान्ति, सद्भाव एवं नैतिकता की बहुत आवश्यकता है। मानवता दिन–प्रतिदिन समाप्त होती जा रही है। शिक्षा को उद्देश्यपूर्ण बनाने का प्रयास करना चाहिए।

यद्यपि वर्तमान समय में हमारी सरकार व्यावसायिक शिक्षा पर जोर दे रही है किन्तु बढ़ती हुई नकल और गिरता हुआ शिक्षा का स्तर आयवध्िक है। शिक्षा का उद्देश्य 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना होनी चाहिए। त्याग एवं बलिदान तथा कर्तव्य परायण शिक्षा पर जोर देना आवश्यक है तभी शिक्षा का उद्देश्य पूरा हो सकता है। चरित्र मन में विकास के लिए दायित्वपूर्ण शिक्षा की आवश्यकता है। ◈

शिक्षा ऐसी हो जो बोझ न बने

◈ **ik#y]** ग्यारहवीं
वैश्य मॉडल सी.सै. स्कूल
भिवानी, हरियाणा।

शैक्षणिक संस्थानों को ऐसे पाठ्यक्रम बनाने के लिए खुद को तैयार करना चाहिए जो विकसित भारत की सामाजिक और प्रौद्योगिकी संबंधी आश्यकताओं के प्रति संवेदनशील हो उठें। वर्तमान पाठ्यक्रम में विकास कार्यों की गतिविधियों को अनिवार्यतः स्थान दिया जाना चाहिए ताकि समाज की भावी पीढ़ी पूरी तरह से सामाजिक परिवर्तन के सभी पहलुओं के अनुकूल हो सके।

tैसा कि आप जानते हैं कि जीवन के सर्वांगीण विकास में बहुत लोगों ने किसी–न–किसी रूप में अपना योगदान दिया है। आज हम वर्तमान शिक्षा पद्धति के बारे में बात करेंगे कि जीवन के सर्वांगीण विकास में हम शिक्षा प्रणाली को और उपयोगी कैसे बनाएं।

f'k{kk dk lgh vFkZ% शिक्षा शब्द काफी छोटा सा है, इसका मतलब काफी बड़ा है। शिक्षा के द्वारा अपार ज्ञान मिलता है। शिक्षा के बिना इंसान जानवर के समान है। ज्ञान को कोई छीन नहीं सकता है और न ही कोई चुरा सकता है। धन तो आता है और चला जाता है लेकिन ज्ञान कभी नहीं जाता।

शिक्षा से मानव का व्यक्तित्व सम्पूर्ण, विनम्र और संसार के लिए उपयोगी बनता है। सही शिक्षा से मानवीय गरिमा, स्वाभिमान और विश्व बंधुत्व में बढ़ोतरी होती है। शिक्षा के माध्यम से ही मनुष्य अपने लक्ष्य को प्राप्त कर जीवन के सर्वांगीण विकास में मदद कर सकता है।

f'k{kk D;k vkj dlh % 'शिक्षा क्या है' में जीवन से संबंधित युवा मन के पूछे–अनपूछे प्रश्न हैं और जे.कृष्णमूर्ति की दूरदर्शी दृष्टि इन प्रश्नों को मानो भीतर से आलोकित कर देती है, पूरा समाधान कर देती है। ये प्रश्न शिक्षा के बारे में हैं, मन के बारे में हैं, जीवन के बारे में हैं, विविध ा हैं, किंतु सब एक दूसरे से जुड़े हैं।

''गंगा बस उतनी नहीं है, जो ऊपर–ऊपर हमें नजर आती है। गंगा तो पूरी की पूरी नदी है, शुरू से आखिर तक, जहां यह सागर से एक हो जाती है। सिर्फ सतह पर जो पानी दिख रहा है, वही गंगा है, यह सोचना तो नासमझी होगी। ठीक इसी तरह से हमारे होने में भी कई चीजें शामिल हैं, और हमारे इरादे, सूझें, हमारे अंदाजे, विकास, पूजा–पाठ, मंत्र ये सब के सब तो सतह पर ही हैं। इनकी हमें जांच–परख करनी ही होगी और तब इनसे मुक्त हो जाना होगा इन सबसे, सिर्फ उन एक या दो विचारों, एक या दो विधि–विधानों से नहीं, जिन्हें हम पसंद नहीं करते।''

क्या आप स्वयं से नहीं पूछते कि आप क्यों पढ़–लिख रहे हैं? क्या आप जानते हैं कि आपको शिक्षा क्यों दी जा रही है और इस तरह की शिक्षा का क्या अर्थ है? अभी भी हमारी समझ में शिक्षा का अर्थ है स्कूल जाना, पढ़ना–लिखना, सीखना, परीक्षाएं पास करना। फिर कॉलेज में जाने लगते हैं। वहां फिर कुछ महीनों या कुछ वर्षों तक कठिन परिश्रम करते हैं, परीक्षाएं पास करते हैं और कोई छोटी–मोटी नौकरी पा सकते हैं। फिर जो कुछ आपने सीखा होता है भूल जाते हैं। क्या इसे ही हम शिक्षा कहते हैं? क्या आप समझ रहे हैं कि मैं क्या कह रही हूं। क्या हम सब यही नहीं कर रहे हैं?

लड़कियां बी.ए., एम.ए. जैसी कुछ परीक्षाएं पास कर लेती हैं, विवाह कर लेती हैं, खाना पकाती हैं या कुछ और बन जाती हैं, बच्चों को जन्म देती हैं और इस तरह से अनेक वर्षों में पाई जाने वाली शिक्षा पूर्णतः व्यर्थ हो जाती है। हां, यह जरूर जान जाती हैं और अधिक साफ–सुथरी रहने लगती हैं, पर बस उतना ही होता है न! किसी तरह लड़के कोई तकनीकी काम पा जाते हैं, क्लर्क बन जाते हैं या किसी तरह शासकीय

सेवा में लग जाते हैं। इसके साथ ही सब समाप्त हो जाता है। अतः शिक्षा का अर्थ क्या यह नहीं है कि इन सभी समस्याओं का सामना करने के लिए वह आपको समर्थ बनाए।

orZeku e f'k{kk dk fparu % आजकल के बच्चे स्कूल को कैदखाना मानते हैं। जैसे ही स्कूल की छुट्टी होती है बच्चे इस तरह स्कूल से निकलते हैं मानो कैदी कैद से निकला हो। शिक्षा का प्रथम उद्देश्य बच्चों को एक परिपक्व इंसान बनाना होता है ताकि वह कल्पनाशील, वैचारिक रूप से स्वतंत्र और देश का भावी कर्णधार बन सके।

किंतु भारतीय शिक्षा पद्धति अपने इस उद्देश्य में पूर्ण सफलता नहीं प्राप्त कर सकी है। कारण बहुत सारे हैं। सबसे पहते तो यही कि अंगूठाछाप लोग निर्णय करते हैं कि बच्चों को क्या पढ़ना चाहिए, जो कुछ शिक्षाविद् हैं वो अपने दायरों और विचारधाराओं से बंधे हैं और उनसे निकलने या कुछ नया सोचने से डरते हैं। ऊपर से राजनीतिज्ञों का अपना एजेन्डा होता है। कुल मिलाकर शिक्षा पद्धति की ऐसी तैयारी करने के लिए सभी लोग चारों तरफ से आक्रमण कर रहे हैं। और ऊपर से तुर्रा ये कि ये सभी लोग समझते हैं कि सिर्फ वे ही शिक्षा का सही मार्गदर्शन कर रहे हैं।

मैं किसी एक पर दोषारोपण नहीं करना चाहती शिक्षा। पद्धति की रूपरेखा बनाने वालों को खुद अपने अंदर झांकना चाहिए और सोचना चाहिए कि क्या उसमें मूलभूत परिवर्तन की जरूरत है। आज हम रट्टामार छात्र पैदा कर रहे हैं। क्या यही हमारा एकमात्र उद्देश्य है।

आजकल शिक्षा के मायने बदल गए हैं, क्योंकि हम लोगों के सोचने का तरीका ही बदल गया है, या बकौल कुछ लोगों के, 'हम लोग ज्यादा ही व्यावहारिक और स्वार्थी हो गये हैं। हर बच्चा चाहता है कि जल्द–से–जल्द अपनी पढ़ाई पूरी करे और किसी जगह पर फिट हो जाए। उसने क्या पढ़ा और कितना पढ़ा, उसको इसका कोई मतलब नहीं है या जो पढ़ा उसका जीवन में कितना प्रयोग है। बच्चे को क्या दोष दें, उनके माता–पिता भी तो इसी लाइन पर ही सोचते हैं कि जल्दी से बच्चा पढ़–लिख ले तो पैसा कमाने की मशीन की तरह काम करे। क्या यही है शिक्षा का उद्देश्य?

;kxnku dl gkuk pkfg, ¼ बच्चों को स्कूलों में ऐसी शिक्षा देनी चाहिए कि वे पढ़ाई को बोझ न समझे, मजे से अपनी शिक्षा पूरी करे। आज की युवा पीढ़ी ऐसी शिक्षा प्रणाली चाहती है जो उसे खोजी और सृजनशील मन को सबल बनाने के साथ–साथ उसके सामने चुनौतियां प्रस्तुत करे। एक अच्छी शिक्षा प्रणाली में ऐसी क्षमता होनी चाहिए जो छात्रों की ज्ञान प्राप्ति की तीव्र जिज्ञासा को शांत कर सके।

शैक्षणिक संस्थाओं को ऐसे पाठ्यक्रम बनाने के लिए खुद को तैयार करना चाहिए जो विकसित भारत की सामाजिक और प्रौद्योगिकी संबंधी आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील हो उठे। वर्तमान पाठ्यक्रम में विकास कार्यों की गतिविधियों को अनिवार्यतः स्थान दिया जाना चाहिए ताकि समाज की भावी पीढ़ी पूरी तरह से सामाजिक परिवर्तन के सभी पहलुओं के अनुकूल हो सके। शिक्षा को न केवल किताबी ज्ञान बल्कि व्यावहारिक शास्त्र के रूप में प्रदान करना चाहिए, कंप्यूटर शिक्षा अनिवार्य कर देनी चाहिए। बच्चों से शिक्षा के 'एक्सट्रा लोड' को कम कर देना चाहिए और उनके मानसिक, तार्किक विकास और व्यक्तित्व विकास पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

प्रौढ़ शिक्षा के लिए स्वयंसेवी संगठनों को ज्यादा से ज्यादा प्रोत्साहन एवं सहायता दी जानी चाहिए। पैसा, नाम, नौकरी पाने के चक्कर में हम अपनी शिक्षा को अच्छे काम में न लगाकर अपना पूरा जीवन समाप्त कर लेते हैं। हमें अपनी शिक्षा को अपने राष्ट्र की उन्नति में लगाना चाहिए। ऐसी शिक्षा देनी चाहिए जो जीवन के सर्वांगीण विकास में काम आए। ◈

कोर्स थोड़े कम किए जाएं

◈ **Jfrdk xx** दसवीं
जी.सी.एम.कॉन्वेंट सी.सै.स्कूल,
महोबा रोड, नौगोंग
छत्तरपुर, मध्यप्रदेश

सरकार के द्वारा हर गांव में लगभग स्कूल बन रहे हैं। हर बच्चे को शिक्षित करना भी अनिवार्य कर दिया है पर अभी भी ऐसे हजारों बच्चे हैं जो स्कूल नहीं जाते हैं। कई गांव तो उनकी पिछड़ी मानसिकता की वजह से लड़की को स्कूल नहीं जाने देते हैं। सरकार स्कूल तो बनवा रही है पर उनमें पढ़ाई नाम की चीज नहीं होती है। पहली बात तो लोगों की मानसिकता की वजह से शिक्षा में विकास नहीं हो पा रहा है।

f'क्षा एक व्यक्ति के जीवन के लिए बहुत महत्वपूर्ण होती है। शिक्षा से हम नई–नई बातें जान सकते हैं। शिक्षा व्यक्ति को सच्चाई के रास्ते पर चलना सिखाती है। शिक्षा सबसे पहले हमारे घर से मिलती है। जब बच्चा छोटा होता है तो उसकी मां उसे बोलना, चलना आदि सिखाती है। मां बोलना सिखाती है। जब हम भाषा समझते हैं, तब ही अपने विचार एक–दूसरे से बांट पाते हैं।

शिक्षा का उद्देश्य केवल आदमी को शिक्षित करना नहीं बल्कि उसे दुनिया के बारे जानना–सिखाना है। सच्चाई के रास्ते पर चलना, कभी झूठ नहीं बोलना, हमेशा सब से प्यार करना, बड़ों का आदर करना और जो व्यक्ति शिक्षित होकर भी सच्चाई के रास्ते पर न चले, सबसे बुरा व्यवहार रखे, बड़ों का आदर ना करे उसकी शिक्षा बेकार है। शिक्षा केवल अच्छी नौकरी या पैसे कमाने के लिए नहीं बल्कि दुनिया को जानने के लिए दी जाती है।

वर्तमान की शिक्षा में कई सुधार होने चाहिए क्योंकि आजकल का जो शिक्षा स्तर है वह कई वजहों से गिरता जा रहा है। हमारे देश में शिक्षा

को कई कोर्स में बांट दिया है, जैसे सी.बी.एस.सी., स्टेट बोर्ड, और आई. सी.एस. सी। जिन बच्चों के माता–पिता ज्यादा अमीर होते हैं उन बच्चों को आई.सी.एस.सी. में डाला जाता है, क्योंकि इस में उच्च स्तर की शिक्षा दी जाती है।

जिन बच्चों के माता–पिता सामान्य वर्ग में हैं, उन्हें सी.बी.एस.सी. में डाला जाता है जिसमें भी अच्छी शिक्षा दी जाती है और जिन बच्चों के माता–पिता के पास ज्यादा पैसा नहीं होता उन्हें स्टेट बोर्ड में डाला जाता है। जो बच्चे आई.सी.एस.सी. से पढ़ कर निकलते हैं, उन्हें बहुत अच्छी नौकरी मिलती है।

आजकल प्राइवेट स्कूलों में ज्यादा अच्छी पढ़ाई होती है। सरकारी में शिक्षा तो दी जाती है पर बहुत बुरी। हम सब देख सकते हैं कि जो सरकारी स्कूल का शिक्षक या शिक्षिका होती है वो खुद अपने बच्चों को प्राइवेट स्कूल में पढ़ाते हैं। प्राइवेट स्कूलों में भले ही ज्यादा पैसा लगता है पर पढ़ाई बहुत अच्छी होती है।

आजकल तो नए रूल निकाल दिए हैं कि एस.सी. और एस.टी., ओ.बी. सी. वर्ग के जो बच्चे होते हैं उनके कम नंबरों पर भी वे कॉलेज में भर्ती कर लिए जाते हैं।

वर्तमान में ज्यादा से ज्यादा लोग शिक्षित हो रहे हैं। सब नए–नए सुझाव देते हैं। बच्चे छोटे से शिक्षा प्राप्त करना प्रारंभ कर देते हैं और बड़े होते–होते उन्हें बहुत ज्ञान आ जाता है। अब नए–नए आविष्कार हो रहे हैं यह सब शिक्षा की देन हैं। पहले के समय में लोग शिक्षित नहीं होते थे पर अब हैं।

सरकार के द्वारा हर गांव में लगभग स्कूल बन रहे हैं। हर बच्चे को शिक्षित करना भी अनिवार्य कर दिया है पर अभी भी ऐसे हजारों बच्चे हैं जो स्कूल नहीं जाते हैं। कई गांव तो उनकी पिछड़ी मानसिकता की वजह से लड़की को स्कूल नहीं जाने देते हैं। सरकार स्कूल तो बनवा रही है पर उसमें पढ़ाई नाम की चीज नहीं होती है। पहली बात तो लोगों की मानसिकता की वजह से शिक्षा में विकास नहीं हो पा रहा है।

भारत में शिक्षा को और उपयोगी बनाने के लिए कुछ काम करने होंगे, जैसे–

- पांचवीं और आठवीं कक्षा में बोर्ड करना होगा।
- दसवीं कक्षा में से होम बोर्ड हटाना होगा।
- जो बच्चा जिस विषय में रूचि रखता है उसके माता–पिता को वही विषय दिलवाना चाहिए।
- सरकारी स्कूलों में शिक्षकों पर अच्छे से ध्यान देना चाहिए और शिक्षकों के लिए नियम बना देने चाहिए ताकि वे ज्यादा से ज्यादा बच्चों को शिक्षित कर सकें।
- प्राइवेट स्कूलों में बच्चों को ज्यादा गृहकार्य नहीं देना चाहिए क्योंकि गृहकार्य की वजह से बच्चे अपना समय अन्य गतिविधियों में नहीं दे पाते।
- पढ़ाई के कोर्स को थोड़ा कम करना चाहिए ताकि बच्चे उन चीजों के बारे में ज्यादा जान सके।
- नौवीं कक्षा तक बच्चों को जबरन पास नहीं करना चाहिए।

शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को नौकरी दिलवाना नहीं बल्कि उसे शिक्षित करना और सही कामों को करने की प्रेरणा देना है। वो अच्छे काम करे, सबकी मदद करे आदि। शिक्षा के सिखाए नियमों पर चलना चाहिए। अनुशासन को मानना चाहिए। बच्चा शिक्षा पूरी करने के बाद भी अपने बड़ों का आदर न करे तो उसकी शिक्षा का कोई मतलब नहीं है। ◈

खटास में न बदल जाए कहीं शिक्षा की मिठास

◈ If'erk unh दसवीं
बाल भवन पब्लिक स्कूल
मयूर विहार, फेज–2, दिल्ली

ऐसा कहा जाता था कि 'शिक्षा की जड़ें कड़वी होती हैं लेकिन फल मीठे होते हैं।' परंतु कुछ कारणों से शिक्षा की मिठास कड़वे फलों में बदल गई है। इसलिए शिक्षक विभिन्न ऐसे तरीके ढूंढ रहे हैं जिनसे वह बढ़ती बदलाव की मांगों से इस शिक्षा पद्धति का मिलान कर सकें। उसके लिए हमें अभिमुख और भिन्न दोनों प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता है। तभी हम इन मुश्किल पड़ावों को पार कर पाएंगे।

vkजकल की इस भागती–दौड़ती, चालाक लोगों से भरी दुनिया में जीवित रहने के लिए शिक्षित होना बहुत ज़रूरी है। भारतीय सरकार ने भी इसके महत्व को ध्यान में रखते हुए सभी 14 वर्ष के बच्चों के लिए शिक्षा ग्रहण करना अनिवार्य बना दिया है। इसके लिए उन्होंने गरीब बच्चों को मुफ्त में शिक्षा देना शुरू कर दिया है। साथ ही गैर–सरकारी स्कूलों में भी निम्न श्रेणी के बच्चों के लिए कुछ सीटें अनिवार्य कर दी हैं।

लेकिन हमारे देश भारत में ज्ञान से अधिक महत्व अंकों पर दिया जाता है। यदि बच्चे परीक्षा में कम अंक लाते हैं तो मां–बाप की डांट–फटकार सुननी पड़ती है। मां–बाप बच्चे की 'फलां के लड़के' से तुलना करते हैं। बच्चों से दसवीं कक्षा तक सारी पढ़ाई रटने की उम्मीद की जाती है। यही वजह है कि इतने बच्चे विभिन्न विद्यालयों में पढ़ते हैं लेकिन कुछ ही वैज्ञानिक, डॉक्टर आदि बन पाते हैं।

किसी न किसी वजह से भारतीय विद्यालय पीछे रह गए हैं। मेरे अनुमान से कुछ कारण हैं–

- विद्यालयों में केवल लिखने का काम किया जाता है। अभ्यासिक कोई कार्य नहीं करवाया जाता है।
- अच्छे अध्यापकों की कमी।
- व्यक्तित्व विकास नहीं होता।
- माता–पिता बच्चों के शो को समझ नहीं पाते हैं।
- यदि कोई बच्चा अपनी उच्च शिक्षा के लिए विज्ञान के अलावा कुछ और लेता है तो अन्य माता–पिता और बच्चे उसकी काबलियत पर सवाल करते हैं।
- अधिकतर विद्यालय आजकल व्यावसायिक रूप से काम कर रहे हैं।

ऐसा कहा जाता था कि 'शिक्षा की जड़ें कड़वी होती हैं लेकिन फल मीठे होते हैं।' परंतु कुछ कारणों से शिक्षा की मिठास कड़वे फलों में बदल गई है। इसलिए शिक्षक विभिन्न ऐसे तरीके ढूंढ रहे हैं जिनसे वह बढ़ती बदलाव की मांगों से इस शिक्षा पद्धति का मिलान कर सकें। उसके लिए हमें अभिमुख और भिन्न दोनों प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता है। तभी हम इन मुश्किल पड़ावों को पार कर पाएंगे।

सबसे बड़ी समस्या जो शिक्षा पद्धति में देखी जा रही है वह है 'पढ़ाने की कार्यकारिता'। इस वक्त अध्यापकों को जो निश्चित आयु, निश्चित विषय, निश्चित उच्च शिक्षा में कौशलता आदि के लिए तैयार किया जाता है लेकिन यह सब कुछ आजकल की जिन्दगी को चलाने के मुश्किल कारणों से लड़ाई करने के लिए काफी नहीं है।

इन बढ़ते परिवर्तनों और मुश्किलों से लड़ने के लिए नई मांगें और बदलाव शिक्षा पद्धति में करने होंगे। ज्यादातर तो इसकी ज़रूरत को पहले ही समझ लिया गया है और बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए शिक्षा पद्धति में सुधार लाना शुरू भी कर दिया है। मेरे हिसाब से जो परिवर्तन शिक्षा पद्धति में लाने चाहिए, उनमें से कुछ हैं:–

- यदि हम देखें तो जो विषय हमें किताबों द्वारा पढ़ाए जाते हैं वे तो कोई भी इंसान पेड़ के नीचे भी बैठकर पढ़ा देगा। किताबों के बाहर से कुछ पढ़ना–पढ़ाना ही शिक्षा हैं। तो जो विषय हमारी किताबों में हैं, उन्हें पढ़ाने का ढंग बदल देना चाहिए।
- बदलता पाठ्यक्रम बच्चों के लिए बोझ बनता जा रहा है जिससे वह पढ़ाई का आनंद नहीं ले पाते।
- प्रेरणादायक कहानियों को महत्वपूर्ण विषयों की तरह पढ़ाई के साथ अनिवार्य कर देना चाहिए जिससे बच्चे विभिन्न्ता प्राप्त कर सकें।
- संरक्षण एक ऐसा मार्ग है जिससे हम काबिल किंतु गरीब बच्चों को पढ़ने में काफी सहायता कर पाएंगे।
- सालों से एन.सी.ई.आर.टी. ने काफी अच्छी और सहायक पुस्तकें बच्चों को प्रदान की हैं। पढ़ाई के माध्यमों को और भी विभिन्न प्रयोगों में लाया जा सकता है। उदाहरणतः माता–पिता, दादा–दादी आदि भी पढ़ाई की पद्धति की और शामिल हो सकते हैं और अपना योगदान दे सकते है।
- शिक्षा पद्धति शुरू से लेकर अंत तक सरकार द्वारा बनानी चाहिए। उन्हें सिर्फ अच्छे कलाकार, वैज्ञानिक, डॉक्टर आदि बनाने की ओर ध्यान न देते हुए अच्छे इंसान बनाने की ओर ध्यान देना चाहिए जो अपनी जिंदगी किसी के डर के बिना जी सके।
- शिक्षक इस बात पर भी ध्यान दें कि बच्चे की किसी एक क्षेत्र में रूचि जागरूक करे जिससे वह भविष्य में उसी क्षेत्र में आगे बढ़े।

शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे बच्चे स्वयं अपनी इच्छा से करें न कि अपने माता–पिता के दबाव से। ◈

सर्व शिक्षा को प्रभावी बनाया जाए

◈ **vfHk'kd fc'V** दसवीं
स्कॉलर्स एकेडमिक होम
हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखण्ड

शिक्षा द्वारा व्यक्ति में नैतिक भावनाओं का विकास होता है, जो व्यक्ति के चारित्रिक विकास में सहायक सिद्ध होती है। यह चरित्र ही व्यक्ति का भाग्य होता है। कोई भी व्यक्ति जन्म से न तो सदाचारी होता है न सत्यवादी। शिक्षा द्वारा ही मनुष्य में भले-बुरे का ज्ञान आता है, उसमें सदाचार, प्रेम, सहयोग, त्याग इत्यादि गुणों का विकास भी होता है।

f'kक्षा का व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। इसके अभाव में व्यक्ति का सर्वांगीण विकास नहीं हो सकता। शिक्षा ही सभ्यता एवं सस्कृति को सुरक्षित रखने का सर्वप्रमुख साधन है। मानव समाज ने जितनी भी प्रगति की है, उसके मूल में शिक्षा ही निहित है। शिक्षा द्वारा ही मानव अपनी पाश्विक प्रवृत्तियों का शोधन एवं मार्गन्तीकरण करता है और एक सामाजिक प्राणी बनता है।

शिक्षा मनुष्य के अंदर अच्छी विचारधारा लाती है और मनुष्य को समाज में प्रतिष्ठित करने का कार्य करती है। शिक्षा द्वारा मनुष्य में मनुष्यता आती है। शिक्षा के माध्यम से मानव समुदाय में अच्छे संस्कार डालने में पर्याप्त मदद मिलती है। शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् मानव के ज्ञानचक्षु खुल जाते हैं। वह सोच–समझकर निर्णय लेता है और अंदर की जितनी भी प्रकार की उलझने हैं उन्हें दूर करने में सक्षम होता है। शिक्षा मनुष्य को दुर्गुणों की पहचान में मदद करती है ताकि वह (मानव) सभी दुर्गुणों से दूरी बनाये रखे। शिक्षा वास्तविक अर्थों में मानव को जीवन जीना सिखाती है।

orZeku ,oa izkphu f'k{kk % भारत में कई वर्षों से शिक्षा की अनिवार्यता पर जोर दिया जा रहा है। उस समय की शिक्षा और वर्तमान शिक्षा में जमीन–आसमान का फर्क है। प्राचीनकाल में शिष्य अपने गुरुओं की शरण में रहकर उनसे शिक्षा प्राप्त करते थे। कोई पुस्तक या कॉपी नहीं होती थी। केवल गुरु उपदेश देते और शिष्य उनका पालन करते थे। प्राचीन काल में चरित्र निर्माण पर ही जोर दिया जाता था, इसलिए अधिकतर धार्मिक और नीति–संबंधी शिक्षा ही दी जाती थी। आज शिक्षा का उद्देश्य मौलिक रूप से कैरियर का निर्माण है। इसलिए अब शिक्षा में ज्ञान–विज्ञान और तकनीकों का अधिकाधिक समावेश हो गया है। इसके फलस्वरूप शिक्षा एक व्यवसाय बनती जा रही है।

f'k{kk dh vfuok;Zrk % साक्षरता हमारे लिए एक महत्वपूर्ण मुद्दा है आज। एक सभ्य समाज में अशिक्षित को अच्छी निगाहों से नहीं देखा जाता है। वह न तो केवल पुस्तक या अखबार पढ़ सकता है और न ही संसार की हलचलों पर सही निगाह रख सकता है। वह समाज को एक नई दिशा देने में अक्षम सिद्ध होता है। शिक्षा मनुष्य को शक्तिशाली बनाती है। मनुष्य के पास जितनी अधिक बौद्धिक क्षमता होती है, उसका सामर्थ्य उतना ही बढ़ जाता है। उसके लिए उन्नति के द्वार खुल जाते हैं। वह अपने तकनीकी कौशल का प्रयोग कर पूरी दूनिया में अलग–अलग स्थान बना सकता है। पर जो अशिक्षित होते हैं, उनके लिए तो धन के लाले ही पड़ जाते हैं। उन्हें समाज का एक कमजोर सदस्य माना जाता है।

lokZaxh.k fodkl ls rkRi;Z % सर्वांगीण विकास से हमारा तात्पर्य है पूर्ण रूप से विकास। आज सबका सर्वप्रथम एक ही लक्ष्य है कि हम अपने जीवन का पूर्ण रूप से विकास कैसे करें। हम शिक्षा पद्धति को किस तरह उपयोगी बनायें कि हम अपने तथा अपने देश का स्थान सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति में भी ऊँचा रखें। शिक्षा के मौलिक अधिकारों की जानकारी के द्वारा हम जीवन के सर्वांगीण विकास में अहम् भूमिका निभा सकते हैं। सर्वांगीण विकास का उल्लेख निम्नलिखित शीर्षकों के अंतर्गत किया जा रहा है।

O;fDrRo dk fodkl % शिक्षा व्यक्ति को उसके भावी जीवन के लिए तैयार करती है। शिक्षा के अभाव में व्यक्ति के समुन्नत व्यक्तित्व की कल्पना करना बेकार है। किसी भी व्यक्ति, समाज या राष्ट्र की प्रगति, शांति एवं स्थायित्व हेतु यह आवश्यक है कि छात्रों के व्यक्तित्व पर विशेष ध्यान दिया जाये। किसी भी व्यक्ति, समाज या राष्ट्र की आकांक्षा को पूर्ण करने में शिक्षा महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करती है। किसी विशिष्ट व्यवहार के प्रभाव की अनुभूति करने के उपरांत ही हम उस व्यवहार को अपने जीवन में अपनाने हेतु प्रेरित हो सकते हैं। शिक्षा से बालक में नैतिकता तथा मानसिकता इत्यादि का विकास कर जीवन का सर्वांगीण विकास होता है।

pkfj=d fodkl % शिक्षा द्वारा व्यक्ति में नैतिक भावनाओं का विकास होता है, जो व्यक्ति के चारित्रिक विकास में सहायक सिद्ध होती है। यह चरित्र ही व्यक्ति का भाग्य होता है। कोई भी व्यक्ति जन्म से न तो सदाचारी होता है न सत्यवादी। शिक्षा द्वारा ही मनुष्य में भले–बुरे का ज्ञान आता है, उसमें सदाचार, प्रेम, सहयोग, त्याग इत्यादि गुणों का विकास भी होता है।

ukxfjdrk dk fodkl % प्रजातंत्र की सफलता कर्तव्यनिष्ठ नागरिकों के निर्माण पर निर्भर करती है। शिक्षा द्वारा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में ऐसे गुणों एवं योग्यताओं का आविर्भाव किया जाता है जो उसे आदर्श नागरिकता की दिशा में प्रेरित करती है। आदर्श नागरिक के लिए यह आवश्यक है कि उसमें सामाजिक एवं राजनीतिक जागरूकता हो।

f'k{kk dh mi;ksfxrk % शिक्षा के उपयोग तो अनेक हैं पर उसे नई दिशा देने की आवश्यकता है। शिक्षा इस प्रकार की होनी चाहिए कि व्यक्ति अपने परिवेश से परिचित हो सके। शिक्षा के महत्व हो देखते हुये इसे और अधिक व्यापक बनाने की ज़रूरत है। शिक्षा को जन–जन तक पहुंचाने के लिए तीव्र प्रयास की जरूरत है। सर्वशिक्षा को प्रभावी तरीके से लागू करने की आवश्यकता है। ◈

जरूरत है शिक्षा पद्धति को व्यवहार में लाने की

◈ **bf'kdk vxoky** दसवीं
लवली पब्लिक स्कूल
प्रियदर्शिनी विहार, दिल्ली

पब्लिक स्कूलों में जहां शिक्षा का स्तर ऊँचा माना जाता है, वहां धन लोलुपता के कारण फीस की अधिकता के साथ पुस्तकों का बोझ गधे के बोझ से कम नहीं होता। एन.सी.ई.आर.टी. की पुस्तकें बहुत खर्च करके विद्यालय में विद्वतजनों की बैठकों के बाद बनती है, जिनमें अनेक गलतियों होती हैं। इन्हें नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता। साथ ही परीक्षा पत्र व मूल्यांकन पद्धति भी शिक्षा के व्यावसायीकरण का कारण है।

f'ाक्षा शब्द का अर्थ है–अध्ययन तथा ज्ञान ग्रहण। वर्तमान युग में शिक्षण के लिए ज्ञान, विद्या, एजूकेशन आदि अनेक पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग होता है। शिक्षा चेतन या अचेतन रूप से मनुष्य की रूचियों, समताओं, योग्यताओं और सामाजिक मूल्यों को ध्यान में रखते हुए आवश्यकता के अनुसार स्वतंत्रता देकर उसका सर्वांगीण विकास करती है। यह उसके आचरण को इस प्रकार परिवर्तित करती है जिससे शिक्षार्थी और समाज दोनों की प्रगति होती है।

ज्ञान से मस्तिष्क में नए विचारों का जन्म होता है। उसके जन्मजाती गुणों का विकास होता है। भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली पर आधारित है। आज की शिक्षा प्रणाली ज्ञान–मंदिर के स्थान पर अज्ञानता से उत्पन्न कलुष का केन्द्र बनकर रह गई है। यह मनुष्य को बिना सींग और पूंछ का पशु बनाने का काम कर रही है। आज की शिक्षा राजनैतिक पहुंच का मानदंड हो गई है। ऐसे में शिक्षा का स्तर क्या हो सकता है?

भ्रष्टाचार का बोलबाल इतना अधिक है कि शिक्षा एक व्यवसाय बन कर रह गई है। शिक्षा पर खर्च होने वाला व्यय कुछ अधिकारियों में और कुछ नौकरशाहों में बंट जाता है। बची राशि आसमान छूने जैसी बात बनकर रह जाती है। शिक्षा सभाओं में धर्म निरपेक्षता की बात होती है। शिक्षण संस्थाओं में कुछ लोग राजनीतिज्ञ होते हैं, जिनका शिक्षा से कुछ सम्बंध नहीं होता। इसका परिणाम, नियुक्तियों व पाठ्यक्रम राजनीतिक दृष्टिकोण से होते हैं, इसलिए अनुशासनहीनता भी शुरू हो जाती है।

शिक्षक जो शिक्षा की रीढ़ है वह खुद विद्यार्थी को अपने थोड़े से स्वार्थ के लिए शिक्षा विहीन छोड़ देता है। अनेक शिक्षक केवल पैसे कमाने जाते हैं, अध्यापन से उनका कोई नाता नहीं होता। नियुक्तियों के समय पैसे को महत्व दिया जाता है, इससे ऐसे शिक्षक नियुक्त होते हैं जिन्हें न तो विषय का ज्ञान होता है न ही शिक्षा देना आता है।

पब्लिक स्कूलों में जहां शिक्षा का स्तर ऊंचा माना जाता है, वहां धन लोलुपता के कारण फीस की अधिकता के साथ पुस्तकों का बोझ गधे के बोझ से कम नहीं होता। एन.सी.ई.आर.टी. की पुस्तकें बहुत खर्च करके विद्यालय में की बैठकों के बाद बनती है, जिनमें अनेक गलतियां होती हैं, इन्हें नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता। साथ ही परीक्षा पत्र व मूल्यांकन पद्धति भी शिक्षा के व्यावसायीकरण का कारण है।

नेताओं के संरक्षण में पल रहे शिक्षक व शिक्षण संस्थाएं शिक्षा के कर्णधार माने जाते हैं। फिर चाहे ये शिक्षा और देश की प्रतिभा को गिराएं या उठाएं, इन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। इसको रोकने का उपाय है, वातावरण शिक्षामय हो, शिक्षक अनुशासनपूर्ण हों, पाठ्यक्रम में सुधार हो, शिक्षण संस्थाओं में शिक्षा ज्यादा महत्वपूर्ण हो, सिफारिश के स्थान पर योग्यता को महत्व दिया जाए।

आजकल लोग हर जगह अपना फायदा देखते हैं, भले ही उस फायदे से किसी बेचारे की जिंदगी खराब हो। शिक्षा को मूल्य–रत्न कहा गया है, उसका जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। वह मानव को सच्चे अर्थों में महान बनाती है उसका बौद्धिक, मानसिक, आत्मिक विकास करती है। भर्तृहरि

ने कहा है, ''विद्या बिना मनुष्य पूंछ व सींग रहित पशु है 'पशु पुच्छ विषाण हीनः।' प्राचीन भारत में शिक्षा के लिए ऋषियों के आश्रम थे, गुरुकुल थे। इन आश्रमों और गुरुकुलों में छात्रों को नैतिक, आध्यात्मिक शिक्षा तो दी जाती थी, साथ ही जीवन में उन्हें जो आगे चलकर करना है उसकी भी शिक्षा दी जाती थी, जैसे राजकुमारों को राजनीति की शिक्षा। चन्द्रगुप्त मौर्य को चाणक्य ने राजनीति की शिक्षा दी थी।

आधुनिक युग की भारतीय शिक्षा व्यवस्था ब्रिटिशकाल की देन है। लॉर्ड मैकाले ने ब्रिटिश संसद में कहा था, ''मुझे विश्वास है कि इस शिक्षा योजना से भारत में ऐसा शिक्षित वर्ग बन जाएगा जो रक्त और रंग से तो भारतीय होगा पर रूचि, विचार और भाषा से अंग्रेज।''निश्चित रूप से आज की शिक्षा प्रणाली ने मानव मस्तिष्क को इतना संकुचित बना दिया कि ज्ञान का महत्व ही नष्ट हो गया और शिक्षा का उद्देश्य नौकरी तक ही सिमट गया।

आज की शिक्षा पद्धति व्यक्ति की विशेषताओं को उभारने, निखारने तथा जीवन की व्यावहारिक कठिनाइयों को हल करने में सर्वथा असफल है। 10+2+3 की प्रणाली को भी जिस उद्देश्य से आरंभ किया गया था, उसका भी लाभ छात्रों को नहीं मिल पा रहा है। राष्ट्र को सक्षम बनाने के लिए शिक्षा व्यवसाय का सुदृढ़ व व्यावहारिक होना नितांत आवश्यक है। नई शिक्षा प्रणाली सैद्धांतिक रूप से स्वस्थ, पुष्ट व समृद्ध है परंतु आज आवश्यकता है उसे व्यवहार में लाने की है ताकि राष्ट्र का विकास हो। इस शिक्षा नीति को कार्य रूप देने पर ही देश में ज्ञान–विज्ञान की उन्नति व समृद्धि संभव है। ◈

सैनिक शिक्षा का भी हो प्रावधान

◈ **vfouk'k fnukukFk** नौवीं
आर.बी.टी.विद्यालय
डोंबिवली (पूर्व) ठाणे, महाराष्ट्र

प्राकृतिक आपदाओं जैसे भूकंप, बाढ़ आदि के समय सैनिक शिक्षा प्राप्त सैनिक देश की अधिक सेवा करते हैं। देश की आंतरिक अशांति जैसे हड़ताल, अव्यवस्था के लिए भी सैनिक शिक्षा महत्वपूर्ण है। उसका एक और महत्वपूर्ण लाभ यह है कि आजकल छात्रों और नवयुवकों में अनुशासनहीनता बड़ी तेजी से बढ़ रही है। इस दोष को दूर करने के लिए सैनिक शिक्षा की आवश्कता है।

समय का परिवर्तन सबको बदल देता है। समय के अनुसार ही शिक्षण स्वरूप भी बदल जाता है। शिक्षण स्वरूप के अनुसार विद्यार्थी भी बदलता है। यह परिवर्तन का ही प्रभाव है कि पुराने गुरुकुल का शिष्य आज इक्कीसवीं सदी का तेज तर्रार विद्यार्थी बन गया है।

मानव सृष्टि भी अनुपम उपहार है। उसे जीवन और गति के साथ विवेक भी मिला है जो प्रकृति के अन्य प्राणियों से इसे अलग करता है। विवेक और शिक्षा एक–दूसरे के पूरक हैं। मानव शिक्षा द्वारा ज्ञान प्राप्त कर अपना संपूर्ण विकास करता है। यह ज्ञान यदि समय के अनुरूप परिवर्तित, अनुकूल, वैज्ञानिक और उन्नत हो तो मानव के विकास को पंख लग जाते हैं और मानव सर्वांगीण विकास कर अपना जीवन सार्थक कर पाता है।

महर्षि अरविंद ने कहा है– 'सच्ची शिक्षा का प्रथम सिद्धांत यह है कि कोई भी वस्तु सिखाई नहीं जाती है।' उनका आशय है कि व्यक्ति के अंतर्मन में ज्ञान का भंडार होता है। उत्तम शिक्षा वही है जो बालकों का

बौद्धिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक विकास कर सके और उन्हें समाज, देश तथा विश्व कल्याण की ओर प्रवृत्त कर सके। 31 जुलाई, 1937 के 'हरिजन' में कहा अथवा महात्मा गांधी ने लिखा था–'शिक्षा से मेरा अभिप्राय बच्चों के शारीरिक, बौद्धिक एवं नैतिक विकास से है। बच्चे की अंतःशक्ति एवं सौंदर्य को विकसित करना ही शिक्षा है।'

शिक्षा का उद्देश्य है व्यक्ति को सुसंस्कृत एवं मानवीय गुणों से युक्त बनाना। परंतु जिस प्रकार की शिक्षा हमारे यहां आज प्रचलित है, उससे ना ही हमें उत्तम संस्कार मिल रहे हैं और न ही जीवन के श्रेष्ठ लक्ष्यों की ओर हमारी प्रवृत्ति हो रही है। इस शिक्षा से तो हम पाश्चात्य जगत के प्रभावों को ही अधिकाधिक ग्रहण करते जा रहे हैं। भौतिक सुखों के प्रति हमारी लिप्सा बढ़ती जा रही है। हम निरंकुश तथा स्वार्थी होते जा रहे हैं और अपनी महान विरासत से कटते जा रहे हैं। यह चिंता का विषय है। इस पर गहन विचार करने की आवश्यकता है। नैतिकता ही शिक्षा का मूल आधार होना चाहिए।

आज के कम्प्यूटर युग का विद्यार्थी चालीस पचास–साल पहले के विद्यार्थी से बहुत अलग है। तब अभिभावक ही विद्यार्थी के भाग्य का फैसला करते थे, परंतु आज का विद्यार्थी अपने जीवन की दिशा स्वयं चुन सकता है। वह अपनी आवश्यकतानुसार किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ सकता है। प्रत्येक विद्यार्थी का अपना एक सपना होता है। उस सपने को साकार करने के लिए विद्यार्थी प्रत्येक मार्ग का उपयोग करता है।

आज की शिक्षण पद्धति में कुछ बदलाव कर उसमें कुछ सुधार करना आवश्यक है। पुस्तकों में उन विषयों का समावेश हो, जो ज्ञानप्रद, रोचक और राष्ट्रीय भावनाओं का विकास करने वाले हों तथा जिनके अध्ययन से विद्यार्थी भारतीय अध्ययन को ठीक तरह से समझ सकें। पुस्तकों का मूल्य कम से कम हो, जिससे गरीब विद्यार्थी भी उसे आसानी से खरीद सकें। विद्यार्थी को उसके वर्षभर की प्रगति, स्वास्थ्य, चरित्र, सामान्य ज्ञान एवं विज्ञान जैसे विषयों के प्रायौगिक कार्य के आधार पर परीक्षा में सफलता प्रमाण–पत्र देना चाहिए।

विद्यालयों में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करना चाहिए जिनसे सभी विद्यार्थियों को अपना गुण प्रदर्शित करने का अवसर मिले। प्रत्येक विद्यालय में खेल संबंधी प्रतियोगिताएं कम से कम वर्ष में दो–तीन बार हों जिससे विद्यार्थी विद्यालय के खेल में अपना उत्साह दिखाएं। विद्यालयों एवं कॉलेजों में ही विद्यार्थी के गुणों का पता चलता है। चाहे वे सरकारी विद्यालय हों या गैर–सरकारी, चाहे वे विद्यालय हों या कॉलेज। सभी विद्यालय, कॉलेजों एवं हाईस्कूलों में नेशनल, स्टेट एवं जिला स्तर पर विभिन्न खेल प्रतियोगिताएं आयोजित की जानी चाहिए।

सभी विद्यालयों की तरह कॉलेजों में भी गणवेश पहनना अनिवार्य होना चाहिए। इससे विद्यार्थी में न केवल समता पैदा होती बल्कि उनकी आज की फैशनपरस्ती पर भी अंकुश रहता है। लड़कियों के पाठ्यक्रम में सामान्य विषय के अलावा गृह विज्ञान, शिशुपालन एवं अन्य स्त्रीपयोगी वस्तुओं को भी महत्व देना चाहिए।

प्रत्येक कक्षा में सर्वप्रथम मूल्य शिक्षण का कालांश हो, इसमें शिक्षकों को विद्यार्थियों को अनुशासन के महत्व को समझाना चाहिए। प्रत्येक विद्यालय में पहली कक्षा से ही भाषण देना,योगा, खेलकूद, पर्यावरण का महत्व तथा संगणक जैसे विषयों का भी कालांश रखना चाहिए। इसी प्रकार बच्चों की पढ़ाई के पहले स्वस्थ रहना आवश्यक है जिससे उनका मन पढ़ाई में भी लगता है। इसके लिए भी विद्यालय में योगा एवं खेलकूद का कालांश होना चाहिए। इससे हम आसपास में बढ़ती बीमारियों से बच सकेंगे।

आज का युग कम्प्यूटर का युग है, यह हम सभी जानते हैं। इसलिए विद्यालय में संगणक का विषय का समावेश अत्यंत आवश्यक है। विद्यालय में संगणक के अलावा प्रयोगशाला का भी समावेश होना चाहिए। कंप्यूटर के बिना तो यह दुनिया चलती ही नहीं है, अतः प्रत्येक बच्चे को कम्प्यूटर का सही ज्ञान देना चाहिए।

कम्प्यूटर से तेजी से अचूक गणना की जा सकती है। आज के स्कूलों और कॉलेजों में विद्यार्थी कम्प्यूटर तकनीक से बैंकों, कारखानों, प्रयोगशालाओं,

अस्पतालों में कार्य कर रहे हैं। आई.आई.टी. से निकले विद्यार्थी अनेक देशों में कार्यरत हैं। सूचना एवं प्रौद्योगिकी में भारत भी एक महाशक्ति बन गया है किंतु कम्प्यूटर के बहुत से दुरुपयोगी कार्य भी हैं। इन बातों को ध्यान में रखकर हमें उचित विचार कर लेना चाहिए।

प्राकृतिक आपदाओं, जैसे भूकंप, बाढ़ आदि समय सैनिकी शिक्षा प्राप्त सैनिक देश की अधिक सेवा करते हैं। देश की आंतरिक अशांति, जैसे हड़ताल, अव्यवस्था के लिए भी सैनिक शिक्षा महत्वपूर्ण है। उसका एक और महत्वपूर्ण लाभ यह है कि आजकल छात्रों और नवयुवकों में अनुशासनहीनता बड़ी तेजी से बढ़ रही है। इस दोष को दूर करने के लिए सैनिक शिक्षा आवश्यक है। सैनिकों को नियमित परेड करनी पड़ती है, जिससे स्वास्थ्य ठीक रहता है, इसलिए देश में सैनिक शिक्षा अनिवार्य कर दी जाये तो उससे हर हालत में लाभ होगा।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में उपयुक्त बदलाव कर हम विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास कर हमें देश के अच्छे नागरिक, अच्छे अध्यापक, अच्छे नेता, कुशल डॉक्टर और सच्चे सपूत मिल जाएंगे और हमारा देश भी प्रगति के मार्ग पर आगे बढ़ेगा। ◈

अधिक से अधिक खुलें बहुद्देश्यीय स्कूल

◈ **dkfr'd [k.Mjh]** दसवीं
रेनबो पब्लिक स्कूल, चौरास
टिहरी गढ़ल, उत्तराखण्ड

शिक्षा का व्यावसायीकरण व्यापक होना चाहिए। ज्यादा से ज्यादा कृषि स्कूल, तकनीकी संस्थाएं, कमर्शल स्कूल तथा बहुद्देशीय स्कूलों की स्थापना की जानी चाहिए। कार्य अनुभव पर बल दिया जाना चाहिए। विदेशी भाषाओं का अध्ययन कर सूचना संचार तथा ज्ञान एवं सांस्कृतिक प्राप्ति के दृष्टिकोण से पर्याप्त महत्व रखती है। पाठ्य सहायक क्रियाओं के गठन पर अधिक बल दिया जाना चाहिए। विज्ञान क्लब, विज्ञान प्रदर्शनी, समाज सेवा कैंप आदि का व्यवस्था की जानी चाहिए।

*^**fo**द्या बन्धुजनों विदेशगमने, विद्या परा देवता'*
विद्या राजस पूजिता न तु धनम्, विद्या विहीनः पशुः।।''

शिक्षा तथा मानव जाति का जन्म–जन्मान्तर का संबंध है। शिक्षा का वास्तविक अर्थ मनुष्य को सच्चे अर्थों में मानव बनाना तथा जीवन में प्रगतिशील सांस्कृतिक तथा सभ्य बनाना है।

- जाकिर हुसैन का दृष्टिकोण– 'शिक्षा सम्पूर्ण जीवन का अर्थ है। यह जन्म से लेकर मृत्यु तक जारी रहती है।'
- ऋगवेद– 'शिक्षा मनुष्य को आत्म–विश्वासी तथा स्वार्थहीन बनाती है।'
- शंकराचार्य का दृष्टिकोण– 'शिक्षा का अर्थ है स्वयं को जानना।'
- गांधी जी का दृष्टिकोण– 'शिक्षा से मेरा अभिप्राय है बच्चे तथा मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा से सर्वोत्तम तत्वों को प्राप्त करना'।

प्राचीन समय में बालक गुरुकुल में जाकर शिक्षा ग्रहण करते थे जिसमें बालकों को वेद मंत्रों का ज्ञान करवाया जाता था। प्राचीन समय में पुस्तकीय ज्ञान पर बल न देकर व्याख्यान विधि पर बल दिया जाता था। मुख्य रूप से अस्त्र–शस्त्रों की विद्या दी जाती थी।

वैदिककालीन शिक्षा के बाद भारतीय समाज में बौद्ध कालीन शिक्षा का प्रचार–प्रसार हुआ, उस समय शिक्षा के विश्व विख्यात केन्द्र नालंदा तथा तक्षशिला आज भी हमारे सामने प्रस्तुत हैं।

मध्यकाल में भारतीय शिक्षा में मुस्लिम शिक्षा का प्रचार–प्रसार हुआ, जिसमें शिक्षा और मदरसा रहे, जिसमें उर्दू, अरबी, फारसी भाषाओं की शिक्षा दी जाती है। मुस्लिम शासन पतन के बाद भारतीय समाज में अंग्रेजी शिक्षा का प्रसार व प्रचार हुआ। ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत में उच्च शिक्षा के लिए कुछ संस्थाएं स्थापित कीं जिसमें कुछ हैं–कलकत्ता मदरसा, बनारस संस्कृत कॉलेज, फोर्ट विलियम कॉलेज (कोलकाता), पूना संस्कृत कॉलेज आदि।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमारे देश में पहली शिक्षा नीति की घोषणा 1978 में की गई थी। हमारे देश में नई शिक्षा नीति मई, 1986 में घोषित की गई जिसका मुख्य उद्देश्य था–

- ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिभावान छात्रों को उच्च कोटि की शिक्षा के अवसर उपलब्ध करवाना।
- राष्ट्र एकता का विकास करना।
- शिक्षक प्रशिक्षण एवं सुविधाओं का प्रचार करना।
- सम्पूर्ण देश में एक सामान्य माध्यम के द्वारा शिक्षा की सुविधाएं प्रदान करवाना।
- देश के पिछड़े वर्ग के छात्रों को शिक्षा के पर्याप्त अवसरों से लाभान्वित करवाना।

- नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति अंतर्गत नवोदय विद्यालयों की स्थापना हर जिले में करने का सुझाव दिया गया।

orleku f'k{kk dk vkj mi;kxh dl cuk, % शिक्षा और आधुनिकीरण का परस्पर गहरा सम्बंध है। शिक्षा आधुनिकीरण में सहायक होती है और आधुनिकीरण शिक्षा को बेहतर बनाने में सहायता प्रदान करता है। शिक्षा का दूसरा नाम है– मानवीय संसाधनों का विकास। यह अधिक, औद्योगिकरण, टक्नॉलोजीकल तथा अन्य सामाजिक क्षेत्रों में काम करने के लिए कुशल व्यक्ति का निर्माण करती है।

शिक्षा का एक उद्देश्य उपादेयता में वृद्धि होना चाहिए। इसके लिए विज्ञान की शिक्षा, कार्य अनुभव, सेकें शिक्षा एवं राष्ट्रीय एकता। शिक्षा का दूसरा उद्देश्य है जिसमें सभी स्तरों पर सभी विद्यार्थियों के लिए सामाजिक एवं राष्ट्रीय शिक्षा को अनिवार्य बनाना चाहिए। शिक्षा के द्वारा आधुनिकीकरण की गति को तेज करना चाहिए, समाज के विभिन्न स्तरों से संबंधित प्रर्याप्त कुशलता संबंधी प्रतिभाशाली व्यक्तियों का विकास करना चाहिए।

लोकतांत्रिक नागरिकता का विकास करने के लिए शिक्षा द्वारा चिंतन स्पष्ट अभिव्यक्ति, सामुदायिक जीवन, सच्ची देशभक्ति तथा विश्व नागरिकता को विकसित करना चाहिए, नेतृत्व के गुणों के विकास से भी गति तेज करने में भी सहायता मिलेगी। व्यक्तित्व के विकास में रचनात्मक शक्ति, बौद्धिक प्रतिभा, सौन्दर्यात्मक अनुभूति, नैतिक भावना, सामाजिक भावना आदि सम्मिलित हैं। शिक्षा में पाठ्यक्रम विद्यार्थी केन्द्रित होना चाहिए।

शिक्षा का व्यावसायीकरण व्यापक होना चाहिए। ज्यादा से ज्यादा कृषि स्कूल, तकनीकी संस्थाएं, कमर्शल स्कूल तथा बहुद्देश्यीय स्कूलों की स्थापना की जानी चाहिए। कार्य अनुभव पर बल दिया जाना चाहिए।

विदेशी भाषाओं का अध्ययन कर सूचना संचार तथा ज्ञान एवं संस्कृति प्राप्ति के दृष्टिकोण से पर्याप्त महत्व रहती है। पाठ्य सहायक क्रियाओं

के गठन पर अधिक बल दिया जाना चाहिए। विज्ञान क्लब, विज्ञान प्रदर्शनी, समाज सेवा, कैंप आदि की व्यवस्था की जानी चाहिए। स्त्री शिक्षा एवं जन शिक्षा आदि पर बल देना चाहिए।

आधुनिकरण की प्रगति को सीधा शैक्षिक प्रगति के साथ संबंधित करना चाहिए। तेजी से आधुनिकीकरण का यही एक सुनिश्चित मार्ग है कि शिक्षा का विस्तार किया जाये। शिक्षित एवं कौशल सम्पन्न नागरिकों का निर्माण किया जाये और पर्याप्त संख्या में सक्षम बौद्धिक व्यक्तियों को प्रशिक्षित किया जाये। बौद्धिक व्यक्ति समाज के सभी वर्गों से लिये जायें परंतु इनकी वफादारियां भारत की मिट्टी की जड़ों में जम चुकी हों। शिल्प कौशलों में परिवर्तन होना चाहिए। व्यावसायिक विषयों, विज्ञान शिक्षा एवं शोध कार्य पर अधिक बल दिया जाना चाहिए। देश में ऐसे मुख्य विश्वविद्यालयों की स्थापना होनी चाहिए जिनका स्तर विश्व के विख्यात विश्व विद्यालयों के बराबर हो। हमारी उच्चतर शिक्षा पद्धति में इसकी बहुत आवश्यकता हैं।

आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में विज्ञान एवं तकनीक पर आधारित शिक्षा एक सशक्त साधन है। परंतु यदि आधुनिकीरण को एक सजीव शक्ति बनाना है तो इसे आत्मा की शक्ति लेनी होगी। आधुनिक समाज में निरंतर बढ़ रहे ज्ञान एवं विकास शक्ति को दायित्व तथा नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों में समन्वित करना होगा।

पं. जवाहरलाल नेहरू के कथानुसार, ''हम विज्ञान के सत्य को झुठला नहीं सकते क्योंकि वह जीवन के बुनियादी तथ्य प्रस्तुत करता है। किन्तु हम उन अनिवार्य सिद्धांतों को भी नहीं झुला सकते हैं जिनका युगों से भारत पोषण करता आ रहा है। अतः हमें पूरी शक्ति के साथ औद्योगिक प्रगति की ओर बढ़ना चाहिए। साथ में यह भी याद रखना चाहिए कि सहिष्णुता, करुणा एवं विवेक के बिना भौतिक संवृद्धि अंततः धूल में मिल जायेगी। ◈

नैतिक मूल्यों पर देना होगा ध्यान

◈ lk{kh pkiMk आठवीं
दिल्ली पब्लिक स्कूल
गांधीनगर, गुजरात

विद्यालयों में शिक्षा प्रणाली ऐसी होनी चाहिए जिससे बच्चे के मानसिक, शारीरिक, बौद्धिक एवं नैतिक विकास के साथ पहलुओं पर भी ध्यान दिया जाये। शिक्षा एक प्रतिश्ठित एवं आदरणीय कार्य है, इसे धन की लालसा में व्यावसायिक बनाने से रोकना होगा। नैतिक मूल्यों पर ध्यान देना होगा। क्योंकि आज का बालक ही भविश्य में शिक्षक, नेता, इंजीनियर, डॉक्टर या वैज्ञानिक बनेगा।

शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों में सभी प्रकार की योग्यताओं को विकासित करना होता है। एक व्यक्ति का सर्वांगीण विकास तभी होता है जब उसे किताबी शिक्षा के साथ–साथ नैतिक शिक्षा भी मिले। किताबी ज्ञान से व्यक्ति अच्छे नंबर लाकर परीक्षा में सफल ज़रूर होता है लेकिन जीवन की परीक्षा के साथ–साथ अच्छे संस्कार भी मिलें।

संस्कारों से उसमें सच्चाई, ईमानदारी, कर्तव्यपरायणता एवं नम्रता जैसे गुणों का विकास होता है। हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्राचीन शिक्षा प्रणाली से काफी बदलाव आए हैं। समय के अनुसार किसी भी प्रणाली में बदलाव आना स्वाभाविक है लेकिन हमें ये सोचना होगा कि बदलाव इतना ज़्यादा न आ जाये या वह हम पर इतना हावी न हो कि हमारी संस्कृति ही नष्ट हो जाए।

आजकल हमारी शिक्षा पद्धति में शिक्षा के साथ–साथ खेल कूद, नृत्य, भाषण प्रतियोगिताएं, गायन प्रतियोगिताएं एवं कई अन्य चीजों का भी समावेश किया गया है जिससे बच्चों की प्रतिभा निखर कर बाहर

आती है। बच्चों को शिक्षा के साथ–साथ अपनी रूचि के अनुसार अपनी प्रतिभा को निखारने का मौका मिलता है। अब प्रश्न यह है कि वर्तमान शिक्षा को और उपयोगी कैसे बनाया जाए। विद्यालयों के परिसर में कुछ ऐसी प्रयोगशालएं बनानी चाहिए जहां ऐसे बच्चों को, जिनमें अतिरिक्त प्रतिभा होती है, उन्हें विशेष रूप से प्रशिक्षित करना चाहिए।

कक्षा के सभी बच्चों को एक साथ नृत्य सिखाना, संगीत सिखाना या चित्रकारी करवाने से बेहतर है कि बच्चों के समूह बनाकर अपनी–अपनी रूचि के अनुसार उनकी कला को विकसित किया जाये। हर बच्चे के अन्दर–अलग हुनर होता है, अलग प्रतिभा होती है। सब चीजों में महारथ हासिल नहीं कर पाता है बच्चा।

शिक्षा मनुष्य के जीवन की आधारशिला है और विद्यालय उस आधार शिला पर बना इंसान का प्रथम सोपान। लेकिन आज के समय में मध्यमवर्गीय व्यक्ति के लिए अपने अच्छे विद्यालयों की बढ़ती फीस एक चिंता का विषय है। सरकार को इस विषय पर सोचना होगा और प्राइवेट स्कूलों पर फीस के लिए एक नियत राशि तय करनी होगी, इसके उपरांत गांवों एवं शहरों में उच्च दर्जे के सरकारी विद्यालय खोलने होंगे जिनमें वे सभी सुविधाएं हों जो एक बेहतर विद्यालय में होनी चाहिए।

हम सर्वांगीण विकास की बात कर रहे हैं लेकिन हो क्या रहा है? बड़े विद्यालयों में प्रवेश के लिए ही अतिरिक्त राशि मांग ली जाती है। क्या यह पैसों की भूख कई बच्चों के भविष्य को नहीं निगल रही? इसके अलावा भी कई ऐसे विषय हैं जो वर्तमान शिक्षा प्रणाली पर प्रश्न–चिन्ह हैं। बच्चों पर पढ़ाई का अतिरिक्त बोझ डाला जाता है जिसमें शिक्षकों के साथ–साथ अभिभावकों का भी इतना दबाव रहता है कि कई बार बच्चे हीन भावना के शिकार हो जाते हैं। बच्चों को पढ़ाई के साथ–साथ कुछ वक्त खेलने के लिए एवं घर के बड़े बुजुर्ग के साथ बैठने के लिए भी मिलना चाहिए, क्योंकि घर के बुजुर्ग भी एक चलती–फिरती पाठशाला है। उनकी ज्ञानवर्धक बातें उनमें संस्कारों का सिंचन करती है।

इस सबके अलावा विद्यालयों में पुरानी किताबों के लिए एक कक्ष होना चाहिए। जब बच्चे उत्तीर्ण होकर अगली कक्षा में जाएं तब अपनी पिछले वर्ष की किताबें जमा करवा दें। ये किताबें अन्य बच्चों के काम आ सकती है। इस प्रकार से हम किताबों के अतिरिक्त बोझ से तो मुक्त होंगे ही, साथ–साथ पृथ्वी पर करोड़ों वृक्षों को भी कटने से बचा पाएंगे।

आज का युग विज्ञान का युग है। विद्यालयों में विज्ञान की अधिक से अधिक जानकारी मिले, ऐसी प्रयोगशालाएं होनी चाहिए। बच्चों में विज्ञान की उपलब्धियों को लेकर रूचि जागृत हो और इसके लिए विज्ञान शिविर आयोजित करने चाहिए। किसी भी व्यक्ति का सर्वांगीण विकास तभी संभव है जब सही मायने में व्यक्ति शिक्षा का अर्थ समझे।

विद्यालयों में शिक्षा प्रणाली ऐसी होनी चाहिए जिससे बच्चों का मानसिक, शारीरिक, बौद्धिक एवं नैतिक विकास के साथ अन्य पहलुओं पर भी ध्यान दिया जाये। शिक्षा एक प्रतिष्ठित एवं आदरणीय कार्य है, इसे धन की लालसा में व्यावसायिक बनाने से रोकना होगा। नैतिक मूल्यों पर ध्यान देना होगा। क्योंकि आज का बालक ही भविष्य में शिक्षक, नेता, इंजीनियर, डॉक्टर या वैज्ञानिक बनेगा।

शिक्षकों की भी यह नैतिक जिम्मेदारी है कि वे बच्चों को बताएं कि 'दीप से जलना सीखो, दीप से मुस्काना सीखो, सूर्य से ढलना न सीखो, सूर्य से उत्थान सीखो, राह पर सिर्फ चलना न सीखो, राह का निर्माण सीखो। ◈

स्मार्ट क्लास में बच्चे ''थ्री-डी'' विजुअल देख पाते हैं जो कि वे आम तौर पर क्लास में नहीं देख पाते। आजकल तो प्रत्येक स्कूल में स्मार्ट क्लास का होना बेहद ज़रूरी है। कई बार जब टीचर भी बच्चों को कोई चीज़ दिखाना चाहते है परंतु बोर्ड पर उसे दर्शाया नहीं जा सकता, तब वे बच्चों को स्मार्ट क्लास में ले जाकर उस चीज का चित्र आसानी से दिखा सकती है।

स्मार्ट क्लासेज को बढ़ावा मिले

◈ **fj;k “kek** ग्यारहवीं
विद्यासागर स्कूल
बिचौली मर्दाना, इंदौर,
मध्यप्रदेश

fdसी भी देश का सर्वांगीण विकास कई तरह की चीजों पर निर्भर करता है, जैसे वहां की आर्थिक स्थिति, राजनैतिक स्थिति, भौगोलिक स्थिति आदि। इसके अतिरिक्त भी कई बातें हैं जो उस देश के सर्वांगीण विकास में बाधक बन सकती है, जैसे–सांप्रदायिकता, भ्रष्टाचार, आतंकवाद, बेरोज़गारी, शिक्षा प्रणाली आदि। वर्तमान समय की शिक्षा प्रणाली में मेरे अनुसार कई तरह के परिवर्तन किए जा सकते हैं जिससे कि हम अपने जीवन तथा देश का सर्वांगीण विकास करने में सफल हो सकते हैं। वर्तमान शिक्षा पद्धति में निम्नलिखित परिवर्तन किए जा सकते हैं।

f'k{kk dk fu%'kYd vfuok;Z djuk % वर्तमान समय में यदि हम चाहते हैं कि शिक्षा का विस्तार हर जगह हो, हर कोई शिक्षित हो तो हमें 'भारी–भरकम' फीस से लोगों को मुक्त करना होगा। आज भी कई गरीब, परंतु प्रतिभावान बच्चे उच्च शिक्षा से वंचित रह जाते हैं।

ग्रामीण लड़कियों की शिक्षा में भी कई चीज़ें बाधक हैं, जैसे–स्कूल व कॉलेज उनके घरों से काफी दूरी पर हैं जिससे उनकी पढ़ाई बीच में ही रोक दी जाती है। सरकारी स्तर पर उनके आने–जाने की व्यवस्था की जानी चाहिए, उनके लिए निःशुल्क बस–सुविधा, साईकिल आदि प्रदान की जानी चाहिए। साथ ही उनको पुस्तकें तथा अन्य शिक्षण सामग्री भी मुफ्त वितरित की जानी चाहिए, जिससे वे अपनी पढ़ाई पूरी करने में सफल हों तथा जीवन में उच्च स्थान पर पहुंच सकें।

vkj{k.k % वर्तमान शिक्षा प्रणाली में दूसरी कमी मुझे आरक्षण की लगती है। शिक्षा में आरक्षण देना बिल्कुल सही नहीं है। एक बच्चे को केवल उसके जन्म के आधार पर आरक्षण देना गलत है। सालों से इसका विरोध होता आ रहा है पर अभी भी इसमें कोई सुधार नहीं हुआ है। कई प्रतिभावान छात्रों का चयन कई बड़ी–बड़ी परीक्षाओं में नहीं हो पाता क्योंकि उनसे कई कम नंबरों वाले छात्रों का चयन आरक्षण की वजह से होता है। इससे वे छात्र जो प्रतिभावान होते हुए भी अपना चयन नहीं करा पाते, कई बार डिप्रेशन में आ जाते हैं।

fdrkch Kku l T;knk ik;kfxd Kku % मुझे लगता है कि बच्चों को केवल किताबी ज्ञान नहीं बल्कि प्रायोगिक ज्ञान ज़्यादा होना चाहिए, इससे उनकी विषयों को समझने की क्षमता ज़्यादा बढ़ेगी। उदाहरण के लिए, ज्यादातर विद्यार्थी सामाजिक विज्ञान जैसे विषय से घबराते हैं, उन्हें राजाओं के नाम; जगहें व अलग–अलग दिनांक याद रखने में तकलीफ होती है तो इसके लिए शिक्षकों को चाहिए कि वे इतिहास का कोई पाठ लेकर उसे कक्षा में एक नाटक के रूप में बच्चों के द्वारा मंचन कराएं। जब बच्चे पाठ को इस तरह करेंगे तो उन्हें वह जल्दी समझ आएगा, ज्यादा रूचिकर लगेगा तथा वे इसे आसानी से याद कर पाएंगे। इसी तरह अंग्रेज़ी के नाटक व पाठ भी किए जा सकते हैं।

ljdkjh fo|ky; % हमारे देश में लगभग 61 प्रतिशत लोग शिक्षित हैं परंतु इनमें से ज़्यादातर लोग अपना नाम भी ठीक तरह से नहीं लिख सकते हैं। इसका कारण है सरकारी विद्यालयों की गिरती अवस्था। सरकारी विद्यालय के नाम पर 'जर्जर कक्षा', मिडडे मील व अच्छे

अध्यापकों की कमी इसके प्रमुख कारण हैं। इसलिए यदि हम चाहते हैं कि हमारे देश के विद्यार्थी सस्ती व अच्छी शिक्षा ग्रहण कर सकें तो सरकारी स्कूलों में कठोरता से कार्य मूल्यांकन तथा लापरवाही पर दंड होना चाहिए।

ikB~;Øe % आज के समय में देश में इस बात पर जोर दिया जाता है कि 'क्या सोचना है' बजाय इसके कि 'कैसे सोचना है'। विद्यालयों में जिज्ञासा को ज़्यादा बढ़ावा नहीं दिया जाता। आज सभी विद्यार्थियों की यही सोच हो गई है कि अध्यापक द्वारा जो भी कक्षा में पढ़ाया गया है, उसे बिना समझे बस रटकर ज़्यादा से ज्यादा अंक प्राप्त करना। लोगों का मुख्य लक्ष्य ज्ञान प्राप्त करना नहीं, बल्कि अंक प्राप्त करना रह गया है। छात्रों के बीच तो मानो सबसे ज़्यादा अंक लाने के लिए घमासान होता रहता है, जिससे कि वे अपने आप को दूसरों से श्रेष्ठ साबित कर सकें। अच्छे अंक पाना उचित है परंतु बिना ज्ञान प्राप्ति के तथा बिना चीजों को समझ बस रटकर सर्वश्रेष्ठ बनने का कोई लाभ नहीं है।

माता–पिता भी कई बार अपनी इच्छाएं थोपने लगते हैं कि मेरा बेटा या बेटी, इंजीनियर या डॉक्टर बने क्योंकि वे चाहते हैं कि उनका बच्चा भी वहीं करे जो समाज के अन्य लोग कर रहे हैं। वे इसीलिए शिक्षा पाठ्यक्रम में कुछ परिवर्तन कर उसे ऐसा बनाना चाहिए जो जिज्ञासा तथा ज्ञानवर्धन को बढ़ावा दे न कि सिर्फ अंको को!' साथ ही अभिभावकों में बाल मनोविज्ञान की जागरूकता लाने के लिए कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए।

f'k{k.k i)fr % आजकल के अधिकांश अध्यापकों का उद्देश्य अपने कार्य के घंटों को पूरा करना तथा अधिक से अधिक ट्यूशन करके धनोपार्जन करना ही रह गया है। इसीलिए शिक्षण पद्धति में भी आवश्यक सुधार किए जाने चाहिए। इसके लिए शिक्षण के क्षेत्र में केवल समर्पित तथा इस विषय में रूचि रखने वाले लोगों को ही लिया जाना चाहिए। 'एप्टिट्यूड टैस्ट' 'मनोवैज्ञानिक टैस्ट' आदि की व्यवस्था की जानी

चाहिए। इन टैस्टों में उत्तीर्ण होने वाले व्यक्ति ही अध्यापक का प्रशिक्षण पा सकते हैं, ऐसे नियम बनाए जाने चाहिए। ऐसा करने से ही देश के बच्चों का भविष्य सही हाथों में सौंपा जा सकेगा।

ijh{kk i.kkyh % मेरे विचार में वर्तमान शिक्षा प्रणाली का सबसे बड़ा दोष है उसकी परीक्षा प्रणाली। प्रायः हर वर्ष किसी न किसी विषय के प्रश्न–पत्र को लेकर हंगामे होते रहते हैं। इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि प्रश्न–पत्रों का निर्माण अत्यंत सावधानी से किया जाए जिसमें जहां तक हो सके संपूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित प्रश्नों का समावेश हो तथा कुछ आवश्यक प्रश्नों को रट–रटकर पास होने वाली प्रवृत्ति रोकी जा सके। शिक्षा का उद्देश्य नैतिक मूल्यों का संवर्धन होना चाहिए और व्यावसायिक शिक्षा पर बल दिया जाना चाहिए। शिक्षा को रोज़गारोन्मुख बनाया जाना चाहिए, साथ ही पाठ्यक्रम में ऐसे विषय अवश्य शामिल किए जाने चाहिए जिन्हें पढ़कर विद्यार्थी रोजगार प्राप्त कर सकें।

"kks/k : आज शोध में हमारा देश काफी पीछे है, इसका भी प्रमुख कारण है कि हमारी शिक्षा व्यवस्था केवल अंक लाने पर ही जोर देती है व प्रायोगिक ज्ञान न के बराबर है, इसलिए हमारा देश शोध कार्यों में अन्य देशों की तुलना में काफी पीछे है। इसके लिए देश में शोध को बढ़ावा देना चाहिए व अच्छे संस्थानों को ज्यादा पैसा देने के अलावा शोध के क्षेत्र को 'अफसरशाही' मुक्त करना है तथा अच्छा कार्य करने वालों को उचित सम्मान तथा सहयोग देना चाहिए।

LekVZ Dykl % वर्तमान शिक्षा पद्धति में कुछ संशोधन व सुधार के साथ ही कई आधुनिक तकनीकों को शामिल करना भी आवश्यक है। इन्हीं में से एक तकनीक है– 'स्मार्ट क्लास' की। अध्यापक द्वारा ब्लैक बोर्ड पर पढ़ाई गई चीजें वैसे तो अच्छे से समझ आती है परंतु कई बार कुछ विषय ऐसे भी होते हैं जिन्हें आंखों द्वारा देखकर ज़्यादा अच्छे से समझ आता है तथा जल्दी याद भी होता है।

स्मार्ट क्लास में बच्चे ''थ्री–डी'' विजुअल देख पाते हैं जो कि वे आम तौर पर क्लास में नहीं देख पाते । आजकल तो प्रत्येक स्कूल में स्मार्ट क्लास का होना बेहद ज़रूरी है। कई बार जब टीचर भी बच्चों को कोई चीज़ दिखाना चाहते हैं परंतु बोर्ड पर उसे दर्शाया नहीं जा सकता, तब वे बच्चों को स्मार्ट क्लास में ले जाकर उस चीज का चित्र आसानी से दिखा सकते हैं।

स्मार्ट क्लास सामाजिक विज्ञान, विज्ञान, गणित, अंग्रेजी आदि विषयों में बेहद सहायक साबित होती है। उदाहरण के लिए जीव–विज्ञान के कई चित्र तथा गणित के अलग–अलग प्रकार के 'शेप्स' स्मार्ट क्लास में अच्छी तरह प्रदर्शित किए जा सकते हैं। ऐसा करने से सबसे बड़ा फायदा यह है कि बच्चों की विषय के प्रति रूचि और गहरी होती जाती है। बहुत छोटे बच्चों को भी कुछ समझाना कई बार अध्यापकों के लिए बेहद कठिन हो जाता है, ऐसी परिस्थिति में बच्चों को 'प्रोजेक्टर' द्वारा स्क्रीन पर वह चीज़ बहुत आराम से समझाई जा सकती है। इतिहास जैसे विषय को, जिसे बच्चे 'कठिन' समझते हैं, यदि वे आंखों से उसके अलग–अलग दृश्य तथा घटनाएं देखते हैं तो वे उसे जल्दी समझ पाते हैं व याद करने में आसानी हो जाती है। इसलिए वर्तमान शिक्षा प्रणाली में कुछ संशोधन कर, 'स्मार्ट क्लास' को हर स्कूल में सभी क्लासेस के लिए अनिवार्य कर दिया जाना चाहिए। अतः शिक्षा एक पवित्र कार्य है। इसे व्यवसाय नहीं माना जा सकता। इस प्रवृत्ति पर नियंत्रण आवश्यक है। ◈

पब्लिक स्कूल, मगर वहां जनता नहीं पढ़ती

◈ rftnj ekgu tMoky सातवीं
संत जेवियर स्कूल
शाहबाद दौलतपुर, दिल्ली

आज स्थिति यह है कि माध्यमिक स्तर पर हिन्दी व प्रान्तीय भाषाएं शिक्षा का माध्यम हैं। लेकिन महाविद्यालयों में अंग्रेजी ही शिक्षा का माध्यम बनी हुई है पब्लिक स्कूल जिनका शब्दिक अर्थ जनता विद्यालय है, जहां जनता पढ़ती ही नहीं है, भारत के शासक व प्रशासक पढ़ते हैं। वहां प्राइमरी से अंत तक शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी ही है। कक्षा पांच तक प्राइमरी शिक्षा, उसके बाद बारहवीं कक्षा तक माध्यमिक शिक्षा और उसके बाद उच्च शिक्षा शुरू होती है।

Hkारत की प्राचीन संस्कृति अत्यंत गौरवपूर्ण थी। यहां ऋषि, मुनि, विचारक, दार्शनिक पैदा हुए जिन्होंने अपने उर्वरक मस्तिष्क से अनेक ग्रंथों का प्रणयन किया। वेद विश्व के प्राचीनतम लिखित ग्रन्थ हैं। उनसे ज्ञात होता है कि उन दिनों हमारे देश में शिक्षा का काफी प्रचार व प्रसार था। यह विद्या का केन्द्र था।

भारत के स्वतंत्र होने पर भारत सरकार ने शिक्षा के सुधार के लिए अनेक शिक्षा आयोग बिठाये, जिनमें राधाकृष्णन आयोग, सुदलिया आयोग, कोठारी आयोग प्रमुख हैं। ये आयोग मैकाले शिक्षा नीति में आमूल–चूल परिवर्तन करने में असफल रहे। इन्हें मैकाले शिक्षा का संशोधन मात्र कहना उचित होगा।

आज तक जो भी शिक्षा के सम्बंध में आयोग बैठे, उन्होंने मैकाले अंग्रेजियत को दूर करने का तनिक भी प्रयास नहीं किया। किसी देश में स्वभाषा, स्व–संस्कृति के ज्ञान से स्वतः ही राष्ट्रप्रेम, समाज प्रेम व जन प्रेम पैदा होता है। देश में सबसे लिए एक जैसी शिक्षा प्रणाली हो।

भारत एक विशाल देश है। यहां पर अनेक भाषाएं, उप–भाषाएं व बोलियां हैं। भारत को समृद्ध व उन्नत बनाने के लिए व यहां के लोगों के मन में राष्ट्रीय भावना, भाईचारा, देश–प्रेम व राष्ट्र–सेवा भरने के लिए विदेशी भाषा किसी भी स्तर पर शिक्षा का माध्यम नहीं होनी चाहिए। प्रारम्भिक स्तर पर प्राइमरी शिक्षा का माध्यम उसकी मातृभाषा होनी चाहिए। उसके बाद माध्यमिक स्तर अर्थात् बारहवीं कक्षा तक शिक्षा का माध्यम वह उन्नत भाषा होनी चाहिए जो उसके प्रान्तीय व राष्ट्रीय स्तर पर बोली जाती है। जैसे महाराष्ट्र में मराठी, मद्रास में तमिल, बंगाल में बंगला, पंजाब में पंजाबी आदि भाषाएं शिक्षा का माध यम बनें।

स्वतंत्र भारत में कई शिक्षा आयोग बिठाये गये। हमारे देश में शिक्षा की प्रगति के लिए हम विद्यार्थियों को योगदान देना होगा। हमारे देश में शिक्षा के उपयोग के लिए हर छात्र और छात्रा को विद्या की ओर कदम बढ़ाने के लिए योगदान देना चाहिए। शिक्षा में आमूल–चूल सुध ाार के बिना भारत प्रगति की राह पर मंद गति से चल रहा है। इसलिए शिक्षा का बुनियादी ढांचा बिल्कुल बदल दिया जाए।

आज स्थिति यह है कि माध्यमिक स्तर पर हिन्दी व प्रान्तीय भाषाएं शिक्षा का माध्यम हैं लेकिन महाविद्यालयों में अंग्रेजी ही शिक्षा का माध यम बनी हुई है। पब्लिक स्कूल जिनका शब्दिक अर्थ जनता विद्यालय है, जहां जनता पढ़ती ही नहीं है, भारत के शासक व प्रशासक पढ़ते हैं। वहां प्राइमरी से अंत तक शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी ही है। कक्षा पांच तक प्राइमरी शिक्षा, उसके बाद बारहवीं कक्षा तक माध्यमिक शिक्षा और उसके बाद उच्च शिक्षा शुरू होती है।

पढ़ने वाले छात्र को पढ़ने का अवसर नहीं मिल पाता है, इसलिए अध्ययनशील विद्यार्थी अपने निकटस्थ पुस्तकालयों में जाकर अध्ययन का आंनद लेते हैं। आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने देश में प्रत्येक व्यक्ति के लिए शिक्षा के द्वार खोल दिये हैं। हर स्थान पर व हर गांव में शिक्षा के अवसर जुटाये जा रहे हैं। पर यह गलती तो उन मां–बाप

की है जो लड़की और लड़के के बीच भेदभाव रखते हैं और लड़के को जहां जाना हो वहीं भेजते हैं लेकिन लड़की जब एक कदम पढ़ाई की ओर बढ़ाने की मांग करती है तब उसे मार–मारकर घर में बिठाया जाता है।

आज भी यह सब कई प्रदेशों के कई गांवों में होता है। अगर यही सब चलता रहा तो हमारा देश तो आगे बढ़ जाएगा लेकिन जिन बच्चों के लिए यह देश बना है वे पीछे रह जाएंगे। हमें अपना योगदान देकर उन बच्चों को पढ़ाना है जिनके साथ बदसलूकी की जाती है। जो गरीब, जो अनाथ, जो पढ़ नहीं सकते हमें उनकी सहायता करनी चाहिए। इसलिए ही देश ने इतने सारे विद्यालय, हर गांव में चार–चार, पांच–पांच विद्यालय बनाए हैं। इसलिए नहीं कि वह दुनिया को दिखाना चाहता है कि वह कितना विकसित है पर इसलिए ताकि छोटे–छोटे बच्चे, गरीब, अनाथ, अनपढ़–गांव को पढ़ाने के लिए और उन्हें बाहर की दुनिया का अहसास कराने के लिए।

मैं यही दुआ करता हूं कि हमारे पूरे देश में चाहे हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई या फिर और कोई भी जाति हो, उनके बच्चे पढ़ें क्योंकि हर बच्चे को पढ़ने–लिखने का हक है और उन्हें व हक मिलना ही चाहिए। ◈

बच्चों को पढ़ाने के लिए अलग-अलग तरीके जरूरी हैं क्योंकि कुछ अध्यापिकाएं कहती हैं कि वो उत्तर बोलेंगे और छात्रों को वैसा पढ़ना चाहिए। परीक्षाओं में अलग प्रश्न अध्यापक पूछते हैं और छात्रों को उत्तर कैसे लिखना है नहीं जानते हैं। यह छोड़कर, अध्यापकों बच्चों के लिए आसान तरीके अपनाने चाहिए। बच्चे समझकर पढ़ते हैं तो उन्हें परीक्षा में अच्छे मार्क्स मिलेंगे। ।

पढ़ने की सामग्री और बेहतर हो

◈ **dhFkuk d-** आठवीं
श्री रविशंकर विद्या मंदिर
कोटेश्वरम् रोड, कोच्चि,
केरल

thवन के सर्वांगीण विकास में वर्तमान शिक्षा पद्धति को और उपयोगी बनाने के लिए कुछ सुझाव इस प्रकार हैं–

- अध्यापकों को कॉर्स को और बेहतर करना चाहिए, अध्यापकों को बेहतर कॉर्स देना चाहिए। उसे बच्चों को कैसे समझाना है यह कला आनी चाहिए। अध्यापकों को बच्चों को समझाना चाहिए जैसे उसे प्रश्न पूछना है, एक पाठ से परियोजना कार्य भी देने चाहिए। उसे बहुत कुछ समझाना चाहिए। अध्यापकों को बच्चों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहन भी करना चाहिए। उसे शांति से बच्चों को समझाना है क्योंकि गुस्से में बोलेंगे तो बच्चों को नहीं समझ आएगी, शांति से बोलेंगे वो बहुत सारे कार्यों को समझेंगे और पाठ को याद भी कर सकते हैं।

- पढ़ाने के लिए सामग्री और बेहतर बनानी चाहिए। कुछ स्कूलों में किताबें भी नहीं होती हैं। वहां किताबें उपलब्ध की जानी चाहिए। कुछ अलग स्कूलों में स्मार्ट क्लासेज भी हैं। स्मार्ट क्लासों की सहायता से बच्चों को बहुत सारी चीजें आसानी से समझ आ सकती हैं। इससे बच्चों को परीक्षा में अच्छे अंक मिल सकेंगे।

- बच्चों को पढ़ाने के लिए कुछ नई सामग्री देनी चाहिए, जैसे–कंप्यूटर पढ़ाने के लिए बीस–बीस कंप्यूटर चाहिए तो उसे आसानी से समझ सकता है।

- बच्चों को पढ़ाने के लिए अलग–अलग तरीके जरूरी हैं क्योंकि कुछ अध्यापिकाएं कहती हैं कि वो उत्तर बोलेंगे और छात्रों को वैसा पढ़ना चाहिए। परीक्षाओं में अलग प्रश्न अध्यापक पूछते हैं और छात्रों को उत्तर कैसे लिखना है, नहीं जानते हैं। यह छोड़कर, अध्यापकों, बच्चों को आसान तरीके अपनाने चाहिए। बच्चे समझकर पढ़ते हैं तो उसे परीक्षा में अच्छे मार्क्स मिलेंगे।

- एक कक्षा में अधिक छात्र नहीं होने चाहिए क्योंकि अध्यापकों को उसे समझाना बहुत कठिन होता है। बच्चे बहुत शोर मचाएंगे और अध्यापक क्लास में ध्यान से नहीं पढ़ा पाएंगे। इसलिए एक कक्षा में अधिक छात्र नहीं होने चाहिए। इन छोटे–छोटे तरीकों से जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा पद्धति की और उपयोगी भूमिका हो सकती है। ◈

तकनीकी के साथ नैतिक पढ़ाई भी हों

◈ **djkb jk'kuh xkikHkkb ukoh**
श्री घनश्याम एकेडमी
नारानपार भुज, गुजरात

> ***वर्तमान शिक्षा पद्धति को अधिक उपयोगी बनाया गया है। वैज्ञानिक तरीकों को अपनाकर कई चीजें सरलता और जल्दी से हो जाती हैं। पूर्व यानि पहले की बात करें तो उसकी तुलना में वर्तमान शिक्षा पद्धति में अनेक सुधार भी किए गए हैं। आज रोजगार के विभिन्न क्षेत्रों में कंप्यूटर एक आवश्यक अंग बन गया है। अन्य आविष्कारों को भी वर्तमान शिक्षा पद्धति में आवश्यक माना गया है।***

gमारे देश की शिक्षा पद्धति पर बार–बार सवाल उठाए गए हैं। प्राचीन काल से जो शिक्षा पद्धति चली आ रही है, उसमें अनेक सुधारों की आवश्यकता है। वर्तमान में शिक्षा पद्धति कुछ अलग ही है। वर्तमान शिक्षा पद्धति की कुछ अलग ही उपयोगिता है।

वर्तमान में विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों का अध्ययन करवाया जाता है। भारत में प्राचीन काल में गुरुकुल व्यवस्था में अधिक विषय नहीं पढ़ाये जाते थे। गुरुकुल से निकलते विद्यार्थी विद्वान बनकर अपने गुरुकुल तथा माँ–बाप का नाम रौशन करते थे, जैसे अवध नरेश श्रीराम। वर्तमान शिक्षा पद्धति में अधिक विषयों का ज्ञान प्राप्त करके विद्यार्थी अपने भविष्य के मार्ग को निर्धारित कर सकते हैं। शिक्षा ही है जो छात्रों के भविष्य को उज्ज्वल बनाती है। शिक्षा ही उसे शिखर तक पहुंचाती है।

वर्तमान शिक्षा पद्धति में छात्रों को विभिन्न भाषाओं का ज्ञान भी प्राप्त होता है जिससे उन्हें अपने विचारों को विस्तार देने का अवसर मिल

सके। विभिन्न एवं अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं और प्रतियोगिताओं में रहने का अवसर प्राप्त हो। अधिक विषयों का ज्ञान प्राप्त करने से विद्यार्थियों के ज्ञान द्वार खुल जाते हैं और उन्हें रास्ता दे देते हैं। वर्तमान शिक्षा पद्धति को रोजगारपरक बनाने में कई सुविधाएं दी जाती हैं जिनसे उसे ज्ञान प्राप्त होता है।

वर्तमान शिक्षा पद्धति को अधिक उपयोगी बनाया गया है। वैज्ञानिक तरीकों को अपनाकर कई चीज़ें सरलता और जल्दी से हो जाती हैं। पूर्व यानि पहले की बात करें तो उसकी तुलना में वर्तमान शिक्षा पद्धति में अनेक सुधार भी किए गए हैं। आज रोजगार के विभिन्न क्षेत्रों में कंप्यूटर एक आवश्यक अंग बन गया है। अन्य आविष्कारों को भी वर्तमान शिक्षा पद्धति में आवश्यक माना गया है।

वर्तमान शिक्षा पद्धति के बारे में ऐसा माना जाता है कि इससे छात्रों को जीवन में विशेष लाभ नहीं होता। उनके पास प्रमाणपत्र तो होते हैं परंतु योग्यता नहीं होती। यह भी सत्य है कि वर्तमान शिक्षा पद्धति को अभी भी सुधारने की आवश्यकता है। परंतु यह भी सही है कि इसी ने देश में प्रगति की राहें खोल हजारों को योग्य डॉक्टर, इंजीनियर, अध्यापक, प्रोफेसर, वैज्ञानिक, लेखक, चित्रकार, संगीतकार, पत्रकार आदि दिए हैं। इसलिए तो नेल्सन मंडेला ने कहा है ''ज्ञान वो सबसे शक्तिशाली हथियार है, जिससे आप पूरी दुनिया को बदल सकते हैं।''

शिक्षा को बोझ समझने वाले छात्र विषयों को रटकर अथवा नकल के द्वारा केवल उत्तीर्ण होने का प्रयास करते हैं। ऐसे कुछ छात्र किसी भी विषय में विशेष ज्ञान प्राप्त करने में असफल रहते हैं। यही कारण है छात्रों का प्रमाणपत्र तो होता है पर उसमें योग्यता ही नहीं होती है। वर्तमान शिक्षा पद्धति में अनेक विशेषताएं हैं। वैज्ञानिक युग के साथ वर्तमान शिक्षा पद्धति में बढ़ावा भी करना जरूरी है, इसमें छात्रों का कर्तव्य है कि वे कठोर परिश्रम करें। उन्हें यह भूलना नहीं चाहिए कि कठोर परिश्रम के बिना किसी भी प्रकार की शिक्षा ग्रहण नहीं जा सकती। छात्रों का मन स्थिर रहना चाहिए। ज्ञान प्राप्त करना तो

सरल है पर उसे प्राप्त करने के बाद परीक्षा लेना संसार की सबसे बड़ी चुनौती है। इसलिए तो किसी ने सही कहा है कि ''शिक्षा की जड़ें कड़वी हैं लेकिन फल बहुत ही मीठे हैं।''

यदि एक छात्र विज्ञान के विषयों में उत्तीर्ण होकर योग्य चिकित्सक बन सकता है पर यह संभव नहीं कि दूसरे उनके सहपाठी भी चिकित्सक बनें। यह संभव है कि दूसरे सहपाठी दूसरी कला तथा दूसरे विषय में सफलता प्राप्त करके दिखाएं।

विद्यार्थियों को वर्तमान शिक्षा पद्धति में ही अपने लिए संभावनाओं की खोज करनी होगी। अपनी ही कुशलता से विद्यार्थी स्वयं अपने लिए उपयोगी मार्ग को ढूंढ़ सकेंगे। यह सत्य है कि कठिन परिश्रम से सफलता का अवसर हमेशा मिलता है।

खेलकूद भी शिक्षा के साथ जरूरी है। वह हमारे अंदर बहुत फायदा पहुंचाते हैं। खेलकूद हमारे जीवन को स्वस्थ तथा सरल बनाते हैं। खेलकूद से ही हमारे मन को शांति प्राप्त होती है। यह शिक्षा के लिए उपयोगी हैं जब हमारा मन शांत होता है तभी हमारा मन पढ़ने के लिए स्थिर रहता है।

हमारी सरकार ने इस कार्य के लिए अलग से 'खेल मंत्रालय' भी बना है। फिर तो खेलकूद और व्यायाम की जैसी व्यवस्था माध्यमिक विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्व विद्यालयों में होनी चाहिए, वैसी अभी नहीं है। स्थिति में परिवर्तन करना आवश्यक है। यदि भविष्य में सुयोग्य नागरिक, सर्वांगीण विकास युक्त शिक्षित व्यक्तियों का निर्माण करना है तो शिक्षा में खेलकूद की उपेक्षा न करके उसे व्यावहारिक रूप प्रदान करना होगा।

प्राचीन काल में स्त्रियों को शिक्षा नहीं दी जाती थी। वे लोग सोचते थे कि बेटियां हमारे लिए एक सांप के विष जैसी है। जो लोग ऐसा सोचते हैं वे गलत हैं। स्त्री–पुरुष जीवन रूपी रथ के दो पहिये हैं, इसलिए पुरुष के साथ–साथ स्त्री का भी शिक्षित होना जरूरी है। स्त्री

के लिए किताबी शिक्षा के साथ–साथ नैतिक शिक्षा भी बहुत जरूरी है। स्त्री का गृह कार्य में कुशल होने के साथ–साथ समाज सेवा में भी योगदान सबसे ज्यादा होता है। बच्चों के लालन–पालन, शिक्षा से लेकर नौकरी तक नारी हर क्षेत्र में पुरुषों से आगे है। अतः नारी को कभी कम नहीं आंकना चाहिए और उसका सदा सम्मान करना चाहिए।

वर्तमान शिक्षा पद्धति में सबसे बड़ा साथ है वैज्ञानिकों का। जो आज शिक्षा प्रदान की जा रही है वह सब वैज्ञानिकों का वरदान है। इस ब्रह्मांड में मानव ही ऐसा जीव है जो सदैव अपनी वर्तमान परिस्थिति से असंतुष्ट रहा है। उसकी इच्छाएं अतृप्त रही हैं। जो कुछ उसे उपलब्ध है उसमें संतुष्टि नहीं, जो कुछ उससे दूर है उसे पाने को प्रयत्नशील है। इस प्रकार मानवता में जिज्ञासापूर्ण प्रवृत्ति ने ही मानव को नई–नई खोजों की ओर प्रेरित किया। मानव ने जो उपलिब्धियां प्राप्त कीं विज्ञान के ही कारण है। वह मोटर, रेलगाड़ी, वायुयान आदि की यात्रा से संतुष्ट न रहकर मंगल ग्रह पर राकेट यात्रा की तैयारी कर रहा है।

अतः वर्तमान शिक्षा पद्धति यद्दपि समय के अनुकूल उपयोगी है फिर भी इसे और उपयोगी बनाने के लिए इसमें साईंस टेक्नालॉजी के साथ नैतिक उद्देश्य भी शामिल किए जाने चाहिए। ◈

आज समाज पर वणिक मानसिकता हावी है। शिशु-शिक्षा से लेकर उच्चतम शिक्षा की दुकानें धड़ाधड़ खुलती जा रही हैं। इन शिक्षा व्यवसायियों को देश और समाज के हितों से कोई सरोकार नहीं है। उनके लिए विद्यालय चलाना एक लाभकारी निवेश से अधिक कुछ नहीं है। सरकारी विद्यालयों में शिक्षा की दुर्दशा और तकनीकी, व्यावसायिक, प्रबंधकीय तथा चिकित्सकीय शिक्षा की धूम ने निजी विद्यालयों को मनमानी करने की पूर्ण स्वतंत्रता दे दी है।

निजीकरण के नाम पर महंगी हुई शिक्षा

◈ **dq.k iujh** बारहवीं
श्री जी पब्लिक सी.सै. स्कूल
नाथद्वारा, राजसमंद, राजस्थान

jत्येक व्यक्ति के जीवन में शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक बच्चे का मौलिक तथा अनिवार्य अधिकार है। शिक्षा के बिना व्यक्ति शारीरिक रूप से तो विकसित हो सकता है किंतु उसका मानसिक, बौद्धिक, आत्मिक विकास शिक्षा के अभाव में संभव नहीं। मनुष्य को जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए शिक्षित होना आवश्यक है। भारत में हजारों वर्षों से शिक्षा की अनिवार्यता पर जोर दिया गया है। प्राचीन सांस्कृतिक ग्रंथों में कहा गया है–

''माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः।
न शोभते सभा मध्ये, हंसे मध्ये बको यथा।।''

अर्थात् जो माता–पिता बच्चे को शिक्षित नहीं कराते हैं वे उसके शत्रुओं के समान होते हैं। ऐसा अशिक्षित बालक शिक्षितों के बीच इसी प्रकार शोभा नहीं पाता जैसे हंसों के बीच बगुला। इस प्रकार मनुष्य के जीवन के सर्वांगीण विकास में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। वर्तमान समय में शिक्षा के मौलिक अधिकार को जनहित में प्रसारित

करने हेतु कई संस्थानों, सरकारों आदि के द्वारा प्रयास किए जा रहे हैं। क्योंकि देश के विकास में शिक्षा नींव भरने का कार्य करती है। अतः इसके बिना देश की उन्नति संभव नहीं है।

f'k{kk dk ekfyd vf/kdkj % शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक बच्चे का मौलिक अधिकार है। भारत को दीर्घकालीन पराधीनता के पश्चात् 15 अगस्त, 1947 को स्वतंत्रता मिली थी। गणतंत्र शासन की स्थापना होने के पश्चात् भारतीय संविधान से देश के नागरिकों को कुछ मौलिक अधिकार प्राप्त हुए। इन मौलिक अधिकारों में शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार भी शामिल है जिसमें 6 वर्ष से 14 वर्ष तक के बालकों को अनिवार्य शिक्षा प्रदान करना सरकार का दायित्व है। केन्द्र सरकार ने इसकी व्यवस्था को अनिवार्य बनाने के लिए बजट में अरबों रुपयों का प्रावधान किया है। वर्तमान समय में निःशुल्क शिक्षा की भी व्यवस्था की गई है।

वर्तमान शिक्षा पद्धति मूलतः दो खण्डों में विभाजित है–पहली, विद्यालयी शिक्षा जिसमें प्रारंभ से लेकर उच्च माध्यमिक अर्थात् कक्षा 12 तक शिक्षा ग्रहण की जाती है। दूसरी, महाविद्यालय अर्थात् कॉलेज, जहां विद्यार्थी डिग्री ग्रहण कर अपने भविष्य को निर्धारित करता है। वर्तमान समय में संपूर्ण देश में यही शिक्षा पद्धति है। इसके अंतर्गत विद्यालय में रहते हुए बालक कई महत्वपूर्ण बातें सीखता है।

प्राथमिक शिक्षा में उसका मानसिक विकास होता है। उच्च माध्यमिक स्तर की कक्षाओं में पहुंचने पर विद्यार्थी अपने भविष्य बनाने की राह चुनता है। इससे पहले उसके लिए सभी विषय अनिवार्य होते हैं परंतु यहां विद्यार्थी के लिए वैकल्पिक विषय उपलब्ध होते हैं। इनमें मुख्यतः तीन वर्ग होते हैं– विज्ञान वर्ग, वाणिज्य वर्ग तथा कला वर्ग। विद्यार्थी अपनी स्वेच्छा से व रूचि से इनमें से किसी भी वर्ग में किसी भी विषय का चयन कर सकते हैं। इसके पश्चात् वे विद्यालयी शिक्षा पूर्ण कर कॉलेज में प्रवेश लेते हैं जहां से वे डिग्री लेकर आगे नौकरी या अन्य काम करते हैं।

f'k{kk dk futhdj.k : यद्यपि हमारे देश में शिक्षा निःशुल्क प्रदान करना व कराना महान पुण्य कार्य समझा जाता है, परंतु वर्तमान

समय में शिक्षा भी व्यवसायी मानसिकता का शिकार हो गई है। इसका मुख्य कारण यह है कि सरकार अपनी प्रत्येक जिम्मेदारी को निजी क्षेत्र पर डालकर उससे मुक्त होना चाहती है। परंतु सरकार यह नहीं सोच रही है कि निजी क्षेत्र का लक्ष्य केवल मुनाफा कमाना होता है। वह ऐसे किसी कार्य में रूचि नहीं लेता जिसमें व्यक्तिगत मुनाफा न हो। साथ ही सरकारी व्यवस्थाएं ढीली होने से सरकारी स्कूलों से लोगों का ध्यान हटकर निजी विद्यालयों की ओर आकर्षित हो रहा है।

पिछले कुछ वर्षों में निजी शिक्षा–संस्थानों की बाढ़ आ गई है। महाविद्यालय ही नहीं, विश्वविद्यालय भी निरंतर बढ़ते जा रहे हैं। शिक्षा के प्रसार और समयानुकूल शैक्षिक योग्यता पाने के अवसर बढ़ने से यह सारा परिदृश्य बड़ा उत्साहप्रद और आशाजनक प्रतीत होता है लेकिन इसका दूसरा पहलू भी चिंतनीय है। निजी शिक्षा संस्थाओं के व्यावसायिक दृष्टिकोण के कारण शिक्षा बहुत महंगी हो गई है। पिछले वर्षों में तकनीकी, प्रबंधकीय और चिकित्सकीय शिक्षा संस्थाओं में छात्रों का जमकर आर्थिक शोषण हुआ है।

आज समाज पर वणिक मानसिकता हावी है। शिशु–शिक्षा से लेकर उच्चतम शिक्षा की दुकानें धड़ाधड़ खुलती जा रही हैं। इन शिक्षा व्यवसायियों को देश और समाज के हितों से कोई सरोकार नहीं है। उनके लिए विद्यालय चलाना एक लाभकारी निवेश से अधिक कुछ नहीं है। सरकारी विद्यालयों में शिक्षा की दुर्दशा और तकनीकी, व्यावसायिक, प्रबंधकीय तथा चिकित्सकीय शिक्षा की धूम ने निजी विद्यालयों को मनमानी करने की पूर्ण स्वतंत्रता दे दी है। इन विद्यालयों की फीसें आम आदमी को पसीना ला देती हैं। यद्यपि पिछले कुछ समय से इन निजी विद्यालयों में शिक्षण–शुल्कों को नियंत्रित बनाने के प्रयास हुए हैं लेकिन इनके पास जेब काटने के अन्य अनेक उपाय हैं।

l/kkj gsrq pyk, tk jgs dk;Øe : शिक्षा व्यवस्था में सुधार के लिए सरकार द्वारा अनेक सुधार कार्यक्रम चलाए गए हैं। निजी विद्यालयों की बढ़ती फीस को नियंत्रित करने के लिए कड़े नियम बनाए गए हैं।

गरीब बच्चों को स्कूल जाने के लिए प्रेरित करने के लिए लिए निःशुल्क शिक्षा का प्रावधान पुस्तकों, गणवेशों का वितरण आदि कार्यक्रम चलाए गए हैं। हाल ही में सरकारी विद्यालयों में 'मिड–डे–मिल' नामक योजना चलाई गई है परंतु इसमें भी कई गड़बड़ियां सामने आई हैं। सरकार को चाहिए कि वह जो भी योजनाएं बनाए, पूर्णतः विचार–विमर्श के बाद शुरू की जाएं।

सरकार के अलावा कई स्वयंसेवी संस्थान व ट्रस्ट भी इसमें जुड़े हुए हैं। ये बच्चों को प्रोत्साहित करते हैं तथा प्रतिभाओं को सम्मिलित करते हैं। साथ ही गरीब बच्चों को जरूरी चीजें उपलब्ध करवाते हैं। परंतु इन सभी कार्यक्रमों के बावजूद आम लोगों का ध्यान निजी संस्थाओं की ओर ही आकर्षित हो रहा है।

vf/kd mi;ksxh cukus esa gekjk ;ksxnku % हालांकि शिक्षा पद्धति हो उपयोगी बनाने में सरकार द्वारा अनेक कार्यक्रम चलाए गए हैं परंतु वे इतने अधिक उपयोगी सिद्ध नहीं हो पाए हैं। अतः यदि इस व्यवस्था में सुधार लाना है तो हमें अपनी ओर से भी योगदान देना होगा। इसके लिए हमें एकजुट होकर सरकार पर दबाव बनाना चाहिए कि शिक्षा के क्षेत्र में हो रही इन धांधलियों को रोकने के लिए कड़े कानून बनाए जाएं। अपने स्तर पर जहां तक हो सके इस प्रकार की बिगड़ी हुई व्यवस्था के खिलाफ आवाज उठानी चाहिए।

विद्यार्थी भी इसमें अपना योगदान दे सकते हैं। उन्हें चाहिए कि वे जिन कठिनाइयों का सामना करते हैं उनके बारे में खुलकर बताएं ताकि शिक्षा क्षेत्र में इन कमियों को दूर किया जा सके। शिक्षकों को भी पूरी निष्ठा से अपने कर्त्तव्य का पालन करना चाहिए। यह हमारे देश के भविष्य का सवाल है। शिक्षा क्षेत्र में ये सुधार देश को उन्नति की ओर अग्रसित करेंगे। इसीलिए कहा गया है– 'पढ़ेगा इंडिया तभी तो बढ़ेगा इंडिया'। ◈

स्वरोजगार पाने वालों के लिए दिक्कतें

◈ io। सातवीं
अल्पाईन पब्लिक स्कूल
नालागढ़, हिमाचल प्रदेश

यदि हम उच्च शिक्षा, जैसे बी.टेक या बी.ए. जैसे विषयों की बात करें तो कक्षा में पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रम और व्यावहारिकता में जमीन-आसमान का फर्क होता है। इस कारण से उद्योगों की अपेक्षाओं और कक्षा के पाठ्यक्रमों में एक अंतर रह जाता है जिसके कारण विद्यार्थियों को नौकरी में जाने के बाद काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है।

भारत में जो शिक्षा पद्धति प्रचलित है, उसके कई पक्षों में सुधार करने की आवश्यकता है। मसलन हमारी पूरी शिक्षा प्रणाली और उसकी व्यवस्था में कुछ गंभीर खामियां पाठ्यक्रमों को लेकर ही नज़र आती हैं।

पाठ्यक्रम, जिनमें जेंडर संवेदनशीलता की नज़र से बहुत ही आपत्तिजनक बातें सामने आती हैं। हमारी शिक्षा व्यवस्था और सामाजिक सोच लड़कियों को बहुत सीमित भूमिकाओं में आतंकी और विकसित होते देखना चाहती है। शिक्षा के साथ–साथ उनके आत्मरक्षा, जेंडर संवेदनशीलता, हिंसात्मक व्यवहारों और परिस्थितियों, कानूनों की जानकारी, मानसिक स्वास्थ्य जैसे गंभीर मुद्दों पर बात नहीं की जाती है।

बच्चों के शारीरिक विकास के बारे में न तो घरों में ही संपूर्ण तरीके से माता–पिता बात करते हैं, न ही स्कूलों में की जाती है। बच्चों की बढ़ती उम्र में होने वाले तमाम परिवर्तनों से जुड़े अनेक सवालों का जवाब देना पाठ्यक्रम का हिस्सा न होते हुए भी शिक्षा का अभिन्न अंग होना चाहिए। महिला अधिकार, कानूनों की सामान्य जानकारी, मानव

व्यवहार, बाल संवेदनशील दृष्टिकोण, काउंसलिंग जैसे संदर्भों को शामिल नहीं किया जाता।

पढ़ाई का बोझ इतना अधिक होता है कि वह हमें कुछ और सोचने की फुर्सत नहीं देता। पढ़ाई, परीक्षा, अंकों और डिवीज़न की दौड़ में चाहे–अनचाहे व्यक्तित्व विकास की बहुत सी समस्याएं अनसुलझी रह जाती हैं, जो किसी न किसी कुंठा, निराशा, भावनात्मक कमजोरियों, अपराधवृत्तियों के रूप में उभरती हैं। आज के बच्चे शॉर्ट टेंपर्ड होते जा रहे हैं। उनमें नशाखोरी, आत्महत्या, यौन अपराधों की प्रवृत्तियां बढ़ रही हैं।

यदि हम उच्च शिक्षा, जैसे बी.टेक या बी.ए. जैसे विषयों की बात करें तो कक्षा में पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रम और व्यावहारिकता में जमीन–आसमान का फर्क होता है। इस कारण से उद्योगों की अपेक्षाओं और कक्षा के पाठ्यक्रमों में एक अंतर रह जाता है जिसके कारण विद्यार्थियों को नौकरी में जाने के बाद काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है।

इसके अतिरिक्त हमारी शिक्षा पद्धति में एक खामी यह भी है कि हम जल्दी ही रोजगार करने लायक नहीं बनते। जो लोग नौकरी में न जाकर स्वरोजगार अपनाना चाहते हैं, उनके लिए अवसरों की कमी है।

ऐसे पाठ्यक्रमों को बढ़ावा दें जो बच्चों में दैहिक, मानसिक और भावनात्मक संवेदनशीलता को बढ़ावा दें। हमें आज एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था की ज़रूरत है जो बच्चों में और युवा पीढ़ी में नागरिक जिम्मेदारी, राष्ट्रप्रेम, आलोचनात्मक नजरिये और निर्णय क्षमताओं को प्रोत्साहित करे। जो उन्हें समय की मांग के अनुसार इंसानी ज़रूरतों और भावनाओं को समझना और समस्यओं से जूझना सिखाए।

इसके अतिरिक्त एक ऐसी शिक्षा पद्धति की आवश्यकता है जो किताबी ज्ञान से अधिक बच्चों को व्यावहारिक शिक्षा प्रदान करे। ◈

विषयगत ज्ञान समय के अनुकूल हो

◈ ;f'krk cBtk दसवीं
माता गुजरी पब्लिक स्कूल
ग्रेटर कैलाश–1, दिल्ली

शिक्षा का प्रयोजन केवल छात्रों को कमाऊ बना देने तक नहीं समेट दिया जाना चाहिए। यदि बात इतनी होती तो इन्हें श्रम करवाने और समय गंवाने की क्या आवश्यकता है। बाप-दादों के धन्धे में कुशलता बिना पढ़े या कम पढ़े होने पर भी आसानी से प्राप्त की जा सकती है। इसमें आमदनी भी नौकरियों में मिलने वाली राशि की अपेक्षा अधिक ही होगी। शिक्षा का उद्देश्य इससे अधिक विस्तृत होना चाहिए।

f'ाक्षा जीवन को 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' से समन्वित करती है। इसके द्वारा बुद्धि का शिवत्व, हृदय का सौंदर्य और आत्मा का सत्य स्वरूप झलकता है। यह चरित्र में समुज्ज्वलता, चिंतन में उत्कृष्टता एवं व्यवहार में उदात्त भाव भरती है। एक ओर जहां इससे भौतिक पक्ष समृद्ध होता है, वहीं दूसरी ओर यह आत्मिक उत्थान की ओर अग्रसर होने का भी उचित एवं श्रेष्ठ माध्यम है। इसमें नैतिकता एवं आत्मिक विकास का स्वाभाविक समावेश होता है। इसके कारण ही राष्ट्र सम्पन्न और समृद्ध बनता है। यह अज्ञान का निवारण करती है तथा व्यवहार जगत में सहिष्णुता एवं कर्मठता का पाठ पढ़ाती है।

पुराकाल में भारतीय सभ्यता मूलतः धार्मिक प्रवृत्ति से भरपूर थी जिसमें धर्म को आधार मान कर शिक्षा दी जाती थी। भारतीय जीवन दर्शन एवं वैचारिक धाराएं धर्म पर ही आधारित थीं। सम्पूर्ण जीवन सांस्कृतिक चेतना एवं धार्मिक सहिष्णुता से संचालित होता था। आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक ढांचा धार्मिक विचारधारा से सिक्त था। जीवन का उद्देश्य

मोक्ष प्राप्ति स्वर्ग प्राप्ति स्वीकारते हुए शिक्षा–दीक्षा दी जाती थी। यही कारण है कि प्राचीन काल में शिक्षा का उद्देश्य ज्ञानार्जन के साथ–साथ मोक्ष प्राप्ति भी था।

मोक्ष के लिए शैक्षिक पाठ्यक्रम को आदर्श के रूप में पावनता के साथ लागू किया जाता था जिसमें नैतिक गुणों को दृष्टिगत किया जाता था। व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना चरम और परम उद्देश्य प्रारंभ से ही शिक्षा का रहा है लेकिन प्राचीनकान में आध्यात्मिकता पर विशेष बल था। छात्र का सर्वांगीण विकास सुयोग्य, सचरित्र, सात्विक वृत्ति के शिक्षक के माध्यम से ही सम्भव है जिसके मूल में सांस्कृतिक–आध्यात्मिक चेतना थी।

शिक्षक की देखरेख में ही बालक का सर्वांगीण विकास पूर्व में भारतीय परिवेश में होता था। चूंकि शिक्षक राष्ट्र निर्माता के रूप में प्रतिष्ठित था, इसलिए समाज का आदर्श, शिक्षा का प्रतिदर्श एवं सरकारी तंत्र का दाता परामर्श शिक्षक ही था। शिक्षा राष्ट्र की मेरूदण्ड है। अतएव शिक्षक को 'सादा जीवन, उच्च विचार के' सिद्धांत को आचरण एवं व्यवहार में लाना अनिवार्य था।

समाज और राष्ट्र को मात्र शिक्षक से ही अपेक्षा थी कि वह समाज और राष्ट्र को एक आदर्श समाज और राष्ट्र बनाए, अतः शिक्षक अपना पुनीत कर्तव्य–कर्म एवं धर्म मानकर त्याग तपस्या की वेदी पर सर्वस्व समर्पण की भावना से राष्ट्र निर्मित में अम् भूमिका निर्वहन करते हुए अपने दायित्वों का निर्वहन समाजहित और राष्ट्रहित में करता था। यही कारण था कि शिक्षक समाज और राष्ट्र का आदर्श था। इस प्रकार छात्र का शारीरिक, मानसिक, आत्मिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक अर्थात् छात्र के व्यक्तित्व का बहुविधि विकास होता था।

चरित्र निर्माण की शिक्षा ही छात्र को चरित्रवान नागरिक एवं स्वस्थ सामाजिक बना सकती है। चरित्र व्यक्तित्व का एक अंश होता है, एक भाग है जिसको अंग्रेजी में 'करेक्टर' कहा जाता है। व्यक्तित्व का

सर्वांगीण विकास ही मुख्य उद्देश्य है शिक्षा का, लेकिन चरित्र को सर्वोपरि महत्व प्रदान किया गया। भारतीय चिंतकों, शिक्षाविदों एवं मनीषियों ने चरित्रबल पर विशेष ध्यान केन्द्रित किया क्योंकि भारतीय दर्शन आध्यात्मिक संवेदना को सहज ही स्वीकारता है। सदाचार का उपदेश देना, सात्विक वातावरण की निर्मिति, गुरु के प्रति अगाध श्रद्धा और भक्ति तथा आदर्श स्थापना की प्रबल इच्छा शक्ति ही शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक सिद्ध है।

शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य है, शिक्षार्थी में अच्छे संस्कारों एवं मानवीय मूल्यों का बीजारोपण, साथ ही उसे यथार्थता का ज्ञान देना। शिक्षा को पाने के लिए शिक्षार्थी में ऐसे संस्कारों एवं मानवीय मूल्यों को विकसित करना चाहिए कि वह विवेक और तथ्य का सहारा लेकर यथार्थता की तह तक पहुंच सके।

पुरातनकाल के शैक्षिक परिदृश्य को पुनर्स्थापित करने के लिए हमें सुसंस्कारिता का वातावरण बनाना होगा ताकि विद्यार्थी सुसंस्कारों से सम्पन्न हो सके। फिर वह चाणक्य जैसा निर्धन होते हुए भी जीवन के किसी भी चक्र में असफल न होकर सफलता की दिशा में द्रुतगति से आगे बढ़ता रहे।

शिक्षा का प्रयोजन केवल छात्रों को कमाऊ बना देने तक नहीं समेट दिया जाना चाहिए। यदि बात इतनी होती तो इन्हें श्रम करवाने और समय गंवाने की क्या आवश्यकता है। बाप–दादों के धन्धे में कुशलता बिना पढ़े या कम पढ़े होने पर भी आसानी से प्राप्त की जा सकती है। इसमें आमदनी भी नौकरियों में मिलने वाली राशि की अपेक्षा अधिक ही होगी। शिक्षा का उद्देश्य इससे अधिक विस्तृत होना चाहिए।

आज से सौ–डेढ़ सौ वर्ष पूर्व भारतीय नारी भयंकर निरक्षता, अज्ञान और दासता की बेड़ियों में जकड़ी हुई थी। अर्धांगिनी–जीवनसंगिनी होते हुए भी उसे पुरुषों के समान स्वतंत्रता और अधिकार नहीं थे। सदियों पूर्व पुरुषों द्वारा बनाई गई जायज–नाजायज व्यवस्था के अधीन पुरुषों के हाथों में शासन और सभा की बागडोर थी किंतु आजादी

मिलने के बाद संविधान में पुरुषों के समान ही नारी को भी स्वतंत्रता और अधिकार दिए गये। शिक्षा का प्रचार–प्रसार बढ़ा।

नारी के शिक्षित और सजग होने, शासन–प्रशासन में उसकी भागीदारी बढ़ने से नियम और कानून पर आधारित एक मूल्यपरक स्वस्थ सामाजिक व्यवस्था का निर्माण होना चाहिए, किंतु ऐसा नहीं हो सका। दिनोंदिन समाज और देश का नैतिक पतन होता जा रहा है।

भारतीय शिक्षा पद्धति में नैतिक शिक्षा की सदैव आवश्यकता मानी गयी है। विभिन्न शिक्षा आयोगों ने शिक्षा पद्धति में नैतिक शिक्षा देने की अनुशंसा की है। एक लम्बा समय बीत जाने के बाद भी अभी यह सुनिश्चित नहीं हो सका है कि नैतिक शिक्षा का क्या प्रारूप हो।

शिक्षा जगत में नित नये परिवर्तन हो रहे है। आज के कंप्यूटर युग में शिक्षकों की भूमिका महत्वपूर्ण होती जा रही है। आधुनिक शिक्षा व्यावसायिक उन्नयन हेतु तत्पर है। आज शिक्षक की भूमिका पर प्रश्नचिन्ह लग गया है। रोज हो रहे आविष्कारों, नवाचारों ने परम्परागत शिक्षण को बदल दिया है। शिक्षक अनगढ़ को सुगढ़ बनाता है। वह एक माली की तरह है जो नन्हें पौधों को पूर्णता प्रदान करता है। शिक्षक पथ–प्रदर्शक, सजग, जिज्ञासु होना चाहिए।

शिक्षण जैसे पावन कर्म में जहां शिक्षण का विषयगत ज्ञान परिपूर्णतायुक्त हो वहीं वर्तमान समय के अनुकूल भी होना चाहिए। जिज्ञासु शिक्षक अपने ज्ञान का विस्तार करता है और शिक्षार्थियों को लाभ पहुंचाकर आदर पाता है। प्रधानाध्याकों, प्राचार्यों को भी चाहिए कि वे भी विभागीय नियम, आदेशों, नवाचारों के बारे में समुचित जानकारी रखें ताकि अधीनस्थ शिक्षकों, कार्मिकों को सही दिशा–निर्देश दे सकें। संक्षेप में, छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु उनके शारीरिक, मानसिक (बौद्धिक) एवं भावात्मक विकास हेतु स्वयं के व्यक्तित्व को संवारने की आवश्यकता है। ◈

समय-समय पर हो पुनः अवलोकन

पाठ्यक्रम में व्यावहारिकता एवं विषयवस्तु में कोई भी समन्वय नहीं है। व्यावसायिक प्रशिक्षण एवं स्वरोजगारोन्मुखता का अभाव होने से विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्राप्त करने पर भी बेकारी-बेरोजगारी के शिकार बन रहे हैं। साथ ही शारीरिक श्रम से दूर रहने की और पाश्चात्यानुकरण की प्रवृत्ति पनप रही है। शिक्षा का स्वरूप बहुस्तरीय होने पर भी आज के विद्यार्थियों को उसका पूरा लाभ नहीं मिल रहा है। यह स्थिति अतीव चिंतनीय है।

◈ _f'kdk dkykUrjh
सातवीं सैंट्रल अकादमी सी.से. स्कूल रामनगर, सेंटी, चितौड़गढ़

f'ाक्षा सभ्य जीवन की आधारशिला है। आज के युग में शिक्षा मानव के आर्थिक विकास के लिए नितांत आवश्यक है। इससे मानव की शारीरिक, मानसिक एवं चारित्रिक क्षमता का विकास होता है। शिक्षक या गुरु द्वारा विद्यार्थी को व्यवस्थित रूप से विशेष पद्धति अपनाकर जो शिक्षा दी जाती है उसे 'शिक्षा पद्धति' अथवा 'शिक्षा प्रणाली कहते हैं। शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य देश के नागरिकों का बौद्धिक विकास कर उनमें सांस्कृतिक एवं नैतिक आदर्शों का समावेश करना तथा उन्हें स्वावलम्बी बनाना रहता है। इसका जीवन के सर्वांगीण विकास में विशेष महत्व रहता है।

orZeku f'k{kk dk Lo:i % यद्यपि प्राचीनकाल में श्रेष्ठ शिक्षा पद्धति के कारण भारत को 'विश्व–गुरु' कहा जाता था और अन्य देशों के शिक्षार्थी यहां ज्ञान प्राप्त करने आते थे परंतु वर्तमान में हमारी शिक्षा राष्ट्रीय लक्ष्य के अनुरूप न रहकर मूल्यहीन, विचारहीन तथा आचरणहीन रह गई। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद आर्थिक कमजोरी के कारण शिक्षा–क्रम में एकाएक परिवर्तन करना सरकार के लिए संभव न था, फिर भी

शिक्षा आयोगों के सुझावों पर समय–समय पर शिक्षा में जो परिवर्तन किये गए, उनमें से वर्तमान शिक्षा के स्वरूप का संगठनात्मक विकास अवश्य हुआ है। अंग्रेजों के शासन काल में जो शिक्षा प्रणाली प्रचलित हुई थी, आज भी लगभग वही है। इससे 'सफेद बाबुओं' की जमात तैयार हो रही है। हमारा शिक्षा का स्तर एकदम गिरा हुआ है। यह अनुपयुक्त एवं व्यय साध्य है। पाठ्यक्रम में व्यावहारिकता एवं विषयवस्तु में कोई भी समन्वय नहीं है। व्यावसायिक प्रशिक्षण एवं स्वरोजगारोन्मुखता का अभाव होने से विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्राप्त करने पर भी बेकारी–बेरोजगारी के शिकार बन रहे हैं। साथ ही शारीरिक श्रम से दूर रहने की और पाश्चात्यानुकरण की प्रवृत्ति पनप रही है। शिक्षा का स्वरूप बहुस्तरीय होने पर भी आज के विद्यार्थियों को उसका पूरा लाभ नहीं मिल रहा है। यह स्थिति अतीव चिंतनीय है।

orZeku f'k{kk i.kkyh d xq.k % वर्तमान शिक्षा प्रणाली यद्यपि अत्यधिक दूषित है, फिर भी इसके कुछ गुण विद्यमान हैं, जैसे–

- इस शिक्षा प्रणाली में अन्धविश्वास–रूढ़ियों और ऊँच–नीच की भावना में कमी आई है।
- इस शिक्षा प्रणाली से मानसिक विकास हुआ है।
- इस शिक्षा पद्धति से वैज्ञानिक तकनीकी ज्ञान का प्रसार हुआ है।
- संचार के साधनों में वृद्धि हुई है।
- इसमें मानवतावादी विचारधारा बढ़ी है।

orZeku f'k{kk i.kkyh d nks"k % वर्तमान शिक्षा प्रणाली राष्ट्रीय एवं सामाजिक जीवन के अनुकूल नहीं है। यद्यपि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में काफी परिवर्तन हो गए हैं, फिर भी इसमें कुछ दोष हैं, जैसे–

- वर्तमान शिक्षा प्रणाली सर्वथा अनुपयोगी है।
- इसमें नवयुवकों का नैतिक स्तर मिट रहा है।
- यह शिक्षा प्रणाली व्यय साध्य है।

- इस शिक्षा प्रणाली से कोरा किताबी ज्ञान दिया जा रहा है।
- इसमें फैशनपरस्ती एवं अंधानुकरण हो रहा है।

vkj mi;kxh cukus dk mik; % वर्तमान शिक्षा प्रणाली राष्ट्रीय एवं सामाजिक जीवन के अनुकूल नहीं है। अतः इसमें सुधार या परिवर्तन की परम आवश्यकता है। इस संबंध में निम्न उपाय कारगर सिद्ध हो सकते हैं–

- पाठ्यक्रम संतुलित बनाया जाए।
- माध्यमिक स्तर तक निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था हो।
- व्यावसायिक शिक्षा पर जोर दिया जाए।
- युवकों के सर्वांगीण विकास और नैतिक उत्थान पर ध्यान रखें।
- मेधावी युवकों को उच्च तकनीकी शिक्षा दी जाए।
- शिक्षा स्तर पर अनुशासन और नैतिकता का विशेष ध्यान रहे।
- ज्ञान–साधना को जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य माना जाए।
- शिक्षा को आदर्श, चरित्र एवं संस्कार–निर्माण का साधन समझा जाए।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि समय–समय पर शिक्षा स्तर में सुधारात्मक उपाय करने से विद्यार्थी में स्वावलंबन की भावना पनपेगी। वे अपना सम्यक, चारित्रिक, बौद्धिक विकास कर सकेंगे और सामाजिक दायित्व का बोध बढ़ने से अपने कर्तव्यों का सही ढ़ंग से सम्पादन कर सकेंगे। शिक्षा–सुधार से बेरोजगारी–बेकारी नहीं रहेगी, युवा शक्ति का देश–हित मे समुचित उपयोग होगा। सभी के जीवन स्तर में सुधार होगा तथा राष्ट्र के चहुंमुखी विकास को उचित गति मिल सकेगी।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जीवन के सर्वांगीण विकास में अपने शैक्षिक पिरामिड की बुनियाद को सुढ़ृढ़ बनाना होगा, तभी हम अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल होंगे। ◈

शोषण करने वालों पर लगे अंकुश

◈ **pkfjek** नौवीं
जिनवाणी भारती पब्लिक स्कूल सैक्टर–4, द्वारका, दिल्ली

चूंकि अब तक कोई विचारणीय, अनुकरणीय तथा स्वीकार्य विकल्प प्रस्तुत न हो सका, इसलिए वर्तमान शिक्षा को अपनाना लोगों की मजबूरी है। विकल्प के अंतर्गत जो प्रश्न उठते हैं, पहला यह है कि वर्तमान सन्दर्भों में एक सम्यक भारतीय शिक्षा को स्वदेशी, सार्थक और मूल्य आधारित बनाना है। इसके लिए भारतीय पद्धति से आधुनिक विषयों की शिक्षा दी जानी चाहिए। साथ ही गुरु एवं शिष्य के बीच भावनात्मक आत्मीय संबंधों के निर्माण पर जोर दिए जाने की जरूरत है।

oर्तमान शिक्षा में गुरु या अध्यापक श्रद्धा का पात्र न होकर वेतन भोगी नौकर बन गया। अध्यापक की भूमिका गौण हो गई तथा विद्यालय–विश्वविद्यालय के प्रबंध तंत्र की भूमिका महत्वपूर्ण हो गई। वर्तमान शिक्षा का इतिहास अधिक प्राचीन नहीं है। प्रायः लोग इसे मैकाले की शिक्षा प्रणाली के नाम से पुकारते हैं। लॉर्ड मैकाले ब्रिटिश पार्लियामेंट के ऊपरी सदन का सदस्य था। 1857 की क्रांति के बाद जब 1860 में भारत के शासन को ईस्ट इण्डिया कंपनी से छीनकर महारानी विक्टोरिया के अधीन किया गया तब मैकाले को भारत में अंग्रेजों के शासन को मजबूत बनाने के लिए आवश्यक नीतियां सुझाने का महत्वपूर्ण कार्य सौंपा गया था।

उसने सारे देश का भ्रमण किया। उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि यहां झाड़ू देने वाला, चमड़ा उतारने वाला, करघा चलाने वाला, कृषक, व्यापारी, मंत्र पढ़ने वाला आदि सभी वर्ण के लोग अपने–अपने कर्म को बड़ी श्रद्धा से हंसते–गाते कर रहे थे। सारा समाज संबंधों की डोर से बंधा हुआ था। शूद्र भी समाज में किसी का भाई, चाचा या दादा था तथा

ब्राह्मण भी ऐसे ही रिश्तों में बंधा था। बेटी गांव की हुआ करती थी तथा दामाद–मामा आदि रिश्तें गांव के हुआ करते थे।

इस प्रकार भारतीय समाज भिन्नता के बीच भी एकता के सूत्र में बंधा हुआ था। उस समय धार्मिक सम्प्रदायों के बीच भी सौहार्दपूर्ण संबंध था। यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि 1857 की क्रांति में हिन्दू–मुसलमान दोनों ने मिलकर अंग्रेजों का विरोध किया था। मैकाले को लगा कि जब तक हिन्दू–मुसलमान के बीच वैमनस्यता नहीं होगी तथा वर्ण–व्यवस्था के अंतर्गत संचालित समाज की एकता नहीं हटेगी तब तक भारत पर अंग्रेजी शासन मजबूत नहीं होगा।

भारतीय समाज की एकता को नष्ट करने तथा वर्णाश्रित कर्म के प्रति घृणा उत्पन्न करने के लिए मैकाले ने वर्तमान शिक्षा प्रणाली को बनाया। अंग्रेजों की इस शिक्षा नीति का लक्ष्य था संस्कृति, फारसी तथा लोक भाषाओं के वर्चस्व को तोड़कर अंग्रेजी का वर्चस्व कायम करना। साथ ही सरकार चलाने के लिए देशी अंग्रेजी को तैयार करना। इस प्रणाली के जरिए वंशानुगत कर्म के प्रति घृणा पैदा करने और परस्पर विद्वेष फैलाने की भी कोशिश की गई थी। इसके अलावा परिश्रमी सभ्यता एवं जीवन पद्धति के प्रति आकर्षण पैदा करना भी मैकाले का लक्ष्य था।

इन लक्ष्यों को प्राप्त करने में ईसाई मिशनरियों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ईसाई मिशनरियों ने ही सर्व प्रथम मैकाले की शिक्षा–नीति को लागू किया। आज स्वतंत्रता के इतने वर्ष बाद यह स्पष्ट है कि मैकाले की शिक्षा नीति अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में पूर्णतया सफल हो चुकी है। यह हमारे समाज के अभिजात्य वर्ग की मानसिक गुलामी का प्रतीक है।

आईएएस, आईपीएस आदि के माध्यम से आज भी देशी अंग्रेज तैयार किए जा रहे हैं। वंशानुगत कर्म के प्रति सभी वर्ण हीन भावना एवं घृणा के शिकार हो चुके हैं। परिश्रमी सभ्यता एवं जीवन पद्धति के प्रति आकर्षण अपने चरम पर है। शिक्षा में मानव को योग्य एवं चरित्रवान बनाने का वास्तविक लक्ष्य छूट गया तथा डिग्री–सर्टिफिकेट का महत्व बढ़ गया। पेशेगत योग्यता की शिक्षा महंगी हो गई। इसने एक उद्योग

का रूप ग्रहण कर लिया। सेवा भाव का लोप हुआ तथा व्यापारिक मनोवृत्ति हावी हो गई।

इस प्रकार वर्तमान शिक्षा से सामाजिक दायित्व एवं राष्ट्रीय कर्तव्य का ज्ञान न मिलने से विद्यार्थी स्वयं एवं परिवार केन्द्रित होकर अधिक से अधिक अर्थोपार्जन के वशीभूत है। वे अधिक से अधिक भौतिक सुख–साधनों के संग्रह–उपभोग को ही जीवन का लक्ष्य समझ बैठे हैं। येनकेन–प्रकारेण अर्थोपार्जन के लक्ष्य ने कर्म के अनुष्ठान में नैतिक मानदण्डों को नष्ट किया है। भौतिक सुखों को भोगने की सीमा टूटने से अनेक प्रकार की शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक समस्याएं उत्पन्न हुईं। अपनी भाषा संस्कृति तथा राष्ट्र के प्रति गौरव स्वाभिमान की भावना नष्ट हुई।

कहना न होगा कि वर्तमान शिक्षा विद्यार्थी को शरीर, मन एवं बुद्धि से रुग्ण बनाकर कुसंस्कृत तथा पतनोन्मुख बना रही है। राजनीतिक संघर्ष से भले ही देश को शारीरिक स्वतंत्रता मिली पर विगत साठ वर्षों में मानसिक–बौद्धिक परतंत्रता की बेड़िया मजबूत हुई हैं। वर्तमान शिक्षा की कमियों को स्वीकार कर विगत दो दशकों से इसमें आमूल परितर्वतन की आवश्यकता की बात को अनेक विद्वानों, विचारकों एवं राजनेताओं ने उठाया है।

चूंकि अब तक कोई विचारणीय, अनुकरणीय तथा स्वीकार्य विकल्प प्रस्तुत न हो सका, इसलिए वर्तमान शिक्षा को अपनाना लोगों की मजबूरी है। विकल्प के अंतर्गत जो प्रश्न उठते हैं, पहला यह है कि वर्तमान संन्दर्भों में एक सम्यक भारतीय शिक्षा को स्वदेशी, सार्थक और मूल्य आधारित बनाना है। इसके लिए भारतीय पद्धति से आधुनिक विषयों की शिक्षा दी जानी चाहिए। साथ ही गुरु एवं शिष्य के बीच भावनात्मक आत्मीय संबंधों के निर्माण पर जोर दिए जाने की जरूरत है। गुरु के महत्व को बढ़ाकर प्रबंध–तंत्र के वर्चस्व को घटाना भी आवश्यक है। उच्च–शिक्षा को सर्व सुलभ बनाने के लिए आर्थिक दबाव को तो कम करना ही होगा। इसके अलावा चरित्र निर्माण के लिए विशेष पाठ्यक्रम एवं प्रयास की आवश्यकता है।

वर्तमान शिक्षा में अध्यापक विद्यार्थी को योग्य बनाने के दायित्व से रहित है। इसलिए शिक्षा के यान्त्रिक हो जाने से डॉक्टर, इंजीनियर जैसे कल–पूर्जों का निर्माण तो हो रहा है लेकिन मानव का निर्माण बाधित हो गया है। शिक्षा को स्वदेशी, भावनात्मक तथा सार्थक बनाने के लिए सबसे पहले कक्षाओं का निर्माण विषयवार हो और विषय के अनुसार कक्षाओं को सजाया जाए। प्रवेश में अध्यापक की भूमिका निर्णायक हो। प्रबंध तंत्र का वर्चस्व कम हो। अध्यापकों पर विद्यार्थी को योग्य बनाने का भार हो।

परीक्षाओं का संचालन एवं नियंत्रण इस प्रकार हो कि विद्यार्थी निर्भय होकर उत्साह से परीक्षा में बैठे। निजी शिक्षण संस्थाओं द्वारा किए जा रहे आर्थिक शोषण पर तो अंकुश लगाना ही चाहिए। शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश एवं नियुक्तियों के संदर्भ में राजनीकि हस्तक्षेप समाप्त होना चाहिए। ◈

प्रयोग क्षमता की भी हो परीक्षा

◈ 'kHke flag नौवीं
डी.ए.वी. सेंटेनरी पब्लिक स्कूल
सैक्टर–12 हुडा, पानीपत,
हरियाणा

नैतिक मूल्यों को प्रधानता प्रदान करना जरूरी है जिससे शिक्षा के स्तर में परिवर्तन आए और नैतिक मूल्य-जैसे सत्य, अहिंसा, सद्भावना, देश प्रेम आदि विचारों का भी विकास हो जिससे विद्यार्थी प्रगति के पथ पर आगे बढ़ते हैं। शिक्षा को बढावा देने के लिए विद्यार्थी को अपने रचयिता को समीप लाने के लिए नैतिक विकास आवश्यक है। शिक्षा प्रक्रिया को गंभीर अंतर्दृष्टि तथा उच्चतम नैतिक एवं आध्यात्मिक चरित्र की ओर अग्रसर होना चाहिए।

f'kक्षा वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं, शिक्षा वह ज्ञान है जिसे प्राप्त करके अपने जीवन का सर्वांगीण विकास करते हैं। शिक्षा का प्रथम चरण परिवार होता है, जिसमें वह सामाजिक जीवन व्यतीत करता है। आज के युग में माता–पिता अधिक से अधिक धन कमाने में व्यस्त रहते हैं, परिणामस्वरूप बच्चों की समस्त शिक्षा विभिन्न प्रकार के शिक्षा केन्द्रों में ही होती है। माता–पिता के घर से दूर होने के कारण अध्यापकों के कंधों पर भारी मात्रा में युवकों को शिक्षा प्रदान करने का उत्तरदायित्व होता है। स्वस्थ मन में ही शिक्षा का विकास होता है। शारीरिक व मानसिक विकास शिक्षा के द्वारा ही संभव हो सकता है।

आज का युग जटिलताओं, समस्याओं, भौतिकता तथा विज्ञान का युग है। इस युग में स्कूल विद्यार्थी को शिक्षा देने के लिए महत्वपूर्ण साधन है। प्राचीन युग में स्कूल केवल शिक्षा का केंद्र था जहां पर वे शिक्षा प्राप्त करते थे तथा परिवार में रहकर समस्त रीति रिवाजों, विश्वासों, व्यवसायों, भाषा, धर्म तथा नैतिक मूल्यों एवं सांस्कृतिक मूल्यों की शिक्षा ग्रहण कर लेते थे।

आज एकल परिवार में रहकर बच्चे का सामाजिक तथा व्यक्तिगत गुणों का विकास नहीं होता है जिसके कारण वह जीवन में गलत धारणा अपना लेता है और अपने अनमोल जीवन को नष्ट कर देता है। इसलिए आज के बदले वैज्ञानिक युग में शिक्षा बहुत आवश्यक है।

हमारे देश के लोग धर्म, जाति, भाषा, क्षेत्र तथा लिंग के आधार पर बंटे हुए हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि भारत में अब भी लगभग आधी से अधिक जनसंख्या अशिक्षित है, अज्ञानवश व विभिन्न राजनैतिक दलों के प्रचार की शिकार बन जाती है। जातिवाद की बुराई की सीमा का तो कोई महत्व ही नहीं रहा। इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षा उनके विचारों तथा व्यवहार को उदार बनाए। ऐसा केवल शिक्षा द्वारा ही संभव हो सकता है।

जीवन के सर्वांगीण विकास में वर्तमान शिक्षा पद्धति को और उपयोगी बनाने के लिए मातृभाषा को अधिक महत्व देना चाहिए। मौखिक भाषा का ज्ञान मातृभाषा में होता है, इसलिए मातृभाषा को प्रधानता दी जानी चाहिए। क्योंकि शिक्षा की सर्वप्रथम सीढ़ी मातृभाषा है जो वह अपने परिवार से सीखता है, अध्यापक भी मातृभाषा द्वारा उसे पढ़ना व लिखना सिखाते हैं।

शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक विकास शिक्षा द्वारा ही संभव हो सकता है। शिक्षा के द्वारा ही स्वच्छ मन व तन रख कर शिक्षा प्रदान की जाती है। शिक्षा के द्वारा मनुष्य में अपनी आत्मा पर विश्वास उत्पन्न होना चाहिए। शिक्षा को यह सिखाना चाहिए कि यदि मनुष्य में साहस हो तो वह प्रत्येक कार्य कर सकता है। ''उठो, जागो और तब तक न रुको जब तक तुम्हारा उद्देश्य पूरा नहीं होता।''

जीवन के सर्वांगीण विकास में अध्यापक की विशेष भूमिका होती है, इसलिए अध्यापक को चरित्रवान एवं उचित आचरण वाला होना चाहिए। अध्यापक अपने उच्च आदर्शमय जीवन से विद्यार्थी को प्रभावित करता है तथा शिक्षा को बढ़ावा देने में शिक्षक की विशेष भूमिका होती है।

शिक्षा को व्यवसाय के रूप में विकसित करने वाला शिक्षक कभी आदर्श

शिक्षक नहीं बन सकता। शिक्षक विद्यार्थी के पिता, मित्र, सहयोगी तथा पथ–प्रदर्शक अनेक रूप में कार्य करता है। उसमें ज्ञान–कौशल, उत्साह, देश भक्ति, सशक्त चरित्र तथा विशिष्ट प्रशिक्षिण होना चाहिए। उसे स्वयं उन्हीं गुणों को धारण करना चाहिए जिन्हें वह विद्यार्थियों में निर्मित करना चाहता है। उसे अपने विद्यार्थियों के मस्तिष्क की अपेक्षा ह्रदय को अधिक प्रशिक्षित करना चाहिए।

शिक्षा प्रणाली को सुधारने के लिए परीक्षा प्रणाली में परिवर्तन करना चाहिए। आज की शिक्षा परीक्षा प्रधान है। विद्यार्थी केवल उतना ही सीखना चाहते हैं जितने से परीक्षा में उत्तीर्ण हो सकें, अतः हमें परीक्षा प्रणाली में परिवर्तन करना होगा। परीक्षा रटने पर नहीं अपितु समझने पर आधारित होनी चाहिए। परीक्षा में केवल ज्ञान की परीक्षा ही नहीं अपितु ज्ञान के प्रयोग करने की क्षमता की भी परीक्षा होनी चाहिए।

स्त्री शिक्षा पर बल मिलना चाहिए। शिक्षा में लड़कियों की शिक्षा पर विशेष बल देना चाहिए। क्योंकि शिक्षित नारी ही एक उज्ज्वल समाज की स्थापना कर सकती है, इसलिए स्त्री–शिक्षा द्वारा पूरे परिवार को शिक्षित किया जा सकता है। जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए स्त्री शिक्षा पर बल देना बहुत आवश्यक है। पाठ्यक्रम में वैज्ञानिक विषयों को ही महत्व देना चाहिए। प्रयोग द्वारा वैज्ञानिक विधि को समझाना चाहिए। जीवन के विकास में वैज्ञानिक विषयों द्वारा सत्य तथ्यों को प्राप्त करके विद्यार्थियों में उत्साह की भावना बढ़ती है।

नैतिक मूल्यों को प्रधानता प्रदान करना जरूरी है जिससे शिक्षा के स्तर में परिवर्तन आए और नैतिक मूल्य–जैसे सत्य, अहिंसा, सद्भावना, देश प्रेम आदि विचारों का भी विकास हो जिससे विद्यार्थी प्रगति के पथ पर आगे बढ़ते हैं। शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए विद्यार्थी को अपने रचयिता को समीप लाने के लिए नैतिक विकास आवश्यक है। शिक्षा प्रक्रिया को गंभीर अंतर्दष्टि तथा उच्चतम नैतिक एवं आध्यात्मिक चरित्र की ओर अग्रसर होना चाहिए।

शिक्षा विश्वासात्मक होनी चाहिए। यह शास्वत् सत्य पर आधारित होनी

चाहिए। शिक्षा बच्चों की मूल प्रवृत्तियों के अनुसार उसे करके सीखने के अवसर प्रदान करती है। शिक्षा में हस्तकार्य तथा उद्योग का चयन करना चाहिए। शिक्षा को अनिवार्य, निःशुल्क तथा सार्वभौमिक बनाना चाहिए। शिक्षा के द्वारा उसकी मूल प्रवृत्तियों का उदात्तीकरण हो जाता है। विद्यार्थी शिक्षा द्वारा ही पशु व्यवहार छोड़कर ऐसा व्यवहार करने लग जाता है जिससे उसका जीवन सरल तथा सुखमय हो जाए। लोकतंत्र की सफलता तो शिक्षा पर निर्भर करती है।

भारत एक निर्धन देश है। आर्थिक संकटों से घिरे होते भी उसने शिक्षा को निःशुल्क कर दिया है परंतु कुछ ऐसे माता–पिता हैं जो अपने बच्चों को फिर भी स्कूल नहीं भेजते। बच्चे उनकी कमाई का साधन हैं, इसलिए ऐसे माता–पिता को विवश करने के लिए शिक्षा को अनिवार्य बनाना होगा। शिक्षा राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के लिए होनी चाहिए। भारत एक धर्मनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक राज्य है जहां विभिन्न धर्म विकसित हो रहे हैं। इसलिए शिक्षा में सभी धर्मों का आदर करने की प्रेरणा देनी चाहिए जिससे राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा मिले। ◈

असहाय हो चली है शिक्षा पद्धति

◈ _f'kdk tu नौवीं
लीलावती विद्या मंदिर
शक्तिनगर, दिल्ली

शिक्षा के नाम पर भारत सरकार ने तीन कमीशन बनाये परंतु शिक्षा में सुधार नहीं हो पाया। सरकार को दिए गये सुझाव फाइलों में दबकर रह गये। शिक्षा का मस्तिष्क पर ऐसा प्रभाव होता है कि बुद्धि नहीं मानती है फिर भी मुंह से वही निकल जाता है, इसलिए जब तक शिक्षा संबंधित आधारभूत बातें ठीक नहीं होतीं तब तक देश की समस्याएं, जो आज दिख रही हैं, उनका समाधान भी बहुत कठिन है।

tीवन की नींव ही शिक्षा है, इसलिए हमने एक नारा दिया है कि यदि देश को बदलना है तो पहले शिक्षा को बदलना होगा। जब तक देश में शिक्षा नहीं बदलेगी तब तक देश में वास्तविक परितर्वन नहीं हो सकता। पिछले 150–175 साल में जिस शिक्षा को पढ़कर हम आगे बढ़ रहे हैं, उसमें उनका जो मानस बन गया है उसमें यदि अर्थशास्त्री है तो उसे मार्क्स के सिद्धांत ज्यादा अच्छे लगते हैं और चाणक्य की बात करो तो भगवाकरण की बात लगती है।

किसी भी व्यक्ति ने 15–20 साल जो पढ़ाई की तो उसी के आधार पर उसका जीवन बनेगा। शिक्षा ऐसी चीज है कि छोटी उम्र से बच्चे के मन पर इसका गहरा प्रभाव होता है। बचपन का अधिक प्रभाव होता है। उसको बदलना मुश्किल होता है।

भारतीय शिक्षा व्यवस्था की समस्याओं से लगभग सभी पढ़े–लिखे लोग परिचित हैं। सर्वप्रथम यह सुनिश्चित किया जाए कि भारत की जनसंख्या के अनुपात में आवश्यकता अनुसार कार्य सुचारू रूप से चलें। इस तथ्य

को भी सुनिश्चित किया जाए कि सभी प्रकार का शिक्षण और प्रशिक्षण प्रत्येक भारतीय नागरिक हेतु पूर्णतया मुफ्त हो तथा पुस्तकें भी मुफ्त में वितरित की जाएं। साथ ही बारहवीं तक प्रवेश हेतु किसी भी प्रकार ही योग्यता–परीक्षा को प्रतिबंधित किया जाए।

भारत में प्राचीन शिक्षा पद्धति, जिससे विद्यार्थी को ज्ञान विज्ञान में पारंगत बनाकर जीवन में छोड़ दिया जाता था, उसके स्थान पर एक नई शिक्षा पद्धति ने जन्म लिया। जनता को शिक्षित करने के उद्देश्य से लार्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति का जन्म हुआ। भारत में शिक्षण संस्थाओं का जाल फैला है। भारतीय जनता शिक्षित होने लगी किंतु जीवनयापन की दृष्टि से पूर्ण तथा अयोग्य। रूप–रंग में स्वदेशी, परंतु आचार–विचार में पश्चिमी ऐसे सुयोग्य पढ़े–लिखे व्यक्ति अंग्रेजी शासन की नींव मजबूत करने लगे। विदेशी शासन भी तो यही चाहता था। एक नए वर्ग का उदय हो गया।

अंग्रेजी शिक्षा नीति भारतीय संस्कृति, परंपरा और राष्ट्रीय जीवन के विपरीत थी। इसका परिणाम यह हुआ कि शिक्षित व्यक्ति कार्य से जी चुराने और परिश्रम से कतराने लगा। खेतों, खलिहानों और कारखानों में पूरी लगन से कार्य नहीं किया जा रहा है और बिना परिश्रम के कुछ ही दिनों में धनवान बनने की इच्छा ने आज भ्रष्टाचार, चोरी, मिलावट, रिश्वत और तस्कर व्यापार को जन्म दे दिया है। आज का शिक्षित युवक अपने वंश परम्परागत कार्य करने के लिए तैयार नहीं है। शिक्षित बेरोजगारो की भीड़ बढ़ती जा रही है। आज नौकरी ही शिक्षा का उद्देश्य बन कर रह गई है।

शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति में सदाचार के गुण उत्पन्न करना, नैतिकता, चरित्र, स्वावलम्बन, परोपकार, सम्मान की भावना उत्पन्न करना है। आधुनिक शिक्षा पद्धति इन गुणों को कहां तक विकसित करा पा रही है, यह एक विचारणीय विषय है। आज का शिक्षित युवक न केवल दूसरों को नहीं वरन् अपने आपको भी कठिनाई में पा रहा है। आज देश में डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक भी स्वयं को बेरोजगार पाते हैं। ग्रामों से जनसंख्या का

पलायन जारी है। नगरों में भीड़भाड़ बढ़ती जा रही है। प्रत्येक तथाकथित शिक्षित नगर में 'बाबू' बन जाना अपना परम उद्देश्य समझता है।

शिक्षा के नाम पर भारत सरकार ने तीन कमीशन बनाये परंतु शिक्षा में सुधार नहीं हो पाया। सरकार को दिए गये सुझाव फाइलों में दबकर रह गये। शिक्षा का मस्तिष्क पर ऐसा प्रभाव होता है कि बुद्धि नहीं मानती है फिर भी मुंह से वही निकल जाता है, इसलिए जब तक शिक्षा संबंधित आधारभूत बातें ठीक नहीं होतीं तब तक देश की समस्याएं, जो आज दिख रही हैं, उनका समाधान भी बहुत कठिन है।

शिक्षा में नये–नये प्रयोगों ने विद्यार्थी को कहीं का न छोड़ा। आज पब्लिक स्कूलों की महंगी पढ़ाई साधारण निर्धन विद्यार्थी में कुंठा और निराशा को जन्म दे रही है। समाज को शिक्षित और अर्द्धशिक्षित वर्गों में बांटे जाने की व्यवस्था जारी है। गतिहीन और असहाय शिक्षा पद्धति अनुपयोगी, अव्यावहारिक और जीवन की वास्तविकता से परे है। शिक्षा को जब तक व्यावसायिक नहीं बनाया जाता, श्रम से मोह करना नहीं सिखाया जाता और देश की आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं बनाया जाता तब तक वर्तमान शिक्षा पद्धति के द्वारा हानि ही अधिक होगी। ◈

ENGLISH

Educational system vary widely

◈ **Tanwi Maheswari**-X
Tulsi Amrit Vidyapeeth
Sr. Sec. School
Amet, Rajasthan

Just because educational system is already efficient, does not mean it cannot be constantly monitored and studied for improvement. It's vitally important for educational administrations to follow this goal, in order to facilitate and promote the academic, educational and cultural well being of our society.

It depends on which educational system we mean. Educational system vary widely according to type of school (primary, secondary, etc.), location (country, state, etc.) and other variables.

However, all educational systems can do improvement in simpler areas, such as hiring of staff, development of curriculum or selection of reproduces and materials. Therefore, we can probably just use a generic outline that makes basic statements.

Every school administration has a professional and ethical duty to look for ways to make what is good even better and the best of all when school is constantly striving for self-improvement. This effort shows because people make smarter decisions that are based on sound judegment and educated ideas. That's why it is important for a school system to constantly look for ways to better itself.

Improve the budget (a) Look for better ways to spend money (b) Spend less money on infrequent activities. (c) Use more funds to promote exchange programmes among students and the community. (d) Use cheaper equipment where safety is not a concern such as pencils, papers, clips, etc. Spend more money on security, books, computers, and library facilities. Develop more services for students and parents.

a. Move after school-cooking or computers, classes for students and their families.

b. Show movie before and after school hours while students wait for cars or buses.

c. Set students sign up for self improvement seminars and programs. Maintain a more nutrition's menu for poor and child students.

d. Add more salad for better nourishment of poor

e. Eliminate soft drinks.

f. Offer a wider variety of whole grains, lentils, soups are healthful snacks.

In education on gender is most widely spreaded problem.

But gender is not one of relevant factors in determining management skill (probably education and experience and more important). We can say that in today's world, males and females are not different in their approach to money management.

Alternatively or additionally, we could use the argument that in more, dominant cultures of families, the woman may not have the authority to manage expenditures, since the male would usually retain the ability to spend what he considers "his" money anyway he pleases, without the budgetary constraints that the manager would seek to impose.

The various awakening programmes launched by the govt. for girls educations. 33% reservation given to females in Pachayats, have played positive roles in this direction. Now the importance of educating the girls is being felt. Several other policies like 30% reservation to candidates in services, enhanced subsidy to girl entrepreneurs. Various self employment schemes launched for the benefits of women like women entrepreneurs, development programme, self help groups of women have resulted in mobilizing and directing the parents to get their daughters educated. The educated woman can help in eradicating many social evils prevalent in the society, like dowry, killing of the female fetus, discrimination in the matter of education of the girls, literacy and so on. Many programmes of the Govt. like population control, polio eradication of rural area in which the cooperation and co-ordination of the rural masses are necessary, can well be taken care by women representatives. Education gives effectiveness and confidence to the women. A woman influences the activities and decisions of family than anyone else.

Conclusion

Just because educational system is already efficient does not mean it cannot be constantly monitored and studied for improvement. It's vitally important for educational administration to follow this goal, in order to facilitate and promote the academic, educational and cultural well being of our society. ◈

School excess has been expanded by investment in school infrastructure and recruitment of teachers. In higher education too, the number of providers continue to rise rapidly. A new law enshrining the rights of all children to free and compulsory education will further lift enrolment, bringing closer the government's goal of universal elementary education, which comprises eight years of schooling.

Education needs to sustain the interest of the Recipient

◈ **Amartya Upmanyu** XI
Dayanand Public School
Shimla, Himachal Pradesh

Education is any act or experience that has formative effect on the mind, character or physical ability of an individual. In technical sense education is the process by which society deliberately transfers its accumulated knowledge, skills and values from one generation to another. Thus, education is all about grooming up the mind, character and physical ability of an individual and instilling him/her with knowledge, skills and values to bring forth his/her potential.

Education is categorized as primary, secondary and tertiary. Primary Education is the one which is given up to ten years of age. Primary Education helps to nurture the child's logical thinking ability, communication skills, values system, manners and curtsies, arithmetic skills and critical thinking ability. Secondary education is given between eleven and seventeen years of age. The idea is to install confidence in a child through religion of his inherent abilities, equip him to narture his abilities and aptitude further, help him understand social,

cultural, regulatory, political and legal systems of the society with social skills like organising the teams or groups, leading such groups, discipline, appreciation of others, etc. On the other hand, tertiary education seeks to nurture and improve financial productivity on an individual. It prepares an individual to recognize his/her needs and wants and acquires skills to further enhance his abilities and aptitude to meet those needs by negotiating his space in the society. The idea of tertiary education is to convert a human being into a professional.

In summary, aim of education is to develop new frontiers of the subject or to extend the boundaries of the subject further to support human pursuits in that direction. It arms an individual to the well-being of self as well as that of the society. Education needs to sustain the interest of the recipient, helps equip him to develop his aptitude and skills, give guidance about how to approach the subject and pursue self-interest and goals for further announcement, challenge his physical and mental abilities to further research the subject.

If the education system has advantages, it has certain disadvantages too. The Indian education system, on an average, serves to effectively curb independent thinking, self-study skill, resourcefulness, intellectual maturity, academic confidence and maturity to learn with excellence. Academic excellence is often identified wrongly, with performance in examinations that tends to access mostly memorizing skills of a student, and the true measures of academic excellence such as depth of understanding, originality, authenticity creativity, strengthening the concepts, logical thinking, perseverance as systematically discouraged.

The Indian higher education enterprise has a public and private sector component, with the majority of students being enrolled in private sector institutions. Most of the private institutions are focused on engineering and technology, particularly electrical and computer engineering. Infact,

virtually all the top ranked educational institutions for engineering in India stand alone.

This contrasts greatly with the situation in the US. Most of the top engineering colleges are part of universities that have similarly excellent colleges. Increasingly, American universities are seeing the development of interdisciplinary Ph.D. programmes, where students and faculty are immersed in an environment that encourages contribution at the intersection of the various engineering and science disciplines.

It is difficult to see how the small focused technical institutions, proliferating in India would be able to generate this kind of atmosphere. It seems that the Indian government is further exacerbating the situation by creating more small and specialized institutions and not improving the existing universities.

The high stakes, high stress environment created in the years before entry into higher educational institutions turns many young people into lifelong competitions. Competitive exams, ... their ruthless ranks instill a lifelong sense of victory and vanquished in many of those who are successful. As creators of knowledge, the future of Indian universities seems rather bleak. No surprise than that not a single Indian University features in the top 200 ranked by the Times higher education.

Education has been given high priority by India's central and state governments and continues to grow fast. School excess has been expanded by investment in school infrastructure and recruitment of teachers. In higher education too, the number of providers continue to rise rapidly. A new law enshrining the rights of all children to free and compulsory education will further lift enrolment, bringing closer the government's goal of universal elementary education, which comprises eight years of schooling.

Expanding resources may also help but they need to be deployed more effectively, while incentives and professional development for teachers need to be strengthened. In higher education the government has proposed reformers which have the potential to bring about much needed improvements in regulatory effectiveness. Efforts should focus on reducing micro-regulation and improving institutional autonomy, in order to stimulate innovation and diversity. Increasing the number of institutions subjected to quality assessments will be important for lifting standards across the higher education system, while reform of recruitment and promotion mechanism could help attract and retain talent in academics. ◈

As the need for peace becomes more urgent, this fundamental contradiction, which, hinders its realization, demands a reassessment of the assumptions upon which the commonly held view of making's historical predicament is based. Dispassionately examined, the evidence reveals that such conduct, far from expressing man's true self, represents a distortion of the human spirit.

World peace is not only possible but inevitable

◈ **Angatpreet Kaur** IX
Guru Gobind Singh Public School, Gangsar, Punjab

The great peace towards which people of goodwill throughout the centuries have inclined their hearts of which seers and poets for countless generations have expressed their vision and for which for age to age the sacred scriptures of mankind have constantly held the promises, is now at long last within the reach of the nations. For the first time in history it is possible for everyone to view the entire planet, with all its myriad diversified people, in one perspective. World peace is not only possible but is inevitable. It is the next stage in the evolution of this planet in the words of one great thinker, " the planetrization of mankind".

Whether peace is to be reached only after unimaginable horrors precipitated by humanity's stubborn clinging to old patterns of behaviour, or is to be embraced now by an act of consultative will, is the choice before all who inhabit the Earth. At this critical juncture when the intractable problems confronting nations have been fused into one common

concern for the whole world, failure to stem, the tide of conflict and disorder would be unconscionably irresponsible. Among the favorable signs are the steadying grouping strength of the steps towards world order taken initially.

Near the beginning of this century in the creation of the league of nations, succeeded by more broadly based United Nations organization; the achievement since the second World War the majority of all the nations on earth, indicating the completion of the process of nation building and the involvement of these fledgling nations with older ones in matter of mutual concern. The consequent was vast increase in co-operation among hitherto isolated and antagonistic people and groups in international undertakings in the scientific, educational, legal, economic and cultural field, the rises in recent decades of an unprecedented number of international humanitarian organization; the spread of women's and youth movements cooling for an end to war and the spontaneous spawning of widening networks of ordinary people seeking understanding through personal communications.

The scientific and technological advances occruing in this unusually blessed century portend a great surge forward in the social evolution of the planet and indicate the means of humanity may be solved. They provide, indeed, the very means for the administration of the complex life of a united world. Yet barriers persist. Doubts, misconceptions, prejudices, suspicious and narrow self-interest beset nations and people in their relations one to another. It is out of a deep sense of spiritual and moral duty that we are impelled at this opportune moment to invite your attention to the penetrating insights first communicated to the rulers of mankind more than a century ago by Bah 'a' 'u' lla'h, founder of the Bahai', faith, of which we are the Trustees.

"The winds of despair", Baha's u lla wrote "are blowing from every direction, and the strike that divides and afflicts the

human race is daily increasing. The signs of impending convulsions and chaos can now be discerned, asmuch as the prevailing order appears to be lamentably defective." This prophetic judgement has been amply confirmed by the common experience of humanity. Flawns in the prevailing order are conspicuous, in the inability of sovereign states organized as United Nation, the threatened collapse of the international economic order, the spread of anarchy and terrorism, and the intense suffering which these and other afflictions are causing to increasing millions. Indeed, so much have aggression and conflict come to characterize our social, economic and religious systems, that may have succumbed to the view. That such behaviour is intrinsic to human nature and therefore ineradicable. With the entrenchment of this view, a paralyzing contradiction has developed in human affairs. On one hand, people of all nations proclaim not only their readiness but their longing for peace and harmony, for an end to the harrowing apprehension tormenting their daily lives. On the other, uncritical assent is given to the proposition that human beings are incorrigibly selfish and agressive and thus incapable of erecting a social system at once progressive and peaceful, dynamic and harmonious, a system giving free play to individual creativity and initiative but based on co-operation and reciprocity.

As the need for peace becomes more urgent, this fundamental contradiction, which, hinders its realization, demands a reassessment of the assumptions upon which the commonly held view of making's historical predicament is based. Dispassionately examined, the evidence reveals that such conduct, far from expressing man's true self, represents a distortion of the human spirit. Satisfaction on this point will enable all people to set in motion constructive social forces which, because they are consistent with human nature, will encourage harmony and co-operation instead of war and conflict. ◈

Goodwill is the feeling of co-operation and helpfulness

One should treat other as one would like others to treat oneself. Immorality is the active opposition to morality while amorality is variously defined as an unawareness of indifference towards, or disbelief in any set of moral standards of principles. "Morality" refers to Personal or cultural values, codes of conduct or social mores. It does not connote objective claim of right or wrong, but only refers to that which may be independent of the values or mores held by any particular people or culture.

◈ **Pankaj Singh Bhandari** X
Kendriya Vidyalaya
Birpur, Dehradun (UK)

The role of goodwill in nation building is a collective term sometime used as substitute honorific title or a title of honour for an ambassador of goodwill but, most appropriately for a generic recognition, it is a position or description that is usually indicated following the name of the individual from one country who resides in or travels to another country, in a diplomatic mission (or international friendship mission) at a peer to peer level, that is country to country, state to state, city to city or as a intermediary representing the people at the other extreme of an organisation.

Goodwill Ambassadors have been the official (or unofficial) part of governments and cultures for as long as diplomacy has existed; to exchange gifts and presents; humanitarian relief; or development aid, using well-known celebrities, scientists, authors, well known activists, and other High Society Figures.

Goodwill mission of countries is, usually, carried out or overseen by the head of state, and do not necessarily involve

diplomatic credentials outside a letter of presentation (or letter of credence). However, some states, such as Haiti, do issue credentials that include diplomatic immunity for goodwill ambassadors.

Many Governmental, Multilateral, Nongovernmental and nonprofit organisations utilize goodwill ambassadors to promote their programs and reach out to others with programmes that are based on good relations that are usually secular and apolitical. The organizations that use goodwill ambassadors to deliver agents include sister cities. The United Nations, organizations of the United Nation, the African Union, muscular, dystrophy association, Rotary International, and many others including the government of the United states of America, as seen in 2009 when former president Bill Mintod travelled to North Korea on a special “Goodwill Mission” and the common wealth of Kentucky with the kentucky colonels.

First we know about the word “Morality” refers to play a crucial, although often unacknowledged role in formulating ethical theories. To take “Morality” to refer to an actually existing code of conduct put forward by a society results in a denial that there is a universal morality.

The role of morality in nation building is that “Manner’, “Character”, “Proper Behavior” is the differentiation of intention, decision and action between these that are good or Right and those that are bad or wrong. Morality can be a body of standards or principles derived from a code of conduct from a particular philosophy, religion or culture, or it can derive from a standard that a person believes should be universal. Morality may also be specifically synonymous with “Goodness” or “ Rightness”.

Moral philosophy includes moral ontology, or the origin of morals, as well as moral epistemology, or what is known about morals, different systems of expressing morality have been

proposed, including Deontological Ethical system which adhere to a set of established rules, and normative ethical systems which consider the merits of actions themselves. An example of normative ethical philosophy is the Golden Rule which states that, “One should treat other as one would like others to treat oneself.”

Immorality is the active opposition to morality while amorality is variously defined as an unawareness of indifference toward or disbelief in any set of moral standards of principles.

“Morality” refers to Personal or cultural values, codes of conduct or social mores. It does not connote objective claim of right or wrong, but only refers to that which may be independent of the values or mores held by any particular people or culture.

The role of de-addition is very important because it helps the people in helping to stop the bonds, use of alcohol and eating of tobacco which can cause a very harmful disease, cancer or using drugs in his daily life. These, people cannot think about their families. These drugs take the many people’s lives. The work of de-addiction programme in India to prevent the use of drugs except for medicinal use was also adopted in the three international conventions on drug related matters. The recruited person will purely work under the aegis of the District Drug De-additions and rehabilitation society which will run the proposed rehabilitation centre. Preference will be given to male candidates. De-addiction programs are proactive initiative to address the deeply entrenched physical, social and psychological issues including addictions to alcohol and smoking. De-addiction programms have two modules namely:-

1. Stop smoking, start living
2. Device for alcohol de-addiction

De-addiction aims at empowering an individual to live addiction a free life. They mainly focus on creating awareness on

addictions and their long terms ill effects. They also include stress-handling techniques like Sudarshan Kriya, Pranayama and Yoga to overcome craving for smoking or alcohol, as stress plays an important role in developing addiction. The treatment includes medical detoxification, clinical and psychological therapies, managing abstinence and relapse prevention strategy.

The program enables an individual to carry forwards the vision for a great future that may consciously choose for themselves.

Goodwill is the feeling of co-operations and helpfulness.

Without goodwill, success cannot be achieved in nation building as nobody can exist in isolation. There has to be goodwill between states within a country, between nations and the world so that they share resources.

Morality defines the difference between good and bad and given the wisdom to choose the good.

De-addition is a prerequisite to have a healthy human resource who does not abuse drugs or alcohol. ◈

Children's natural curiosity should be around

◈ **Yash Goyal** X
Lovey Public Sr. Sec. School
Priyadarshni Vihar, Delhi

One of the major deterrent of our education system in India is that it gives our students a notion that their aim in life is to pass the university tests instead of becoming good, well mannered human beings with a sense of decency. This mentality has various socio-economic evils lashed onto it. Ultimately, the by-products of this kind of system does not add to national development, but it adds to its woes.

Education is the fundamental to human progress. It plays a vital role in all round development of an individual as well as the society. It plays a key role in creating patriotic, disciplined and productive manpower.

Why is India still a developing country and what is stopping it from being a developed country? This particular question makes me wonder when I read something about the Indian Education System. I see India's education system as lurching block towards its goals of achieving overall growth.

Education system in India consists of three major categories-general, vocational and technical which till liberation was public domain, i.e., they were state's responsibility, class grading dividing education system from primary to master level into 17 years. However, the pattern of annual exams is said to be critically controversial for effective measurement of quality, peformance and standard. Comparatively, semester examination is better and popular in this regards.

It is next to impossible to judge a student's ability in a subject within an imposed 3 hour period. It is a highly argued issue and much has been said on this genre. Besides our teachers cannot be computed by any ruler. This is clear from the growth of coaching institutions and the rising trend of private tuitions.

Again, the startling irony is that the best teachers are supposed to be employed in government schools, while people send their wards to private schools. A sense of answerability is that teachers hugely lack. The worst victims in the whole system as the disadvantageous students who are grasped in an issue of complete chaos and uncertainty.

One of the major deterrent of our education system in India is that it gives our students a notion that their aim in life is to pass the university tests instead of becoming a good, well mannered human being with a sense of decency. This mentality has various socio-economic evils lashed onto it. Ultimately, the by-products of this kind of system does not add to national development, but it adds to its woes.

The greatest downside of present education system lies in the fact that there is a wide gap between education and its market ability. Our education system does not adjust young students in a way that they can meet the requirement of the job market. Only a few lucky educated people are able to establish jobs in government or private hard to fulfil their basic requirement which, obviously brings them in a deep sense of anxiety and frustration leading them to involve in anti national, destructive and disrupting activities.

Our secondary education system is equally plagued for lack of uniformity in examination evaluation system, variation of syllabus and pattern of education, the syllabus itself is often redundant. Of course, this education system is not indigenous. It was on the fact drawn by the British who actually wanted to exploit the intellectual resources of brainy people for their

own fruitful results. They, however , succeeded in their mission in producing a class of officers who may efficiently carry on their plans and implement them with sincerity.

But it is really an irony that the country after gaining independence didn't realise the need to bring about changes in the education system in conformity with needs of the society which got independence after centuries of slavery. Disadvantageously, it has not been changed even today.

The remedial measures which are required to be taken should start at the primary level. It should be more creative and interesting, laying more emphasis to oral and practice learning. Syllabus should be adjusted in such a way that it seems enjoyable and not gruesome burden. Children's national curiosity should be around so that it may encourage a sense of learning. At the secondary level, a pattern of common entrance test should be introduced in which merit should constitute main consideration and everyone should be given equal opportunity.

Though this system has been started in some states, the need is to make it uniform throughout the country. This could reduce the anxiety about the unevenness of marks offered by different high schools. Besides, uniformity should also be followed in the examination evaluation system and in the syllabus as well. An independent body should guide and supervise all these things. Furthermore, there should be a proper performance appraisal system for the faculty members. Answerability should be laid down on teachers in case of poor performance.

The system of private tuitions should be banned completely, because the teachers having secured pay checks from on obliging government do not take interest in performing their duties. In addition, commercialisation of education should be stopped which pays title attention of merit and a lot to the highest payer of money for secured place in educational

institutions of high repute. Resource constraints compile a major drawback of the system. Investment in education is a core factor of educational development. Of course, the growth of educational investment leads to good performance of education. No doubt, a good, sound realistic educational system with a scientific base can eliminate want, hunger, diseases and evils of the society.

Therefore, such improvements and improvisations can lead to miraculous changes and all around development of the education system and of course of the country and of the society.

To conclude, I would like to say that “Education is the soul of a society as it passes from one generation to another”. ◈

Practical knowledge is more needed

◈ **Tania Dey** VII
Gyan Educational Institution, Guwahati

In today’s education system, knowledge is given less importance than scores which is irrelevant. Today’s education is not the subject of learning but only completion. There is a race to come first. It must be changed. Taking of education system is highly theoretical as our imagination power keeps on improving as we pretend to think a lot. Having a better practical environment right from the school and colleges can really help a person to think out of the base.

The vision of any institution should be to indicate knowledge and power to the younger generation. Vision has a great impact on learning. The mission of educational system in India should be the for the all round development of children.

If we dig-deep, we find that the most of the reforms are needed at school level which are responsible for the development of learning ability, shaping of character and the most important the thinking capacity of children. Our school including plus two levels has literally failed in development of the children and making them capable to take on the university level education.

As a result, our graduates, almost 90% of them, are found to be unemployable and irresponsible citizen. The primary qualities like sincerity, discipline, hardworking capabilities, applying their mind and brain to problem solving are lacking in general among our youths.

There are many problems in education system. One of the major problems is language. Most of the students understand in their mother language. We should learn English and Hindi as language, but study all other subjects in our mother language.

The reason for this is to enable the students to understand what they are studying more easily. Also teachers should be allowed to explain subjects more clearly as they will be able to express themselves better in their mother language as well. If there is no more communication problem, more learning will take place.

Too much is learned by memorizing without actually gaining deep knowledge and understanding. International studies have been conducted that prove the people in general learn better in their mother tongue UNESCO is one example of an organization that has conducted studies to prove these studies in India have also come to this conclusion. Actually it is every Indian citizen's right to be educated in their mother tongue according to the Indian constitution.

We need to change our education system. We study more theoretically and less practically. But practical knowledge is more needed. There should be subjects on communication skill and personality development so that we can develop and communicate in better manner.

Our present education system puts more pressure on students, rather than encouraging them to do better.

In today's education system, knowledge is given less importance than scores which is irrelevant.

Today's education is not the subject of learning but only completion. There is a race to come first. It must be changed.

Taking of education system is highly theoretical as our imagination power keeps on improving as we pretend to think

a lot. Having a better practical environment right from the school and colleges can really help a person to think out of the base.

Here are some changes which I want in our present education system. Firstly, focus on skill based education, we should reward creativity, original thinking, research and innovation. We should remember, memorizing things is not learning. ◈

Creating the atmosphere of toppers might have a very bad impact on some children which may lead to depression in some cases. Each student is a topper in his own way. Understanding the capacity of a child plays a key role in his overall intellectual growth. At the end of the day, we should realize that the purpose of education is to turn mirrors into windows' as said by Sydney J. Harris.

Exams should be replaced with regular assignments

◈ **Janvi Prasad** IX
Gitanjali Devashray
Telangna

Nelson Mandela said, "Education is the most powerful weapon we can use to change the world." It is the chief defence of a nation. The role of this indispensible element in our lives is the reason for what we are today. Education is what removes our doubts and fear; what makes us happy and peaceful; what makes us better human beings.

Education plays an important role in shaping an individual's career. The level of education helps people to earn recognition and respect in the society. Education is complete only when we learn how to live, how to hope, how to pray and how to behave with others.

But today, our education's main focus has become examination oriented and result oriented. Students are pushed to work hard and devote their time and energy to studies just to get a glimpse of eighties and nineties on their papers. Can a sheet of paper with numbers written on it be the only criteria of a student's intelligence? Education is not only about studying hard and

scoring good result. It is not the only benchmark to assess if one student has more knowledge than the other.

As soon as a child is admitted to school instead of feeding a hungry and thirsty mind, he is forced to sit with piles of books and is made to memorize nursery rhymes and numbers. As the child grows older the pressure increases tremendously and this often affects the child psychologically. We should always remember that a child must learn through observation and power of expression. It is essential for every child to stretchout to books rather than books being thrust into the child's hands.

In higher classes, the curriculum becomes a burden to students. Rather than enjoying the syllabus they are distressed as every project and activity is evacuated with marking. This learning is largely forgotten after the semester is over.

Creating the atmosphere of toppers might have a very bad impact on some children which may lead to depression in some cases. Each student is a topper in his own way. Understanding the capacity of a child plays a key role in his overall intellectual growth. At the end of the day, we should realize that the purpose of education is to turn mirrors into windows' as said by Sydney J. Harris.

Today, our country is lagging behind in some of the most important aspects of education. But it can be changed if looked into, in due course of time. Our education system should not be only marks oriented but should also indulge in creativity and innovation. The curriculum should emphasize on problem solving. Schools should encourage practical way of learning along with theory.

"Education is what remains after one has forgotten everything he learnt in school." said Albert Einstein. Exams should be replaced with regular assignments. Teachers should encourage interactive sessions in class to enable students to express their views on different topics.

Challenging activities and competition to arouse keen interest among students should be held frequently. Our education system should make students duty conscious by assigning certain responsibilities to every child. Sports and physical fitness should be made an integral part of the education system. Sports help in character building. It also helps to overcome mental exhaustion of a child. Inter school events should be organized throughout the academic year.

Children should be taught life skills to obtain a positive outlook and adapt to different situations. Every school should maintain a well updated library and encourage extra reading habits to open a child's mind and widen their horizon.

Quality education, not quantity is the need of the day! Benjamin Frankline said, "Tell me and I forget, teach me and I remember, involve me and I learn!" Motivational stories should be important subject in the curriculum to teach moral and ethics to children. Counselling and mental support should be given to the child if required. Instead of treating failure like a failure, treat it like an attempt to learn.

Schools should design lockers so as to reduce the burden of school bags on children. Space should be allotted for text books and their activity books.

Our education system is geared towards teaching and testing knowledge at every level as opposed to teaching 'skills'.

"Give a man a fish and you feed him one day, teach him how to catch fish and you feed him for a lifetime." I believe that if you teach a child a skill, you enable him for a lifetime. It is now left to the educationists to bring about a change in the present education system before it produces frustrated students who will make no contribution to the progress of Indian nation. Jai Hind! ◈

Education is not the filling of a vessel but the kindling of aflame

A good education system is one that makes a good human being first and a good doctor, engineer later. Nation building is very important task and every single school going child has integral part to play in it. Tomorrow's citizen would have to deal with challenges and would require a very new set of skills but it will still be important for them to know of today

◈ **Nitish Mishra** XI
Ambuja Vidyapeth Rawan
Chhattisgarh

The great philosopher Socrates had said "Education is not the filling of a vessel but the kindling of a flame". The main aim of education is the all round development of a student. Its purpose is to develop a student into a full, whole and integrated person. Thus, the objectives to be achieved through education and training are many and comprehensive. An ideal education system should thus help the learner in order to achieve and develop specified skills, abilities, insights and scientific temper. Beside literary and aesthetic appeal of education, there are utilitarian aspects as well and they are equally important. An ideal education system must aim to develop and bring out the best of a student's inner personality, without neglecting the outer and material aspects. Also "No person can be called properly educated if he or she fails in making a meaningful contribution to the society and country. Thus the question that we need to ask ourselves is that whether the present system of education caters to all these basic demands to in turn lead to allround development of our

nation's future and unfortunately for us the answer to this question here in India is 'NO' and thus there is an immediate need for reforms in our education system.

It is always easier to suggest something in general but to be able to carry out reforms in a particular established system one must first know the particulars of the system and thus to be able to bring out changes in present system of education to make it more effective for all round development. We must first figure out what is wrong with it in the first place.

All round development involves a student acquiring good communicational, vocational and performance skills amongst various other skills. Possessing good communicational skills provides a student with a good social life both in his/her student life and life after that as well as preference edge over others in job selection and interviews. India has also been home to great classical dancers, musicians, poets and theoretical writers, authors and actors in past and has had a culture of and for if. Aspirants for these fields also need early nurturing in school life and thus our present system of education needs to accommodate these particular fields. There are already a number of events providing a stage to budding artists organized by various groups and institutions as well as by schools at small scale but it needs a lot more than that to equip a student with these skills. Many a times these extracurricular activities take a backseat in the race for academic merit in schools because there are no officially mandatory provisions to enforce these activities. Thus, along with the semester system for evolution of syllabus there should also be a system for promotion and evolution of these very essential skills. So, the extracurricular performance of a student must also share and contribute to their year-end aggregate. Events like debate, speech, extempore, singing and dancing contests, creative writing competitions must be given as special a place in education session calendar as

usual semester phase gets and this will help create a multidimensional citizen for future India that looks back to their school days with fond memories.

Another hyper critical aspect associated with our present education system has been its lack of application in real life situations and lack of practical knowledge. Today for one to live in this ever changing, complex world, it takes a lot to deal smoothly and still our education system continues to omit these miscarry life skills from its syllabus.

The great Indian author- Munsi Prem chand ji said "The ultimate aim of education must be that of character development" and quite rightly so. It is very sure that we don't want human work machines. We want our future generations to inherit the non-material qualities that separate them from other animals. We want them to have a character that differentiates them from other and we also want them to know the differences between what is right and what is wrong. Thus character development is a very important feature of allround development and our present system does quite insufficient for this cause. Thus an ideal system must make some special provisions such as moral debates, group discussions, etc. on various issues of our society. There is no better means than literature reading for character development. Thus it must be made mandatory for students to read novels & story books of their choices apart from their existing syllabus and they must be made to present reviews of the books and accordingly be assessed.

Every now and then a time comes when an established system has to go through self assessment, not to be wiped away but to be improved upon. Like democracy an education system must evolve to something more efficient and meaningful, ever expanding and self critical to incorporate the growing demands that are made.

A good education system is one that makes a good human being first and a good doctor, engineer later. Nation building is very important task and every single school going child has integral part to play in it. Tomorrow's citizen would have to deal with challenges and would require a very new set of skills but it will still be important for them to know of today**.** Schools are the places where we spend probably the most precious time of our lives constantly learning something new and becoming the human beings. ◈

Education system in India needs upgradation

◈ **Rohan Khurana** X
Baal Baari Public School
Kadrabad, Modingar, U.P.

Communication in the mother language is essential for practical reasons. Then the students can concentrate on learning the subject itself. There won't be any doubts because of language barrier. Learning English is also important language skill. But if students can't study all the other subjects in their natural thinking language, it will stop them from understanding fully and deeply. If students can express themselves naturally in mother tongue it will help with their character development and also allow them to be more creative. Instead of simply copying ideas they can develop their own ideas.

"Education is the kindling of a flame, not the filling of a vesel:

There is no denying fact education is the base of the progress of a country. No nation can afford to ignore the values of education. Accessibility to education is one of the main advantages to present day education. Education is not the learning of facts. But it is the training of mind to think.

Faults in the present Education System Education has undergone drastic changes in the modern world. It wants to make anything better than it is necessary to look first on the faults of present education system. In today's education, knowledge is given more importance than scores. Today talent is judged by scores which is irrelevant. Now education is not the subject of learning but only competition. There is a race to come first. Our education system must be improved, It is purely theoretical and scarcely practical. This is a system of education producing mugger machines rather than intellectuals and it is the main reason why we are unemployed.

India has world's largest youth power but yet is considered underdeveloped country because of our educational system only. So, there it is prime requirement to improve it. Indians lay more stress on scores than knowledge.

Parents compare their children with "Sharma ji ka Ladka." If he fails he gets scolding and abuse of the society. Indian schools want their students to learn and mug up everything till their 10th standard. They never understand the capacity of a child. There is no personality development. Another drawback in the system is the quality of teachers. There is a lack of good teachers. Now-a-days teachers are less bothered about students. They just work for their monthly salary.

In India we are just focused to teach students what or why or how something happens anyway. We never focus the way we are teaching them, that in which perspective kids are getting the things or if asked to explain, in which manner kinds will explain it to others. If anybody wants to study computer programme from IIT then he has to give two exams JEE (main and advance) which consist of physics chemistry, maths which has no relation to computer programming. If we dig deep, we find a major drawback in the system, i.e. reservation is another important criteria in our education system which fails to get capable students into their dream university.

What to do to make present education system more effective and better?

- Education system in India needs up-gradation. The world is changing fast. New technologies are arriving. So why old syllabus is being taught in schools and colleges. Syllabus needs to be updated.
- We should be taught more practically rather than just being theoretical.
- One main purpose for educating people is to prepare them

for work. This should not mean getting high marks only. What is the use of giving the students marks when they don't deserve them? Then the qualification is a sheet of paper only. Students or a person should be judged according to his/her knowledge skills not on the basis of marks and qualification.

- Communication in mother language is essential for practical reasons. Then the students can concentrate on learning the subject itself. There won't be any doubts because of language barrier. Learning English is also important language skill. But if students can't study all the other subjects in their natural thinking language, it will stop them from understanding fully and deeply. If students can express themselves naturally in mother tongue it will help with their character development and also allow them to be more creative. Instead of simply copying ideas they can develop their own ideas.
- Education given to the students should be based on the interest or curiosity of the students. Why to study many subjects if the future is in the other field which is totally different from the subjects we are studying.
- Selection of students must be on the basis of knowledge, ability and capability of the student not on the basis of his/her caste. Deserving students must be slected.
- Now a days, there is system to pass all the students at 30-30%. But job opportunities is provided to the students scored above 70%. Then why to pass all the students at 30%.
- Smarter and digital education should be provided which increases the interest of the students. Students should be taught in this manner so that they can explain it to others also.

- We should focus on skill based education. We should reward creativity, original thinking, research and innovation. We should remember memorizing things is not learning.
- Children in school are not being guided well about careers. They hardly know about what options are available in career except doctors and engineers. So teachers should provide proper guidance to the students.

Conclusion

Just because an educational system is already efficient doesn't mean that it can't be constantly monitored and studied for improvement. It's vitally important to improve and follow these goals, in order to facilitate and promote the academic, educational and cultural well-being of our society, of our nation. ◈

Education has totally become commercial

◈ **Pooja** XI
Rao Man Singh Public School
Paprawat Road
Najafgarh, New Delhi

Personality development should also be an important subject. This helps the children to overcome the problems in the society. Education is not only about learning and gaining knowledge. It is also about moral values and ethics that every individual should know. Education is not something that helps to get some jobs. It should also give some mental support to students. Most of the students attempt suicide because they don't get good rank or job.

I think our education system must change. The way of teaching also needs a change. The burden of the child increases in school and his capability of thinking decreases. He becomes a machine to produce output. The output may vary on the training they get.

In India, we lay more stress on scores than knowledge. Parents usually compare their child with "Sharma ji ka Ladka" if he fails, gets scolding and abuse of the society. Some of the faults are:

- Indian schools want their students to learn and mug up everything till their 10th standard. They never understand the capacity of a child.
- The knowledge is only theoretical, not practical
- Mental attitude- If a person takes up commerce or arts inhis higher secondary education system, his parents look at him like he is a very low grade, a failure or a dumb student. I

have also become victim of this serious crime (according to my mom, taking art is like a crime). My mom wanted me to take science in XIth class because my marks in xth were 90% but my brother supported me and fortunately I have chosen my own choice stream.

- The governments in foreign countries don't just focus on producing great mathematicians, scientists, engineers etc. But more importantly good human beings who know how to live by being truthful, reliable, helping people in need, able to take decisions about their life independently & without any fear and many other vital things required for a good life in particular & the society in general. If I compare education system in my country India, then it looks very bad.
- It has totally become commercial.
- Teachers don't love their jobs but only the salaries at month's end.
- More importance is given to teach English which is completely wrong. English can be taught as a language. I have no problem with it but other subjects should be taught in mother tongue as anyone will understand better in the language which he speaks from birth.

But we Indians are big company cats and we think that the person who speaks English is better in some way or other which is completely absurd. I don't like this.

- We can't completely blame the schools for this loss. Parents are also responsible for this. Nowadays parents are busy with their lives. They don't have enough time to take care of their children. Apart from this, schools are giving so many project works to children to do at home.
- Personality development should also be an important subject. This helps the children to overcome the problems in the society.

- Education is not only about learning and gaining knowledge. It is also about moral values and ethics that every individual should know.
- Education is not something that helps to get some jobs. It should also give some mental support to students. Most of the students attempt suicide because they don't get good rank or job. Is this what our education system teaches to commit suicide if you don't succeed in life?
- As usual, there are no proper labs, no practical working in most of the schools and colleges.
- Reservation is another important criteria in our education system which fails to get capable students into their dream universities.

The worse thing is that when we study in same class, then why only those students get reserved seat which belong to SC or ST? They get less marks than any other category of the society and then also they get admission in universities due to their quotas. I have many complaints about this but I think this time I need to close the cap of my pen. ◈

The present system needs a complete overhauling. We should learn something from countries like Japan where a school going student learns everything while playing. Apart from some bookish knowledge, he gains practical knowledge in different fields like making a radio-set, telephone set and even constructing an airplane or ship. Vocational education is the need of hour. We need more and more technical engineers and doctors.

Unity is strength

◈ **Yadwinder Singh** VIII
Guru Gobind Singh
Public School
Gangsar Jaitu, Punjab

Education is essential for overall development of student. Without education of student people are handicapped. But the present education system does not really educate the students. So there are lot of changes need in our education system.

Our education is so much academic in nature that it completely ignores everyday's need and reality of life so that there should be non academic subjects in our educational system like music and sports. Although they are good in academic subjects they can choose these as a profession and source of earning bread and butter. In schools there should be library lectures so that students can go to library. In our education there is just a theoretical work and lack of practical work. To exchange the knowledge it needs practical work. The present system needs a complete overhauling. We should learn something from countries like Japan where a school going student learns everything while playing. Apart from some

bookish knowledge, he gains practical knowledge in different fields like making a radio-set, telephone set and even constructing an airoplane or ship. Vocational education is the need of hour. We need more and more technical engineers and doctors. But the number of vocational institutions, engineering and medical college, polytechnics and IIT's is limited. A large number of young men and women who can do well as technicians, are deprived of technical or vocational knowledge.

The present system of educational gives too much importance to English. At many places it is the medium of instruction. English may be international language but education must be in the mother tongue. This will save much talent of the country from going waste.

Higher education should be given only to those who are really interested in gaining knowledge. It is so expensive that a poor country like India at present cannot afford to provide it to everybody. It is encouraging to make that our government has started paying attention to education with a number of promising plans. Let us hope that the students of tomorrow receive education with the confidence that they will not only get employment of their own choice, but they will also be educated in the real sense of the world. Our universities, every year, produce a large number of engineers, lawyers, teachers, scientists and doctors who are faced with the problem of earning their livelihood. There are qualified, persons without job and there are jobs without qualified persons. It means that a student who has spent his time and money in education is not sure to get a suitable-nor even unsuitable-job.

A number of commissions have been set up since the dawn of independence to plan afresh the country's system of education which is a rotten and muddy as it used to be. Students find it purposeless. Therefore, they feel restive. There is an urgent need that the present system should be

overhauled and made purposeful. Seminars are organized to encourage students about importance of study. Computers should be essential in study because modern era is a technical era. In higher education programmes earn by learn' should be promoted so that it will help the students financially. It is also absurd to think that we can test a student in three hours what he has learnt in one whole year. Thus, examinations have become just a gamble or a matter of chance.

To conclude it, both government and student shoulds effort to make the education system better, because we know that unity is strength. ◈

Education should sustain interests in students

◈ **Alisha** XII
Mata Gujri Public School
Great Kailash-I, New Delhi

Education system can be made effective by interacting with communities. The load of bags and books should be lessened & students should be trained in such a way that they retain their knowledge forever. Schools should have freedom to organize short trips & tours to places like banks, hospitals, museum etc. to provide firsthand knowledge to the students about these places and their work. More attention should be given to vocational education and technical education than merely theoretical knowledge.

The Indian education system has been the target of many allegations from students, teachers & parents due to different reasons. In India, we have an education system which is completely based on theoretical knowledge and not practical knowledge. This leads to rote learning, which is yet to be wiped out from a majority of Indian schools. Most students won't be clear about many of the basic foundation concepts taught in schools even after they've graduated. A student's capability is based on the exam for the duration of three hours. Also, there is a problem of choice of stream after class tenth i.e., choice among science, commerce & arts. Moreover, the students are given so much of homework which is of no use as no one does it with full heart. Thus, there is an absolute need to make some reforms in order to make the present system of education effective for overall development.

In my point of view, government should provide practical knowledge rather that theoretical knowledge. This will help the

students to use or imply his/her knowledge in real life. Parents also play a vital role in this. There are many parents who are unable to understand their child's interests & passion. Schools should have subjects like music, sports, fine arts etc. as important subjects with equal and utmost importance. If a student is not good academically, he/she might be interested in some other co-curricular activity such as sports, music and arts etc.

If he/she considers it as his/her passion and wants to persue it as his/her profession, then the parents and the teachers must support & motivate their children to go ahead. Instead of forcing them to look up to streams like science & commerce. They must understand that every child is different. We can't expect everyone to be a doctor or an engineer in future. We must understand & respect a child's individuality. Also, rather than homework & assignments, students should be involved in classroom participation, project work and communication & leadership skills & extracurricular activities. Only then a genuine student will shine out. There should be an option for combination courses in which students can opt for a major and minor subject. Only theoretical & no practical knowledge decreases the personality development of a child. The students get so busy in mugging up things that they lose interest.

Education system can be made effective by interacting with communities. The load of bags and books should be lessened & students should be trained in such a way that they retain their knowledge forever. Schools should have freedom to organize short trips & tours to places like banks, hospitals, museum etc. to provide firsthand knowledge to the students about these places and their work. More attention should be given to vocational education and technical education than merely theoretical knowledge. Competent staff who enjoy teaching & have good communication skills should be included in the teaching faculty.

There should be transfer of knowledge from learning to practical life. The curriculum should be well planned. Education should be such as it helps the students to become independent & self-sufficient. Education should sustain interests in students. The caste based reservation system should be completely eliminated. An education system based on caste is wrong & can be called biased. As we can see that nowadays a student with 95% belonging to general quota struggles to get admission in their dream universities & at the same time, a student with 60% belonging to SC,ST, OBC or PWD quota gets admission in any college easily with the course of their choice. This difference leads to disappointment as it is discriminatory. This is injustice to all those work hard. Just because they don't belong to the scheduled caste or tribes, they have to suffer in order to get admission. This system should be completely eliminated and students should get admissions only on merit basis.

The above mentioned suggestions for reforms in the education system can be effective. It can prove to be helpful in improving the performance of a child in every aspect & can make him/her overall developed. ◈

It is regrettable that civil human behaviour has been deteriorating day by day. These moral values can be seen amongst Japanese, who have changed their country into a developed one. Civil sense can be brought up amongst youngsters through education by making them aware. One way to solve this problem can be that it should be made compulsory in schools to have one moral value period in a week to make children realise its importance

Change in education policy is a must

◈ **Mrunmayee Narendra Ghugal** X
Bhavans B.P. Vidya Mandir
Srikrishna Nagar, Nagpur
Maharashtra

'**E**ducation makes people easy to lead, but difficult to drive, easy to govern but impossible to enslave.

Education encompasses both the teaching and learning of knowledge, proper conduct and technical competency. Learning includes the moral values, improvement of character and overall development of an individual. Many wonders of youth's success can be seen now a days in our country, which is enough to say that the present education system is good enough. Various facilities are also provided by the govt. for the development of youth but these don't seem enough. Innumerable failures have also made us think about some of the demerits in our present education system.

Our system has been only limited to books and therefore our thinking has become limited. The introduction of social networks like e-learning, educational videos in studying can help the youngsters in the development of skills and make them think according to their own views. The spoon feeding

in this system should be decreased, rather the efforts of students must play an important role in balancing their way of overall development.

There was a time when pencil & notebook were plenty tools but presently technology helps in balancing up though e-learning hub across boundaries. Current system of education requires a renovation if we have to stay ahead in such as we owe them the best quality ICT education etc.

Education is India is good enough but influence of parents also plays a major role in preparing a strong base of their children. Often it is seen that parents blindly provide tuition classes to their children but do not look further. There is a need to give importance to self-studies so that the proper development of an individual takes place. By making people aware of the self help through education system it will be helpful for the youngsters to enhance their skills.

It has been seen that according to govt. policy, no student till std VII can fail. This has given children the confidence that without proper studies they can escape out easily. The govt. has taken this decision because of increase in suicidal cases. They shouldn't be caught strictly but they should be made aware about moral values so that they do not take wrong steps and harm their lives.

Our current education system has become a complex one. Some subjects are such that without learning them there is no options. In this case the subject becomes limited in small cases. But for overall development, the role of students' thinking & creativeness is very important. When one's views and curiosity are involved in education, one becomes expressible and intrests add up in a subject. Therefore more and more student's involvement is necessary.

Change in education policy is a must to develop patriotic feelings and alert Indians regarding depletion of tradition and

culture. The system dominated by British's policy has failed to give value based education. Also there are many positive effects of British's policy but some demerits have also taken us apart from our culture. The need is to adopt the good ways of colonial policies as well as restoring our culture. Indians should be encouraged regarding their thoughts, values and culture so that they do not die out completely.

It is regrettable that civil human behaviour has been deteriorating day by day. These moral values can be seen amongst Japanese, who have changed their country into a developed one. Civil sense can be brought up amongst youngsters through education by making them aware. One way to solve this problem can be that it should be made compulsory in schools to have one moral value period in a week to make children realise its importance.

In India, we have a tradition of verbal communication but reading habits are far less. Education should also include extra reading besides text books to make knowledge vast. This can be achieved by making people aware regarding reading habits and introducing various libraries in small towns and cities which would build pillars of success.

'Following the crowd, won't lead you to right. If you follow your heart, you will be guided by light.' This present education has given more important values to science and maths, which is a good aspect. But on the other hand has also led to decrease in scope for other sectors. Other subjects should also be made equally important and should be given a scope for higher studies.

A child is a storehouse of potential and it is important to nurture and develop these attributes at a very young age itself. Since the child spends much of the time in school, the curriculum in school should be such that it enables children to understand, care and practise ethical values like respect, justice and civic

sense. Education should not be imparted with the sole aim of producing doctors and engineers, but to develop skills rather. Thus schools should focus more on the personality development of children, selecting methods and activities that impart moral education to students since it is one of the most important responsibilities of a school. Schools should take the initiative to mould children into better human beings so that they can make the world a better place to live in.

There is a need for the modern thinkers and educationalists to sit together and think over these issues highlighted. So let us all come together to make this country a global hub. ◈

The Indian education system has to be reformed. First of all the curriculum has to be changed. The topics now presented in the books can be taught by any person sitting under a tree. But teaching the things other than the books is education. So the topic in the books & mode of teaching should be changed. Nowadays parents are busy with their lives. They don't have enough time to take care of their kids. Apart from this now, schools are giving so many project works to children to do at home.

Students shouldn't become only bookworms

◈ **Komal Soni** XII
Central Academy
Chhattisgarh

Education is very necessary for the betterment of everyone's life and thus we all should know the importance of education in our life. It enables us and prepares us in every aspect of life. The education system is still weak in the undeveloped regions of the country instead of lots of the educational awareness programmes run by the government.

The authority of schools & colleges should set up some chief objectives of education in order to stimulate the interest & curiosity of their students. The fee structure should also be discussed to a broad level as because of the high fee structure most of the students become unable to precede their education which brings disparity in every aspect of life of people.

The approaches to teaching can be categorized according to major educational goals that affect teaching strategies. On one hand the goal of education is viewed as the transmission of knowledge by the teacher to the student.

On the other hand the goal of education is viewed as facilitating students autonomous learning & self expression. The former approach which converges towards the teaching of specified subject matter may be termed 'convergent teaching' & the latter approach which stresses open ended self directed learning may be termed 'divergent teaching'. The convergent approach in highly structured & teacher centred. The students are passive recipients of knowledge transmitted to them and learning achievements are measured by stand ardized tests. The divergent approach is flexible, student-centred, where the students are active participants in the learning process & learning achievements are assessed by a variety of evaluation tools such as self evaluation in parallel to teacher evaluation.

As important development is the growing awareness that academic achievement could improve by adapting teaching to student individual differences. This awareness is finding its more distinct expression in the education system's attempts to deal with the issues of students with special needs.

The continuous & comprehensive evaluation was initiated based on the recommendation to reform evaluation practices in school education by national curriculum for elementary & secondary education as a farm work:

1. Defining minimum level of learning at all stages of education while evaluating the attainment of children.
2. Aiming at qualitative improvement in education through valuation.
3. Using grades instead of marks.
4. As feedback mechanism for the benefit of teachers learners & parents providing timely corrective measure for improving attainment level of students.
5. Using various tools, techniques & mode of evaluation such

as paper, pencil test, oral testing, observation schedules, rating scales, interview & anecdotal records, individual & group evaluation methods at different stages.

6. Laying more stress on informal & child friendly methods of testing.
7. Recording of evidences regarding psychomotor skills related to co-scholastic areas such as work as experience & physical education.

The Indian education system has to be reformed. First of all the curriculum has to be changed. The topics now presented in the books can be taught by any person sitting under a tree. But teaching the things other than the books is education. So the topic in the books & mode of teaching should be changed.

Nowadays parents are busy with their lives. They don't have enough time to take care of their kids. Apart from this now, schools are giving so many project works to children to do at home. But no use, instead children, parents are doing that or else they are leaving the children like that without doing the work.

Even there is no follow up by teacher also. Changed curriculum has become a burden to students rather than enjoying the syllabus. Motivational stories should be important subjects in the curriculum to teach them morals & ethics to children.

Personality development should also be an important subject. This helps the children to overcome many problems in the society.

The education system has to be changed to study more theoretically & less practically. But practical knowledge is more needed. There should be subject on communication skills so that student can develop & communicate in better manner.

Our present education system puts more pressure on students, rather than encouraging them to do better. To go with proper education the students need to be serious from the pre-primary level. There is a need for reformation in syllabus.

Syllabus should be included with much more career related or vocational subjects that a student can dream his occupation by his own interest & it can prevent unemployment.

In syllabus there should be more option for 10^{th} passed & 12^{th} passed students to build up their career using our surrounding nature, such as gardening flower, vegetable garden, fisheries etc. Students have to do practical learning. They have to do some adventures in education. They have to learn all things in schools & in colleges like sports, drawing, driving, dancing, singing, cooking etc. Education system is very slow, so students have to learn more & more in minimum time

"Don't become only book worms"

The students also have to prepare themselves to achieve their goal & do hard work for their studies & knowledge. ◈

???

Heading ???

◈ **Sonali Shyam** X
Dayanand Adarsh Vidyalaya
Kandaghat
Himachal Pradesh

The real meaning of education is also being aware of duties, character, how to behave, respecting others along with protecting our self-esteem. In America and Europe, it's still the foundation meaning of education. But in India we are just focused to teach students what or why or how something happens anyway. We never focus the way of how something happens anyway. We never focus the way we are teaching them. Today talent is judged by scores which is irrelevant. Today education is not the subject of learning but only competition. There is a race to come first. We study more theoretically and less practically. But practical knowledge is more needed. Our present education system puts more pressure on students, rather than encouraging them to do better. Our subjects are 90% theoretical and 10% practical. There is no scope for students to do experiments on their own. Some colleges are not conducting practical. Instead, they are giving full marks and allotting that time to mug up theoretical subjects. In the ends, students are coming out of schools and

colleges only having bookish knowledge in the mind as the method of learning doesn't connect to reality.

There is so much meaningless pressure on students because of the too much competitive spirit in between private institutions. Children in school are not being guided well about careers. They hardly know about what are the options available in career except doctors and engineers. Many schools are not concentrating on extra circular activities. Some teachers are giving marks based on the number of papers rather than the content. Our higher education system has more potential threats inside it. Parents think that only education has the power to make success. It is the ultimate source of earning money. If we compare our system to foreign education we find they develop enough their student for innovation and thinking. They have courage to take risks. To go with proper education, we need to be serious from the pre-primary level of a child. We do need reformation in syllabus. Syllabus should be included with much more career related or vocational subjects that a student can dream his occupation by his own interest, and it can prevent unemployment.

In syllabus there should be more option from 10^{th} passed and 12^{th} passed students to build up their career using their surrounding nature, such as gardening flower, vegetable. We will have to be serious in employing teachers. Because unless there is a perfect teacher we cannot get a perfect student. We should be taught more practically rather than just being theoretical. When a person completes his graduation he is not at all employable. The education system is creating more unemployable. He lacks the skills and there is huge difference between what he was taught in college and what is required in the market. So this gap needs to be filled. Teachers should try to teach difficult science concepts through demos and encourage discussion rather than one way lectures. Evaluation also needs to be relooked. Questions should be less of what

and more of why. Not lengthy answers but point wise explanations are necessary. Teachers should teach kids to be brave enough to pursue their dreams and inspire them and not bore them with useless things which we never use in life. I want in our present education system to focus on skill based education. We should reward creativity, original thinking.

We should provide students education which gives students overall knowledge.

The pupils should be punished if they write the same words as in the textbooks. This way cramming can be prohibited. There should be a general knowledge text every month to brush up the pupil's knowledge. The pupils should be given the choice of choosing career in 8th standard so that they only study for the related subjects. All schools whether govt. or public should be given a surprise inspection every year.

Here are some changes which I want in our present education system.

1. Firstly focus on skill based education , original thinking, research, and innovation. We should remember, memorizing things is not learning.
2. Get smarter people to teach. In India a person becomes a teacher when he has no other hope. It is high time to encourage a breed of superstar teachers.
3. Re-define the purpose of education system. The fact is that we may have number of engineer graduates, but we have not much technological innovation. So system should create entrepreneurs, artists, scientists, thinkers, writers not the robotic employees.
4. Take mediocrity out of the system. Our education system today encourages mediocrity in students and in teachers. It is easy to survive as a mediocre student. No one shuts down the mediocre schools and colleges. Hard work in always difficult. Mediocrity cannot be to rated.
5. One size does not fit to all. So we should focus on personalized education. It is very much possible that a kid who is not good in academics has potential to become a good sports man.
6. Invest in technological infrastructure that will make access to knowledge easier than ever.
7. There is an urgent need for effective regulation of Indian education sector so that there is infusion of sufficient capital and those who provide or create extraordinary educational products or services are adequately rewarded.
8. We would change in our old syllabus patterns and add more practical work to provide proper practical knowledge to become perfect in particular field.
9. To make great renovation in our education system we must also implement it seriously with discipline and moral education also.

Conclusion

If these changes are implemented in the education system, it will result in fruitful output and the values of the educational system will be increased. This would lead to a better educational system in India. To make a reformed education system we will have to be serious in employing teachers. Today we study more theoretically but less practically but practical knowledge is more needed. So, we should be taught more practically rather than just being theoretical. Syllabus should be included with much more career related or vocational subjects that a student can dream his occupation by his own interest. We should provide students education which give students overall knowledge. ◈